केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़
ZONAL INSTITUTE OF EDUCATION AND TRAINING, CHANDIGARH

संक्षिप्त अध्ययन सामग्री और प्रतिदर्श प्रश्नपत्र

Brief Study Material and Sample Paper

सत्र / Term– 1 शैक्षिक सत्र / Session– 2021-22

हिन्दी – बारहवीं (आधार)

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

सेक्टर - 33 सी, चंडीगढ़

वेबसाइट- zietchandigarh.kvs.gov.in ई-मेल

:kvszietchd@gmail.com

दूरभाष-0172-2621302, 2621364

OUR PATRONS

1.	Ms. Nidhi Pandey, IIS	Commissioner, KVS
2.	Dr. V. Vijayalakshmi	Additional Commissioner (Academics)
3.	Dr. E. Prabhakar	Joint Commissioner (Admn.)
4.	Mrs. Piya Thakur	Joint Commissioner (Academics)
5.	Sh. Satya Narain Gulia	Joint Commissioner (Finance)
6.	Sh. N.R. Murali	Joint Commissioner (Training)

DIRECTOR'S MESSAGE

Our aim is to provide such brief study materials and sample papers to the student that not only guides students to the path of success, but also inspires them to recognize and explore their own inner potential. The Board exam preparation is based on three pillars – **Concept Clarity, Contextual familiarity and Application Expertise**. Our innovative and dedicated teaching materials ensure that every student gets a firm grip of each of these pillars so very essential for these arduous preparations.

We also understand the importance of CBSE board exam as students' future goal depends upon the performance in board exams. We know that in pandemic situation the students feel a lot of pressure of performance in board exam. It is very important to develop the right exam temperament in students so they can tackle the pressure & surprises easily. In this direction, to release such brief study materials and sample papers will help to the students a lot.

विषय-सूची / INDEX

पाठ्य विवरण	पृष्ठ संख्या
1. प्रथम सत्र का पाठ्यक्रम	-1
2. नीलपत्र / प्रश्नपत्र का प्रतिरूप	-2
3. अध्ययन सामग्री -1	-3
4. अध्ययन सामग्री -2	-15
5. अध्ययन सामग्री -3	-19
6. सीबीएसई प्रतिदर्श प्रश्नपत्र	-51
7. सीबीएसई अंक योजना	-63
8. प्रश्नपत्र का प्रतिरूप -1	-65
9. अंक योजना -1	-79
10. प्रश्नपत्र का प्रतिरूप -2	-82
11. अंक योजना -2	-95
12. प्रश्नपत्र का प्रतिरूप -3	-98
13. अंक योजना -3	-112

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

<u>टर्म-1 (पाठ्यक्रम)</u>

कक्षा-बारहवीं

विषय- हिन्दी (आधार) व विषय कोड - 302

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम विवरण	प्रकरण
1.	अपठित बोध	अपठित गद्यांश अपठित काव्यांश
2.	अभिव्यक्ति और जनसंचार	जनसंचार माध्यम पत्रकारिता का स्वरुप
3.	आरोह भाग-2 (पाठ्य पुस्तक)	गद्य - भक्तिन (महादेवी वर्मा) बाजार दर्शन (जैनेन्द्र कुमार) काले मेघा पानी दे (धर्मवीर भारती) पद्य - एक गीत (हरिवंश राय बच्चन) कविता के बहाने (कुँवर नारायण) कैमरे बंद अपाहिज (रघुवीर सहाय) सहर्ष स्वीकारा है (गजानन माधव मुक्तिबोध)
4.	वितान-2 (पूरक पुस्तक)	सिल्वर वैडिंग (मनोहर श्याम जोशी) जूझ (आनंद यादव)

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

<u>प्रथम सत्र (नील पत्र)</u>

कक्षा-बारहवीं

विषय - हिन्दी (आधार) विषय कोड - 302

<u>परीक्षा प्रारूप एवं अंक-विभाजन</u>

क्रम संख्या	प्रश्न खंड	प्रश्नों की संख्या	प्रश्न करना है	निर्धारित अंक
1.	अपठित बोध (गद्य)	20	10	1X10=10
2.	अपठित बोध (पद्य)	10	05	1X5=05
3.	अभिव्यक्ति और जनसंचार	06	05	1X5=05
4.	आरोह-2 पाठ्य पुस्तक (गद्य)	05	05	1X5=05
5.	आरोह-2 पाठ्य पुस्तक (पद्य)	05	05	1X5=05
6.	आरोह-2 पाठ्य पुस्तक (गद्य व पद्य)	06	05	1X5=05
7.	वितान-2 पूरक पाठ्य पुस्तक	06	10	1X5=05
8.	-	58	40	40

<u>सामान्य निर्देश-</u>

1. प्रश्नपत्र में तीन खंड होंगे - 'अ', 'ब' और 'स' जिनके लिए अधिकतम 40 अंक होंगे और समय 90 मिनट का होगा।

2. खंड 'अ' में कुल तीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनमें से केवल पंद्रह के उत्तर देने हैं।

3. खंड 'ब' में कुल छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनमें से केवल पाँच के उत्तर देने हैं ।

4. खंड 'स' में कुल बाईस वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे जिनमें से केवल बीस के उत्तर देने हैं ।

अपठित गद्यांश क्या है?

अपठित गद्यांश - गद्य का वह अंश (भाग) जिसका अध्ययन विद्यार्थियों ने अपने पाठ्यक्रम के अंतर्गत नहीं किया है । अपठित गद्यांश के माध्यम से विद्यार्थियों की पठन योग्यता, विश्लेषण करने, निष्कर्ष निकालने एवं भाव-बोध ग्रहण करने की क्षमताओं का आकलन किया जाता है।

अपठित गद्यांश हल करते समय ध्यान देने योग्य बातें-

1. अपठित गद्यांश का बार-बार मौन वाचन करके उसे समझने का प्रयास करें।
2. इसके पश्चात प्रश्नों को पढ़ें और दिए गए गद्यांश में संभावित उत्तरों को रेखांकित करें।
3. जिन प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट न हों, उनके उत्तर जानने हेतु गद्यांश को पुन: ध्यान से पढ़ें।
4. पूछे गए प्रश्नों के अनुसार उत्तर हमेशा सहज भाषा में देने का प्रयास करें।
5. उत्तर संक्षिप्त, सरल और प्रभावशाली भाषा में होना चाहिए।
6. शीर्षक मूल कथ्य से संबंधित होना चाहिए।
7. उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास एवं मुहावरों पर ध्यान देना चाहिए।

<u>उदाहरण-1</u>

1. भारतीय धर्मनीति के प्रणेता नैतिक मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक थे। उनकी यह धारणा थी कि नैतिक मूल्यों का दृढ़ता से पालन किए बिना किसी भी समाज की आर्थिक व सामाजिक प्रगति की नीतियाँ प्रभावी नहीं हो सकतीं। उन्होंने उच्चकोटि की जीवन-प्रणाली के निर्माण के लिए वेद की एक ऋचा के आधार पर कहा कि उत्कृष्ट जीवन-प्रणाली मनुष्य की विवेक-बुद्ध से तभी निर्मित होनी संभव है , जब सब लोगों के संकल्प , निश्चय, अभिप्राय समान हों ; सबके हृदय में समानता की भव्य भावना जाग्रत हो और सब लोग पारस्परिक सहयोग से मनोनुकूल कार्य करें। चरित्र-निर्माण की जो दिशा नीतिकारों ने निर्धारित की , वह आज भी अपने मूल रूप में मानव के लिए कल्याणकारी है। प्राय: यह देखा जाता है कि चरित्र और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा वाणी , बाहु और उदर को संयत न रखने के कारण होती है। जो व्यक्ति इन तीनों पर नियंत्रण रखने में सफल हो जाता है, उसका चरित्र ऊँचा होता है।

सभ्यता का विकास आदर्श चरित्र से ही संभव है। जिस समाज में चरित्रवान व्यक्तियों का बाहुल्य है, वह समाज सभ्य होता है और वही उन्नत कहा जाता है। चरित्र मानव-समुदाय की अमूल्य निधि है। इसके अभाव में व्यक्ति पशुवत व्यवहार करने लगता है। आहार , निद्रा, भय आदि की वृत्ति सभी जीवों में विद्यमान रहती है , यह आचार अर्थात चरित्र की ही विशेषता है , जो मनुष्य को पशु से अलग कर , उससे ऊँचा उठा मनुष्यत्व प्रदान करती है। सामाजिक अनुशासन बनाए रखने के लिए भी चरित्र-निर्माण की आवश्यकता है। सामाजिक अनुशासन की भावना व्यक्ति में तभी जाग्रत होती है , जब वह मानव प्राणियों में ही नहीं , वरन सभी जीवधारियों में अपनी आत्मा के दर्शन करता है।

1- भारतीय धर्मनीति के प्रणेता किन मूल्यों के प्रति अधिक जागरूक थे?

(क) धार्मिक मूल्यों के प्रति

(ख) नैतिक मूल्यों के प्रति

(ग) आर्थिक मूल्यों के प्रति

(घ) सामाजिक मूल्यों के प्रति

2- नैतिक मूल्यों का दृढ़ता से पालन करना क्यों जरुरी है?

(क) समाज की आर्थिक व सामाजिक प्रगति की नीतियाँ प्रभावी हो सकें

(ख) समाज के लोग अधिक लाभान्वित मिल सकें

(ग) लोगों में परमार्थ की भावना का उदय हो सके

(घ) सामाजिक और आर्थिक मूल्यों का विकास हो सके

3- सबके हृदय में समानता की भव्य भावना जाग्रत हो- यह उल्लेख मिलता है?

(क) एक प्राचीन मन्त्र के आधार

(ख) रामायण के एक प्रसंग के आधार पर

(ग) वेद की एक ऋचा के आधार पर

(घ) गीता के एक श्लोक के आधार पर

4- मानव के लिए सबसे कल्याणकारी क्या है ?

(क) चरित्र-निर्माण

(ख) धन-संपत्ति

(ग) नौकरी-पेशा

(घ) ज्ञान-ध्यान

5- चरित्र और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा किस कारण से होती है?

(क) धर्म में आस्था रखने के कारण

(ख) बड़े लोगों की तरफ ध्यान देने के कारण

(ग) दूसरों के प्रति उपेक्षा होने के कारण

(घ) वाणी, बाहु और उदर को संयत न रखने के कारण

6- 'समानता' शब्द में प्रत्यय है ?

(क) समान

(ख) मान

(ग) ता

(घ) इनमें से कोई नहीं

7- किस तरह के व्यक्ति का चरित्र ऊँचा होता है?

(क) घर-परिवार के लोगों का ध्यान रखने वालों का

(ख) वाणी, बाहु और उदर पर नियंत्रण रखने वाले व्यक्ति का

(ग) हमेशा धन-संपत्ति के पीछे लगाने वाले व्यक्ति का

(घ) धर्म-कर्म में लगे हुए व्यक्ति का

8- सभ्य और उन्नत समाज किसे कहा जाता है?

(क) जिस समाज में चरित्रवान व्यक्तियों का बाहुल्य है

(ख) जिस समाज में खिलाड़ियों का बाहुल्य है

(ग) जिस समाज में धनवान व्यक्तियों का बाहुल्य है

(घ) इनमें से कोई नहीं

9- किस कारण से व्यक्ति पशुवत व्यवहार करने लगता है?

(क) चरित्र के अभाव में

(ख) धन के अभाव में

(ग) धर्म के अभाव में

(घ) घर के अभाव में

10- सामाजिक अनुशासन की भावना व्यक्ति में कब जाग्रत होती है?

(क) जब व्यक्ति में चरित्र का अभाव होता है

(ख) जब व्यक्ति निरीह जानवरों की रक्षा करता है

(ग) जब व्यक्ति सभी जीवधारियों में अपनी आत्मा के दर्शन करता है

(घ) जब व्यक्ति धर्म-कर्म में लिप्त होता है

उत्तरमाला-

1-(ख) नैतिक मूल्यों के प्रति 2-(क) समाज की आर्थिक व सामाजिक प्रगति की नीतियाँ प्रभावी हो सकें 3-(ग) वेद की एक ऋचा के आधार पर 4-(क) चरित्र-निर्माण 5-(घ) वाणी, बाहु और उदर को संयत न रखने के कारण 6-(ग) ता 7-(ख) वाणी, बाहु और उदर पर नियंत्रण रखने वाले व्यक्ति का 8-(क) जिस समाज में चरित्रवान व्यक्तियों का बाहुल्य है 9-(क) चरित्र के अभाव में 10-(ग) जब व्यक्ति सभी जीवधारियों में अपनी आत्मा के दर्शन करता है

2. संस्कृतियों के निर्माण में एक सीमा तक देश और जाति का योगदान रहता है। संस्कृति के मूल उपादान तो प्राय: सभी सुसंस्कृत और सभ्य देशों में एक सीमा तक समान रहते हैं , किंतु बाहय उपादानों में अंतर अवश्य आता है। राष्ट्रीय या जातीय संस्कृति का सबसे बड़ा योगदान यही है कि वह हमें अपने राष्ट्र की परंपरा से संपृक्त बनाती है , अपनी रीति-नीति की संपदा से विच्छिन्न नहीं होने देती। आज के युग में राष्ट्रीय एवं जातीय संस्कृतियों के मिलन के अवसर अति सुलभ हो गए हैं , संस्कृतियों का पारस्परिक संघर्ष भी शुरू हो गया है। कुछ ऐसे विदेशी प्रभाव हमारे देश पर पड़ रहे हैं, जिनके आतंक ने हमें स्वयं अपनी संस्कृति के प्रति संशयालु बना दिया है। हमारी आस्था डिगने लगी है। यह हमारी वैचारिक दुर्बलता का फल है।

अपनी संस्कृति को छोड़ , विदेशी संस्कृति के विवेकहीन अनुकरण से हमारे राष्ट्रीय गौरव को जो ठेस पहुँच रही है, वह किसी राष्ट्रप्रेमी जागरूक व्यक्ति से छिपी नहीं है। भारतीय संस्कृति में त्याग और ग्रहण की अद्भुत क्षमता रही है। अत: आज के वैज्ञानिक युग में हम किसी भी विदेशी संस्कृति के जीवंत तत्वों को ग्रहण करने में पीछे नहीं रहना चाहेंगे, किंतु अपनी सांस्कृतिक निधि की उपेक्षा करके नहीं। यह परावलंबन राष्ट्र की गरिमा के अनुरूप नहीं है। यह स्मरण

रखना चाहिए कि सूर्य की आलोकप्रदायिनी किरणों से पौधे को चाहे जितनी जीवनशक्ति मिले , किंतु अपनी जमीन और अपनी जड़ों के बिना कोई पौधा जीवित नहीं रह सकता। अविवेकी अनुकरण अज्ञान का ही पर्याय है।

1- संस्कृतियों के निर्माण में एक सीमा तक किनका योगदान रहता है?

(क) स्त्री और पुरुष का

(ख) जनता और शासक का

(ग) धर्म और धन का

(घ) देश और जाति का

2- राष्ट्रीय या जातीय संस्कृति का सबसे बड़ा योगदान क्या है?

(क) लोगों में भेद-भाव स्थापित करती है

(ख) हमें अपने राष्ट्र की परंपरा से संपृक्त बनाती है

(ग) लोग अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं

(घ) लोगों में पलायन वृत्ति का विकास होता है

3- संस्कृतियों का पारस्परिक संघर्ष भी शुरू हो गया है- यह कथन है

(क) सत्य

(ख) असत्य

(ग) क और ख दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

4- 'विदेशी' शब्द में प्रत्यय है?

(क) देशी

(ख) देश

(ग) वि

(घ) ई

5- यह हमारी वैचारिक दुर्बलता का क्या फल है?

(क) हम अपनी संस्कृति को भूल गए हैं

(ख) हम अपनी संस्कृति के प्रति संशयालु बन गए हैं और हमारी आस्था डिगने लगी है

(ग) हम अपनी संस्कृति के प्रति जागरूक हुए हैं

(घ) हम अपनी संस्कृति से विमुख हुए हैं

6- हमारे राष्ट्रीय गौरव को किस कारण से ठेस पहुँच रही है?

(क) देशी संस्कृति के विवेकहीन अनुकरण से

(ख) विदेशी संस्कृति के चमक-दमक से

(ग) विदेशी संस्कृति के विवेकहीन अनुकरण से

(घ) विदेशी संस्कृति के बहिष्कार से

7- भारतीय संस्कृति की विशेषता है?

(क) सभी संस्कृतियों को महत्त्व देना

(ख) त्याग और ग्रहण की अद्भुत क्षमता

(ग) विदेशी संस्कृति का विवेकहीन अनुकरण

(घ) देश और जाति का मिश्रण

8- राष्ट्र की गरिमा के अनुरूप नहीं है-

(क) देशी संस्कृति

(ख) परावलंबन

(ग) अवलंबन

(घ) विदेशी संस्कृति

9- 'अविवेकी' में मूल शब्द है-

(क) विवेक

(ख) एक

(ग) अवि

(घ) की

10- किसके बिना कोई पौधा जीवित नहीं रह सकता है?

(क) परावलंबन के बिना

(ख) सूर्य की आलोकप्रदायिनी किरणों के बिना

(ग) पानी और खाद के बिना

(घ) अपनी जमीन और अपनी जड़ों के बिना

उत्तरमाला-

1-(घ) देश और जाति का 2-(ख) हमें अपने राष्ट्र की परंपरा से संपृक्त बनाती है 3-(क) सत्य 4-(घ) ई 5-(ख) हम अपनी संस्कृति के प्रति संशयालु बन गए हैं और हमारी आस्था डिगने लगी है 6-(ग) विदेशी संस्कृति के विवेकहीन अनुकरण से 7-(ख) त्याग और ग्रहण की अद्भुत क्षमता 8-(ख) परावलंबन 9-(क) विवेक 10-(घ) अपनी जमीन और अपनी जड़ों के बिना

3. विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिए थोड़ी-बहुत मानसिक स्वतंत्रता परमावश्यक है-चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिससे आत्मनिर्भरता आती है और जिससे अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है।

युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे , छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करे, ये बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक हैं। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है-हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे भोग, हमारे घर और बाहर की दशा, हमारे बहुत-से

अवगुण और थोड़े गुण- सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए।

नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है, जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुँह ताकता है, जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है ; जिसके कारण वह आगे बढ़ने के समय भी पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चट-पट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा उसके अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है, जो प्रत्येक दशा में, प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है।

1- विद्वानों का कथन बहुत ठीक है कि -

(क) विनम्रता और स्वतंत्रता दोनों जरुरी हैं

(ख) स्वतंत्रता के बिना विनम्रता का कोई अर्थ नहीं

(ग) विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं

(घ) ख और ग सही है

2- स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो- यह कथन है

(क) असत्य

(ख) सत्य

(ग) सत्य और असत्य दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

3- मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए किस गुण की आवश्यकता होती है?

(क) विनम्रता

(ख) स्वतंत्रता

(ग) आत्मनिर्भरता

(घ) समानता

4- लेखक के अनुसार युवा को सदा क्या स्मरण रखना चाहिए?

(क) वह बहुत कम बातें जानता है और अपने ही आदर्श से बहुत नीचे है

(ख) वह बहुत अधिक बातें जानता है और अपने ही आदर्श से बहुत ऊपर है

(ग) क और ख दोनों गलत हैं

(घ) वह बहुत कम बातें नहीं जानता है

5- आत्ममर्यादा के लिए कौन-सी बातें आवश्यक हैं?

(क) छोटों और बराबर वालों का सम्मान करना

(ख) छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करना

(ग) अपने से बड़ों का सम्मान करना तथा छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करना

(घ) अपने से बड़ों का सम्मान करना

6- 'मानसिक' शब्द में प्रत्यय है-

(क) मान

(ख) सिक

(ग) इक

(घ) मानस

7- हमारे बहुत-से अवगुण और थोड़े गुण- सब किस बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं?

(क) हमेशा दूसरों की कमियाँ निकालनी चाहिए

(ख) हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए

(ग) हमें स्वतंत्रता नहीं भूलनी चाहिए

(घ) दूसरों के सदैव कटु व्यवहार करना चाहिए

8- लेखक का नम्रता से क्या अभिप्राय है?

(क) दब्बूपन से

(ख) संकल्प से

(ग) प्रज्ञा से

(घ) दब्बूपन से नहीं

9- सच्ची आत्मा का क्या आशय है?

(क) ईश्वर से दूर रखती है

(ख) प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है

(ग) प्रत्येक दशा में राह छोड़ देती है

(घ) सत्य का दर्शन कराती है

10- 'विनम्रता' शब्द में मूल शब्द है?

(क) ता

(ख) वि

(ग) विन

(घ) नम्र

उत्तरमाला

1-(ग) विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं 2-(ख) सत्य 3-(ग) आत्मनिर्भरता 4-(क) वह बहुत कम बातें जानता है और अपने ही आदर्श से बहुत नीचे है 5-(ग) अपने से बड़ों का सम्मान करना तथा छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करना 6-(ग) इक 7-(ख) हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए 8-(घ) दब्बूपन से नहीं 9-(ख) प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है 10-(घ) नम्र

अपठित पद्यांश क्या है?

अपठित पद्यांश - पद्य का वह अंश (भाग) जिसका अध्ययन विद्यार्थियों ने अपने पाठ्यक्रम के अंतर्गत नहीं किया है । अपठित पद्यांश के माध्यम से विद्यार्थियों की पठन योग्यता, विश्लेषण करने, निष्कर्ष निकालने एवं भाव-बोध ग्रहण करने की क्षमताओं का आकलन किया जाता है।

अपठित पद्यांश हल करते समय ध्यान देने योग्य बातें-

1. अपठित पद्यांश का बार-बार मौन वाचन करके उसे समझने का प्रयास करें।
2. इसके पश्चात प्रश्नों को पढ़ें और दिए गए पद्यांश में संभावित उत्तरों को रेखांकित करें।
3. जिन प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट न हों, उनके उत्तर जानने हेतु पद्यांश को पुन: ध्यान से पढ़ें।
4. पूछे गए प्रश्नों के अनुसार उत्तर हमेशा सहज भाषा में देने का प्रयास करें।
5. सांकेतिक, प्रतीकात्मक व लाक्षणिक शब्दों को समझने का प्रयत्न करें।
6. शीर्षक मूल कथ्य से संबंधित होना चाहिए।
7. उत्तर संक्षिप्त, सरल और प्रभावशाली भाषा में होना चाहिए।

<u>उदाहरण-1</u>

निर्भय स्वागत करो मृत्यु का,
मृत्यु एक है विश्राम-स्थल।
जीव जहाँ से फिर चलता है,
धारण कर नव जीवन संबल ।
मृत्यु एक सरिता है, जिसमें
श्रम से कातर जीव नहाकर
फिर नूतन धारण करता है,
काया रूपी वस्त्र बहाकर।
सच्चा प्रेम वही है जिसकी –
तृप्ति आत्म-बलि पर हो निर्भर!
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है,
करो प्रेम पर प्राण निछावर ।

1- कवि ने मृत्यु को क्या माना है?

(क) मोक्ष
(ख) सरोवर
(ग) उपवन
(घ) जीवन का ठहराव

2- कवि मृत्यु का निर्भय स्वागत करने की बात क्यों करता है?

(क) क्योंकि जीव फिर से नया आवरण और संबल पाकर आगे बढ़ता है
(ख) क्योंकि जीवन की कोई निश्चितता नहीं है
(ग) क्योंकि जीवन में सदैव दुःख ही दुःख है
(घ) क्योंकि जीवन रुक जाता है फिर आगे नहीं बढ़ता है

3- श्रम से कातर जीव कहाँ स्नान करता है?

(क) मृत्यु रूपी सरिता में
(ख) जीवन रूपी नदी में

(ग) काया रूपी वस्त्र में

(घ) शरीर रूपी नदी में

4- कवि ने सच्चा प्रेम किसे कहा है?

(क) जिस प्रेम में आत्मसमर्पण हो

(ख) जो स्वार्थ पर आधारित हो

(ग) जिस प्रेम में चालाकी हो

(घ) इनमें से कोई नहीं

5- प्रेम में सर्वाधिक महत्त्व किसका है?

(क) जीवन का

(ख) त्याग का

(ग) संघर्ष का

(घ) प्राण का

उत्तरमाला

1- (घ) जीवन का ठहराव 2-(क) क्योंकि जीव फिर से नया आवरण और संबल पाकर आगे बढ़ता है 3-(क) मृत्यु रूपी सरिता में 4- (क) जिस प्रेम में आत्मसमर्पण हो 5-(ख) त्याग का

<u>उदाहरण-2</u>

पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।
पुरुष क्या, पुरुषार्थ हुआ न जो,
हृदय की सब दुर्बलता तजो।
प्रबल जो तुम में पुरुषार्थ हो,
सुलभ कौन तुम्हें न पदार्थ हो?
प्रगति के पथ में विचरों उठो ।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।

न पुरुषार्थ बिना कुछ स्वार्थ है,
न पुरुषार्थ बिना परमार्थ है।
समझ लो यह बात यथार्थ है
कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है।
भुवन में सुख-शांति भरो, उठो।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो ।।

न पुरुषार्थ बिना स्वर्ग है,
न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है।
न पुरुषार्थ बिना क्रियत कहीं,

न पुरुषार्थ बिना प्रियता कहीं।
सफलता वर-तुल्य वरो, उठो ।
पुरुष हो, पुरुषार्थ करो, उठो।।

1- पुरुष में पुरुषार्थ होने का क्या मतलब है?
(क) व्यक्ति में परिश्रम होना
(ख) जीवन में त्याग होना
(ग) कार्य में परावलंबी होना
(घ) जीवन में सत्य होना

2- यदि व्यक्ति में प्रबल पुरुषार्थ हो तो इसका क्या परिणाम होगा?
(क) व्यक्ति जीवन में कभी सफल नहीं होगा
(ख) व्यक्ति का जीवन बहुत कठिन होगा
(ग) व्यक्ति को संसार की वांछित सभी वस्तुएँ सुलभ हो सकती हैं
(घ) व्यक्ति को जीवन भर पछताना पड़ेगा

3- 'कि पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ है'- इस पंक्ति का क्या आशय है?
(क) व्यक्ति चाहे कुछ करे या न करे लाभ मिलता ही है
(ख) जीवन में परिश्रम के अलावा भी बहुत कुछ है
(ग) यह सच्चाई है कि जीवन में परिश्रम का ही महत्त्व है
(घ) जीवन में परिश्रम का ही महत्त्व है, यह सही नहीं है

4- न पुरुषार्थ बिना स्वर्ग है, न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है- इसमें है-
(क) पदमैत्री एवं तुक का निर्वाह
(ख) दोहा एवं चौपाई छंद
(ग) रूपक एवं श्लेष अलंकार
(घ) प्रसाद गुण संपन्न भाषा

5- उक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-
(क) पुरुषार्थ और कवि
(ख) पुरूषार्थी की विशेषता
(ग) पुरुषार्थ की महत्ता
(घ) पुरुषार्थ ही पुरुषार्थ

उत्तरमाला

1-(क) व्यक्ति में परिश्रम होना 2- (ग) व्यक्ति को संसार की वांछित सभी वस्तुएँ सुलभ हो सकती हैं 3- (ग) यह सच्चाई है कि जीवन में परिश्रम का ही महत्त्व है 4- (क) पदमैत्री एवं तुक का निर्वाह 5- (ग) पुरुषार्थ की महत्ता

<u>उदाहरण-3</u>

चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा में उसे
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।
यूँ तो बाहर समुद्र है, नदी है, झरना है,
पर पानी के लिए भटकना है,
यहाँ कटोरी में भरा जल गटकना है।
बाहर दाने का टोटा है

यहाँ चुग्गा मोटा है।
बाहर बहेलिये का डर है
यहाँ निद्रवद्व कंठ-स्वर है।
फिर भी चिड़िया मुक्ति का गाना गाएगी,
मारे जाने की आशंका से भरे होने पर भी
पिंजड़े से जितना अंग निकल सकेगा निकालेगी,
हर सू जोर लगाएगी
और पिंजड़ा टूट जाने या खुल जाने पर उड़ जाएगी।

1- कवि के अनुसार चिड़िया के लिए पिंजड़े के बाहर क्या कठिनाई है -

(क) पिंजड़े के बाहर आराम और मौज अधिक है
(ख) पिंजड़े के बाहर विस्तार अधिक है और हमेशा जीवन का संकट है
(ग) धरती दिखाई नहीं पड़ती है
(घ) लोग बहुत ही निर्मम होते हैं

2- बाहर समुद्र, नदी, और झरना होते हुए भी चिड़िया को पानी के लिए क्यों भटकना पड़ेगा?

(क) इन पर पहरा होता है और उसे शिकारियों से भी बचना पड़ेगा इसलिए
(ख) समुद्र का पानी खारा होता है इसलिए
(ग) नदियों का पानी सूख गया है इसलिए
(घ) झरने का पानी पीने लायक नहीं होता इसलिए

3- यहाँ चुग्गा मोटा है- इस पंक्ति में 'यहाँ' शब्द किसके लिए आया है?

(क) चिड़िया के लिए
(ख) धरती के लिए
(ग) पिंजड़े के लिए

(घ) शिकारी के लिए

4- चिड़िया मुक्ति का गाना क्यों गाएगी?

(क) उसे सुविधाओं से अधिक आजादी प्रिय है

(ख) उसे सुविधाएँ पसंद हैं

(ग) उसे पिंजड़े में रहना पसंद है

(घ) इनमें से कोई नहीं

5- उक्त काव्यांश का उपयुक्त सार है-

(क) धरती और पिंजड़ा

(ख) चिड़िया का गीत

(ग) कवि की चिड़िया

(घ) आजादी महत्त्वपूर्ण है

उत्तरमाला

1-(ख) पिंजड़े के बाहर विस्तार अधिक है और हमेशा जीवन का संकट है 2- (क) इन पर पहरा होता है और उसे शिकारियों से भी बचना पड़ेगा इसलिए 3- (ग) पिंजड़े के लिए 4- (क) उसे सुविधाओं से अधिक आजादी प्रिय है 5-(घ) आजादी महत्त्वपूर्ण है

अभिव्यक्ति और जनसंचार

- **संचार का अर्थ**- संचार शब्द मूलत: चर धातु और सम उपसर्ग के याग से बना है यहाँ सम का अर्थ है उचित, सही या पूर्ण और चार का अर्थ है पहुँचना, जाना या भेजना। अर्थात् एक स्थान विशेष से अन्य दूसरे स्थान तक सूचनाओं या जानकारियों का पहुँचना अथवा भेजना. यह शब्द अंग्रेजी के कम्युनिकेशन (COMMUNICATION) शब्द का हिन्दी अनुवाद है। संचार एक तरह से सूचनाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया है।
- **संचार की परिभाषा-** दो अथवा दो से अधिक लोगों के बीच किसी स्थान विशेष से अन्य दूसरे स्थान तक सूचनाओं या जानकारियों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया को संचार कहते हैं।
- **संचार के तत्व-** संचार के निम्नलिखित तत्व होते हैं-

  1-स्रोत या संचारक 2- कूटीकरण 3-कूटवाचन 4-संदेश 5-प्राप्तकर्ता 6-फीडबैक 7-शोर
- **संचार माध्यम-** संचार के जिन साधनों की सहायता से सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है, उन्हें संचार माध्यम कहा जाता है। जैसे- समाचार पत्र, रेडियो, इंटरनेट, पोस्टर, बैनर आदि।
- **संचार के प्रकार-** संचार के निम्नलिखित प्रकार हैं-

  1-मौखिक संचार 2- अमौखिक (सांकेतिक) संचार 3- अत:वैक्तिक संचार 4- अंतर्वैक्तिक संचार 5- समूह संचार 6- जनसंचार
- **जनसंचार-** देश-दुनिया में घटित घटनाओं की जानकारी का यांत्रिक माध्यमों की सहायता से अप्रत्यक्ष रूप में आम जनता तक पहुँचना ही जनसंचार कहलाता है।
- **जनसंचार के रूप (प्रकार)-** जनसंचार के दो मुख्य रूप हैं- 1- प्रिंट मीडिया (मुद्रित माध्यम) 2- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (प्रसारित माध्यम)
- **जनसंचार के कार्य-** जनसंचार के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं-

  1-सूचना देना 2- मनोरंजन करना 3- अद्यतन करना 4- जागरूक करना 5- मंच प्रदान करना 6- राय कायम करना।

जनसंचार संबंधी महत्वपूर्ण प्रश्न

प्र-1 जनसंचार माध्यमों के प्रकार बताइए।

उत्तर- प्रिंट मीडिया (मुद्रित माध्यम) 2- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (प्रसारित माध्यम)

प्र-2 पत्रकारिता से क्या आशय है?

उत्तर- ख़बरों के संचार को पत्रकारिता कहते हैं।

प्र-3 मुद्रण की शुरुआत किस देश से हुई?

उत्तर- मुद्रण की शुरुआत चीन से हुई।

प्र-4 छापेखाने का आविष्कार किसने किया?

उत्तर- छापेखाने का आविष्कार जर्मनी के गुटेनबर्ग ने किया।

प्र-5 भारत में पहला छापाखाना कहाँ खुला?

उत्तर- भारत में पहला छापाखाना 1556 ई. में गोवा में खुला।

प्र-6 मुद्रित माध्यम की सबसे बड़ी कमजोरी क्या है?

उत्तर- इसका प्रयोग केवल पढ़ा-लिखा वर्ग ही कर सकता है।

प्र-7 डेडलाइन से क्या आशय है?

उत्तर- समाचारों के प्रकाशन के लिए न्यूज डेस्क पर खबरों के पहुँचाने की निर्धारित अंतिम समय-सीमा को डेडलाइन कहा जाता है ।

प्र-8 रेडियो का आविष्कार किसने किया ?

उत्तर- रेडियो का आविष्कार इटली के जी. मार्कोनी ने 1895 ई.में किया।

प्र-9 उल्टा पिरामिड शैली क्या है?

उत्तर- उल्टा पिरामिड समाचार लेखन की एक शैली है जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य सबसे पहले, उसके बाद उससे कम और अंत में सबसे कम महत्त्वपूर्ण तथ्यों को लिखा जाता है।

प्र-10 रेडियो किस तरह का जनसंचार माध्यम है?

उत्तर- रेडियो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का श्रव्य जनसंचार माध्यम है।

प्र-11 टेलीविजन का आविष्कार किसने किया?

उत्तर- टेलीविजन का आविष्कार जे.एल. बेयर्ड ने 1925 ई. में किया।

प्र-12 टेलीविजन की कोई एक विशेषता बताइए?

उत्तर- टेलीविजन श्रव्य-दृश्य माध्यम है। इसमें कम शब्दों में अधिक जानकारी दी जाती है।

प्र-13 इंटरनेट का आविष्कार कैसे हुआ?

उत्तर- इंटरनेट का आविष्कार अमेरिकी रक्षा विभाग द्वारा सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए 1969 ई. में किया गया।

प्र-14 इंटरनेट पत्रकारिता क्या है?

उत्तर- इंटरनेट पर सूचनाओं के आदान-प्रदान को इंटरनेट पत्रकारिता कहा जाता है। वास्तविक रूप में इंटरनेट एक टूल है जिसका प्रयोग सूचना, मनोरंजन, ज्ञान एवं संवादो के आदान-प्रदान के लिए किया जाता है।

प्र-15 इंटरनेट पत्रकारिता को अन्य किन नामों से जाना जाता है?

उत्तर- ऑनलाइन पत्रकारिता, वेब पत्रकारिता, साइबर पत्रकारिता।

प्र-16 टेलीविजन की कोई एक विशेषता बताइए?

उत्तर- टेलीविजन श्रव्य-दृश्य माध्यम है। इसमें कम शब्दों में अधिक जानकारी दी जाती है।

प्र-17 हिन्दी में नेट पत्रकारिता आरंभ किससे हुआ?

उत्तर- हिन्दी में नेट पत्रकारिता का आरंभ 'वेब दुनिया' से शुरू हुआ।

प्र-18 समाचार से क्या आशय है?

उत्तर- देश-दुनिया में घटित वे घटनाएँ जिनका अधिक से अधिक से लोगों पर प्रभाव पड़ता हो तथा जिनमें अधिक से अधिक लोगों की रूचि हो, उन्हें समाचार कहते हैं।

प्र-19 समाचार के तत्व बताइए।

उत्तर- नवीनता, निकटता, सरलता, तथ्यपरकता, स्पष्टता और क्रमबद्धता।

प्र-20 समाचार लेखन में छः ककार क्या हैं?

उत्तर- कब, कहाँ, कैसे, कौन, क्या, क्यों।

प्र-21 पत्रकारिता में बीट किसे कहते हैं?

उत्तर- संवाददाताओं में उनकी रूचि और क्षमता के अनुसार कार्य का विभाजन ही बीट कहलाता है।

प्र-22 संपादकीय पृष्ठ से क्या मतलब है?

उत्तर- समाचार पत्र के जिस पृष्ठ पर संपादक द्वारा किसी ज्वलंत मुद्दे, घटना या समस्या से संबंधित राय व्यक्त की जाती है, उसे संपादकीय पृष्ठ कहा जाता है।

प्र-23 पत्रकार कितने तरह के होते हैं?

उत्तर- पत्रकार तीन तरह के होते हैं- 1-पूर्णकालिक पत्रकार 2-अंशकालिक पत्रकार 3-स्वतंत्र पत्रकार

प्र-24 समाचार और फीचर में क्या अंतर है?

उत्तर- समाचार में तथ्यात्मक सूचना होती है जबकि फीचर सृजनात्मक लेख होता है।

प्र-25 खोजी रिपोर्ट का क्या अर्थ है?

उत्तर- खोजी रिपोर्ट में गहन छानबीन और मौलिक शोध के द्वारा उन तथ्यों को सामने लाया जाता है जिनकी जानकारी आमतौर पर लोगों को नहीं होती है।

प्र-26 वॉचडॉग पत्रकारिता का क्या अर्थ है?

उत्तर- जो पत्रकारिता सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और कोई गड़बड़ी होते ही उसका परदाफ़ाश करती है, उसे वॉचडॉग पत्रकारिता कहते हैं।

प्र-27 'रिपोर्ताज' शब्द की उत्पत्ति किस भाषा से मानी जाती है?

उत्तर- 'रिपोर्ताज' शब्द की उत्पत्ति फ्रेंच भाषा से से मानी जाती है।

प्र-28 किस पत्रिका को हिंदी में रिपोर्ताज प्रकाशित करने का श्रेय है?

उत्तर- 'हंस' पत्रिका को हिंदी में रिपोर्ताज प्रकाशित करने का श्रेय दिया जाता है।

अभ्यास

1- ब्रेकिंग न्यूज का क्या आशय है?

(क) कम से कम शब्दों में तत्काल ख़बर का मिलना

(ख) चित्र के साथ ख़बर का देर से मिलना

(ग) समाचार पत्र में ख़बर का छपना

(घ) रेडियो पर ख़बरों का प्रसारण

2- भारत में इंटरनेट का पहला दौर कब से शुरू माना जाता है?

(क) 1999 ई. से

(ख) 2003 ई. से

(ग) 1993 ई. से

(घ) इनमें से कोई नहीं

3- भारत में अखबारी पत्रकारिता की शुरुआत कब और कहाँ से हुई?

(क) 1919 ई. महात्मा गाँधी के 'यंग इण्डिया', गुजरात से

(ख) 1826 ई. में पं. जुगल किशोर के 'उदंत मार्तंड', कोलकाता से

(ग) 1780 ई. में जेम्स ऑगस्ट हिकी के 'बंगाल गजट', कोलकाता से

(घ) इनमें से कोई नहीं

4- एंकर-बाइट का क्या अर्थ है?

(क) कम से कम शब्दों में तत्काल ख़बर का मिलना

(ख) किसी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित दृश्य का दिखाया जाना

(ग) समाचार पत्र में ख़बर का छपना

(घ) संवाददाता द्वारा खबरों का बिना दृश्य के बताना

5- किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर किसी निश्चित समयावधि के लिए कार्य करने वाला पत्रकार कहलाता है-

(क) पूर्णकालिक पत्रकार

(ख) स्वतंत्र पत्रकार

(ग) अंशकालिक पत्रकार

(घ) क और ख दोनों

उत्तर- 1- (क) कम से कम शब्दों में तत्काल ख़बर का मिलना 2- (ग) 1993 ई. से 3-(ग) 1780 ई. में जेम्स ऑगस्ट हिकी के 'बंगाल गजट', कोलकाता से 4- (ख) किसी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित दृश्य का दिखाया जाना 5-(ग) अंशकालिक पत्रकार

प्रकरण- दिन जल्दी जल्दी ढलता है

-हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय- कविवर हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर सन 1907 को इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1942-1952 ई० तक यहीं पर प्राध्यापक रहे। उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय , इंग्लैंड से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। अंग्रेजी कवि कीट्स पर उनका शोधकार्य बहुत चर्चित रहा। वे आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से संबंद्ध रहे और फिर विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ रहे। उन्हें राज्यसभा के लिए भी मनोनीत किया गया। 1976 ई० में उन्हें 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया।

रचनाएँ- हरिवंश राय बच्चन की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1. **काव्य-संग्रह**-मधुशाला (1935), मधुबाला (1938), मधुकलश (1938), निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत , आकुल-अंतर, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे , नए-पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ।
2. **आत्मकथा**-क्या भूलें क्या याद करूं , नीड़ का निर्माण फिर , बसेरे से दूर , दशद्वार से सोपान तक।
3. **अनुवाद**-हैमलेट, जनगीता, मैकबेथ।
4. **डायरी**-प्रवासी की डायरी।

काव्यगत विशेषताएँ- बच्चन हालावाद के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। दोनों महायुद्धों के बीच मध्यवर्ग के विक्षुब्ध विकल मन को बच्चन ने वाणी दी। उन्होंने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता की बजाय सीधी-सादी जीवंत भाषा और संवेदना से युक्त गेय शैली में अपनी बात कही। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में घटी घटनाओं की सहजअनुभूति की ईमानदार अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से की है। यही विशेषता हिंदी काव्य-संसार में उनकी प्रसिद्ध का मूलाधार है। कवि ने अपनी अनुभूतियाँ सहज स्वाभाविक ढंग से कही हैं। इनकी भाषा आम व्यक्ति के निकट है। बच्चन का कवि-रूप सबसे विख्यात है उन्होंने कहानी , नाटक, डायरी आदि के साथ बेहतरीन आत्मकथा भी लिखी है। इनकी रचनाएँ ईमानदार आत्मस्वीकृति और प्रांजल शैली के कारण आज भी पठनीय हैं।

एक गीत

प्रतिपादय- कवि **ने** 'निशा-निमंत्रण' से उद्धृत इस गीत में प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश की है। कवि का मानना है कि किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे

प्रयास के पगों में गति भर सकता है अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने को अभिशिप्त हो जाते हैं। प्रस्तुत गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है।

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता प्रेम की महत्ता पर प्रकाश डालती है। प्रेम की तरंग ही मानव के जीवन में उमंग और भावना की हिलोर पैदा करती है। प्रेम के कारण ही मनुष्य को लगता है कि दिन जल्दी-जल्दी बीता जा रहा है। इससे अपने प्रियजनों से मिलने की उमंग से कदमों में तेजी आती है तथा पक्षियों के पंखों में तेजी और गति आ जाती है। यदि जीवन में प्रेम न हो तो शिथिलता आ जाती है।

सार- कवि गीत का आशय स्पष्ट करते हुए कहता है कि साँझ घिरते ही पथिक लक्ष्य की ओर तेजी से कदम बढ़ाने लगता है। उसे रास्ते में रात होने का भय होता है। जीवन-पथ पर चलते हुए जब व्यक्ति अपने लक्ष्य के निकट होता है तो उसकी उत्सुकता और बढ़ जाती है। पक्षी भी बच्चों की चिंता करके तेजी से पंख फड़फड़ाने लगते हैं। अपनी संतान से मिलने की चाह में हर प्राणी आतुर हो जाता है। आशा व्यक्ति के जीवन में नई चेतना भर देती है। जिनके जीवन में कोई आशा नहीं होती , वे शिथिल हो जाते हैं। उनका जीवन नीरस हो जाता है। उनके भीतर उत्साह समाप्त हो जाता है।

विशेष-

1. समय की गतिशीलता का यथार्थ चित्रण है।
2. कवि ने जीवन की क्षणभंगुरता व प्रेम की व्यग्रता को व्यक्त किया है।
3. 'जल्दी-जल्दी' में पुनरुक्तिप्रकाश तथा 'मुझसे मिलने' में अनुप्रास अलंकार है।
4. भाषा सरल, सहज और भावानुकूल है, जिसमें खड़ी बोली का प्रयोग है।
5. कविता में बिम्बों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है।
6. पथिक के प्रसंग में वीर, चिड़िया के प्रसंग में वात्सल्य और कवि (प्रेमी) के प्रसंग वियोग श्रृंगार रस की अनुभूति है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्रश्न-1 दिन भर का थका होने पर भी पथिक जल्दी-जल्दी क्यों चलता है?

(क) पथिक के जीवन में अंधेरा है
(ख) उसकी मंजिल दिखाई पड़ रही है और रात होने वाली है
(ग) चिड़िया के बच्चे उसके साथ हैं
(घ) उसे अपने बच्चों की याद आ रही है

प्रश्न-2 चिड़ियों के पंखों में तेजी आने का क्या कारण है?

(क) वे बहुत दूर चले गए हैं
(ख) उनके घोसलों में कोई नहीं है
(ग) चिड़ियों के बच्चे उड़ गए होंगे
(घ) बच्चे अपने माता-पिता के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे

प्रश्न-3 दिन जल्दी-जल्दी ढलता है- पंक्ति का क्या अर्थ है ?

(क) समय स्थिर है
(ख) समय गतिशील है
(ग) समय न तो स्थिर है और न ही गतिशील है
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-4 कवि में किस बात से निराशा है?

(क) उससे मिलने वाला कोई नहीं है
(ख) वह अपनी मंजिल से दूर है
(ग) चिड़ियों का दुःख देखकर
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न-5 बच्चे प्रत्याशा में होंगे.... में कौन-सा रस है?

(क) वीर रस
(ख) संयोग श्रृंगार रस
(ग) करुण रस
(घ) वात्सल्य रस

प्रकरण- कविता के बहाने

-कुँवर नारायण

कवि परिचय - कुँवर नारायण आधुनिक हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनका जन्म 19 सितंबर, सन 1927 को फैजाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से पूरी की। कुँवर नारायण ने सन 1950 के आस-पास काव्य-लेखन की शुरुआत की। इन्होंने चिंतनपरक लेख, कहानियाँ सिनेमा और अन्य कलाओं पर समीक्षाएँ भी लिखी हैं। इन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है ; जैसे-कबीर सम्मान, व्यास सम्मान, लोहिया सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा केरल का कुमारन आशान पुरस्कार आदि।

रचनाएँ-- कुँवर नारायण का 'तीसरे सप्तक' के कवियों में प्रमुख स्थान है। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1. काव्य-संग्रह- चक्रव्यूह, परिवेश : हम तुम, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों।
2. प्रबंध-काव्य-आत्मजयी।
3. कहानी-संग्रह-आकारों के आस-पास।
4. समीक्षा-आज और आज से पहले।
5. सामान्य—मेरे साक्षात्कार।

काव्यगत विशेषताएँ- कुँवर नारायण ने कविता को अपने सृजन कर्म में हमेशा प्राथमिकता दी। आलोचकों का मानना है कि उनकी कविता में व्यर्थ का उलझाव , अखबारी सतहीपन और वैचारिक धुंध की बजाय संयम , परिष्कार और साफ-सुथरापन है। कुँवर नारायण नगरीय संवेदना के कवि हैं। इनके यहाँ विवरण बहुत कम हैं, परंतु वैयक्तिक तथा सामाजिक ऊहापोह का तनाव पूरी व्यंजकता में सामने आता है। भाषा और विषय की विविधता इनकी कविताओं के विशेष गुण माने जाते हैं। इनमें यथार्थ का खुरदरापन भी मिलता है और उसका सहज सौंदर्य भी। सीधी घोषणाएँ और फैसले इनकी कविताओं में नहीं मिलते क्योंकि जीवन को मुकम्मल तौर पर समझने वाला एक खुलापन इनके कवि-स्वभाव की मूल विशेषता है।

प्रतिपादय- 'कविता के बहाने' कविता कवि के कविता-संग्रह 'इन दिनों' से ली गई है। आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे में संशय हो रहा है। यह आशंका जताई जा रही है कि यांत्रिकता के दबाव से कविता का अस्तित्व नहीं रहेगा। ऐसे में यह कविता, कविता की अपार संभावनाओं को टटोलने का एक अवसर देती है।

सार- 'कविता के बहाने' कविता एक यात्रा है जो चिड़िया और फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है , फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है , लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़ , चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी , वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाते हैं। वह सीमा चाहे घर की हो , भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

विशेष–

1. कविता की रचनात्मक व्यापकता को प्रकट किया गया है।
2. 'बच्चा ही जाने' पंक्ति से बालमन की सरलता की अभिव्यक्ति होती है।
3. चिड़िया क्या जाने?- में प्रश्न अलंकार है।

4. कविता का मानवीकरण किया गया है।
5. कविता में लाक्षणिकता तथा शांत रस विद्यमान है
6. मुक्त छंद से युक्त पंक्तियों में सरल एवं सहज खड़ीबोली भावानुकूल है।
7. मुरझाए महकने - में अनुप्रास अलंकार तथा 'फूल क्या जाने?" में प्रश्न अलंकार है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 'कविता के बहाने' कविता के रचनाकार का नाम बताइए?

(क) महादेवी वर्मा
(ख) रघुवीर सहाय
(ग) कुँवर नारायण
(घ) धर्मवीर भारती

प्र-2 'कविता की उड़ान' का क्या आशय है?

(क) कविता में कल्पनाओं एवं भावनाओं की उड़ान का असीमित होना
(ख) चिड़िया की उड़ान का सीमित होना
(ग) चिड़िया की उड़ान का असीमित होना
(घ) कविता में कल्पनाओं एवं भावनाओं की उड़ान का सीमित होना

प्र-3 'बिना मुरझाए महकने के माने' पंक्ति से किसकी ओर संकेत है?

(क) फूल के मुरझाने की ओर
(ख) कविता के मुरझाने की ओर
(ग) कविता के शाश्वत होने की ओर
(घ) फूल के खिलने की क्षमता की ओर

प्र-4 कविता में किसके खेल की चर्चा की गई है?

(क) क्रिकेट के खेल की
(ख) गिल्ली-डंडे के खेल की
(ग) रंगों के खेल की
(घ) बच्चों के खेल की

प्र-5 बच्चों के खेल की क्या विशेषता है?

(क) उनके खेल में नवीनता और एकजुटता होती है
(ख) वे सदैव एकाकी होकर खेलते हैं
(ग) वे किसी दूसरे को अपने खेल में शामिल नहीं करते हैं
(घ) वे घर से दूर जाकर खेलते हैं

उत्तर- 1 (ग) कुँवर नारायण 2- (क) कविता में कल्पनाओं एवं भावनाओं की उड़ान का असीमित होना 3- (ग) कविता के शाश्वत होने की ओर 4- (घ) बच्चों के खेल की

5- (क) उनके खेल में नवीनता और एकजुटता होती है

प्रकरण- कैमरे में बंद अपाहिज

-रघुवीर सहाय

कवि परिचय- रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील कवि हैं। इनका जन्म लखनऊ (उ०प्र०) में सन् 1929 में हुआ था। इनकी संपूर्ण शिक्षा लखनऊ में ही हुई। वहीं से इन्होंने अंग्रेजी साहित्य में एम०ए० किया। प्रारंभ में ये पेशे से पत्रकार थे। इन्होंने 'प्रतीक' अखबार में सहायक संपादक के रूप में काम किया। फिर ये आकाशवाणी के समाचार विभाग में रहे। कुछ समय तक हैदराबाद से निकलने वाली पत्रिका 'कल्पना' और उसके बाद 'दैनिक नवभारत टाइम्स ' तथा 'दिनमान' से संबद्ध रहे। साहित्य-सेवा के कारण इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनका देहावसान सन 1990 में दिल्ली में हुआ।

रचनाएँ- रघुवीर सहाय नई कविता के कवि हैं। इनकी कुछ आरंभिक कविताएँ अज्ञेय द्वारा संपादित दूसरा सप्तक (1935) में प्रकाशित हुई। इनकी रचनाएँ महत्वपूर्ण हैं-

काव्य-संकलन- सीढ़ियों पर धूप में, आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसी, लोग भूल गए हैं आदि।

काव्यगत विशेषताएँ- रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में आम आदमी की पीड़ा को बड़ी गहराई से व्यक्त किया है। ये साठोत्तरी काव्य-लेखन के सशक्त , प्रगतिशील व चेतना-संपन्न रचनाकार हैं। इन्होंने सड़क , चौराहा, दफ़्तर, अखबार, संसद, बस, रेल और बाजार की बेलौस भाषा में कविता लिखी। घर-मोहल्ले के चरित्रों पर कविता लिखकर उन्हें हमारी चेतना का स्थायी नागरिक बनाया। इन्होंने कविता को एक कहानीपन और नाटकीय वैभव दिया। रघुवीर सहाय ने बतौर पत्रकार और कवि घटनाओं में निहित विडंबना और त्रासदी को देखा। इन्होंने छोटे की महत्ता को स्वीकारा और उन लोगों व उनके अनुभवों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया जिन्हें समाज में हाशिए पर रखा जाता है। इन्होंने भारतीय समाज में ताकतवरों की बढ़ती हैसियत व सत्ता के खिलाफ़ भी साहित्य और पत्रकारिता के पाठकों का ध्यान खींचा। रघुवीर सहाय ने अपने काव्य में अधिकतर बातचीत की सहज शैली में लिखा और सीधी, सरल तथा सधी भाषा का प्रयोग किया । ये अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचते रहे हैं। इन्होंने कविताओं में अत्यंत साधारण तथा अनायास-सी प्रतीत होने वाली शैली में समाज की दारुण विडंबनाओं को व्यक्त किया है।

प्रतिपादय- 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता 'लोग भूल गए हैं' काव्य-संग्रह से संकलित है। इस कविता में कवि ने शारीरिक चुनौती को झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा के साथ-साथ दूर-संचार माध्यमों के चरित्र को भी रेखांकित किया है। किसी की पीड़ा को दर्शक वर्ग तक पहुँचाने वाले व्यक्ति को उस पीड़ा के प्रति स्वयं संवेदनशील होने और दूसरों को संवेदनशील बनाने का दावेदार होना चाहिए। किन्तु आज विडंबना यह है कि जब पीड़ा को परदे पर उभारने का प्रयास किया जाता है तो कारोबारी दबाव के तहत प्रस्तुतकर्ता का रवैया संवेदनहीन हो जाता है। यह कविता टेलीविजन स्टूडियो के भीतर की दुनिया को समाज के सामने प्रकट करती है। साथ ही उन सभी व्यक्तियों की तरफ इशारा करती है जो दुख-दर्द , यातना-वेदना आदि को बेचना चाहते हैं।

सार- इस कविता में दूरदर्शन (मीडिया) के लोग स्वयं को शक्तिशाली बताते हैं तथा दूसरे को कमजोर मानते हैं। वे शारीरिक चुनौती झेलने वाले से पूछते हैं कि क्या आप अपाहिज हैं? तो आप अपाहिज क्यों हैं? क्या आपको इससे दुख होता है? ऊपर से वह दुख भी जल्दी बताइए क्योंकि समय नहीं है। प्रश्नकर्ता इन सभी प्रश्नों के उत्तर अपने हिसाब से चाहता है। इतने प्रश्नों से विकलांग घबरा जाता है। प्रश्नकर्ता अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उसे रुलाने की कोशिश करता है ताकि दर्शकों में करुणा का भाव जगा सके। इसी से उसका उद्देश्य पूरा होगा। वह इसे सामाजिक उद्देश्य कहता है , परंतु 'परदे पर वक्त की कीमत है' वाक्य से उसके व्यापार की पोल खुल जाती है।

विशेष–

1. कवि ने क्षीण होती मानवीय संवेदना का चित्रण किया है।
2. मीडिया की मानसिकता पर करारा व्यंग्य है।
3. दूरदर्शन के कार्यक्रम निर्माताओं पर करारा व्यंग्य है।
4. काव्यांश में नाटकीयता है।
5. सरल एवं भावानुकूल खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
6. व्यंजना शब्द-शक्ति का प्रयोग किया गया है।
7. 'परदे पर' तथा 'बहुत बड़ी' में अनुप्रास अलंकार है।
8. कविता में मुक्तक छंद का प्रयोग है। कोष्ठकों का प्रयोग किया गया है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 'कमरे में बंद अपाहिज' कविता के रचनाकार का नाम बताइए?

(क) महादेवी वर्मा

(ख) रघुवीर सहाय

(ग) कुँवर नारायण

(घ) धर्मवीर भारती

प्र-2 'कमरे में बंद अपाहिज' कविता में मीडिया के किस माध्यम का उल्लेख है?

(क) रेडियो

(ख) समाचारपत्र

(ग) इंटरनेट

(घ) टेलीविजन

प्र-3 'कमरे में बंद अपाहिज' कविता में कार्यक्रम प्रस्तोता किससे सवाल करता है?

(क) कैमरामैन से

(ख) शारीरिक चुनौती झेलने वाले अपाहिज से

(ग) दर्शकों से

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-4 'परदे पर वक्त कीमत है'- इसका सही आशय क्या होगा?

(क) टेलीविजन पर सबको मौका मिलता है

(ख) शारीरिक चुनौती झेलने वाले अपाहिज को अवसर दिया जाता है

(ग) टेलीविजन पर कोई भी दिखाया जा सकता है

(घ) टेलीविजन पर सिर्फ नामी-गिरामी लोगों को ही अवसर मिलता है

प्र-5 बस थोड़ी ही कसर रह गयी - इस पंक्ति का क्या मतलब है?

(क) कार्यक्रम समाप्त हो गया

(ख) कार्यक्रम फिर से दिखाया जाएगा

(ग) कार्यक्रम अधूरा रह गया

(घ) कार्यक्रम अभी शुरू नहीं हुआ

उत्तर-1- (ख) रघुवीर सहाय 2-(घ) टेलीविजन 3- (ख) शारीरिक चुनौती झेलने वाले अपाहिज से 4- (घ) टेलीविजन पर सिर्फ नामी-गिरामी लोगों को ही अवसर मिलता है 5 -(ग) कार्यक्रम अधूरा रह गया

प्रकरण - सहर्ष स्वीकारा है

-गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

कवि परिचय– प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि गजानन माधव 'मुक्तिबोध' का जन्म मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के श्योपुर नामक स्थान पर 1917 ई० में हुआ था। इनके पिता पुलिस विभाग में थे। अत: निरंतर होने वाले स्थानांतरण के कारण इनकी पढ़ाई नियमित व व्यवस्थित रूप से नहीं हो पाई। 1954 ई. में इन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम०ए०

(हिंदी) करने के बाद राजनाद गाँव के डिग्री कॉलेज में अध्यापन कार्य आरंभ किया। इन्होंने अध्यापन, लेखन एवं पत्रकारिता सभी क्षेत्रों में अपनी योग्यता , प्रतिभा एवं कार्यक्षमता का परिचय दिया। 1964 ई० में यह महान चिंतक, दार्शनिक, पत्रकार एवं सजग लेखक तथा कवि इस संसार से चल बसा।

रचनाएँ- गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की रचनाएँ निम्नलिखित हैं-
कविता-संग्रह- चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक-धूल।
कथा-साहित्य- काठ का सपना, विपात्र, सतह से उठता आदमी।
आलोचना- कामायनी-एक पुनर्विचार, नई कविता का आत्मसंघर्ष, नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, समीक्षा की समस्याएँ, एक साहित्यिक की डायरी।
काव्यगत विशेषताएँ- मुक्तिबोध प्रयोगवादी काव्यधारा के प्रमुख सूत्रधारों में थे। इनकी प्रतिभा का परिचय अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' से मिलता है। उनकी कविता में निहित मराठी संरचना से प्रभावित लंबे वाक्यों ने आम पाठक के लिए कठिन बनाया, लेकिन उनमें भावनात्मक और विचारात्मक ऊर्जा अटूट थी। यह ऊर्जा अनेकानेक कल्पना-चित्रों और फैंटेसियों का आकार ग्रहण कर लेती है। इनकी रचनात्मक ऊर्जा का एक बहुत बड़ा अंश आलोचनात्मक लेखन और साहित्य-संबंधी चिंतन में सक्रिय रहा। ये पत्रकार भी थे। इन्होंने राजनीतिक विषयों, अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य तथा देश की आर्थिक समस्याओं पर लगातार लिखा है। इनकी भाषा उत्कृष्ट है। भावों के अनुरूप शब्द गढ़ना और उसका परिष्कार करके उसे भाषा में प्रयुक्त करना भाषा-सौंदर्य की अद्भुत विशेषता है। इन्होंने तत्सम शब्दों के साथ-साथ उर्दू, अरबी और फ़ारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है।
प्रतिपादय- मुक्तिबोध की कविताएँ आमतौर पर लंबी होती हैं। इन्होंने जो भी छोटी कविताएँ लिखी हैं उनमें एक है '**सहर्ष स्वीकारा है**' जो '**भूरी-भूरी खाक-धूल**' काव्य-संग्रह से ली गई है। एक होता है-'स्वीकारना' और दूसरा होता है-'सहर्ष स्वीकारना' यानी खुशी-खुशी स्वीकार करना। यह कविता जीवन के सब सुख-दुख , संघर्ष-अवसाद, उठा-पटक को सम्यक भाव से अंगीकार करने की प्रेरणा देती है। इन भावों को स्वीकार करने की कवि को जहाँ से यह प्रेरणा मिली , कविता प्रेरणा के उस विशिष्ट व्यक्ति या सत्ता के साथ गहरा लगाव है उसके न होने पर भी होने का एहसास है।
सार- कवि कहता है कि मेरे जीवन में जो कुछ भी है , वह मुझे सहर्ष स्वीकार है। मुझे जो कुछ भी मिला है , वह तुम्हारा (परमसत्ता) दिया हुआ है तथा तुम्हें प्यारा है। मेरी गर्व योग्य गरीबी, विचार-वैभव, गंभीर अनुभव , दृढ़ता, भावनाओं आदि सब पर तुम्हारा ही प्रभाव है। तुम्हारे साथ मेरा न जाने कौन-सा नाता है कि मैं जितनी भी भावनाएँ बाहर निकालने का प्रयास करता हूँ, वे भावनाएँ उतनी ही अधिक उमड़ती रहती हैं। तुम्हारा चेहरा मेरे स्वरुप पर खिले चाँद के समान अपनी कांति बिखेरता रहता है। कवि कहता है कि वह उस परम सत्ता के लगाव की पीड़ा से बचने के लिए उसके प्रभाव से दूर जाना चाहता है क्योंकि वह भीतर से

दुर्बल पड़ने लगा है। वह उसी (परमसत्ता) से अपने लिए दंड चाहता है। वह दक्षिण ध्रुव की अंधकारमयी अमावस्या की रात्रि के अँधेरों में लुप्त हो जाना चाहता है। वह अपनेपन के उजाले को अधिक सहन नहीं कर पा रहा है। उस परमसत्ता की ममता भीतर से चुभने लगी है। कवि की आत्मा कमजोर पड़ने लगी है। वह स्वयं को पाताली अँधेरों की गुफाओं में लापता होने की बात कहता है, किंतु वहाँ भी उसी प्रिय (परमसत्ता) का सहारा है।

विशेष

1. कवि ने अपनी हर उपलब्धि का श्रेय अपने प्रिय (परम सत्ता) को दिया है।
2. कवि ने अपने व्यक्तित्व के निर्माण में प्रिय के योगदान को स्वीकार किया है।
3. विचार-वैभव' और 'भीतर की सरिता' में रूपक अलंकार तथा 'पल-पल' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
4. 'सहर्ष स्वीकारा' और 'गरबीली गरीबी' में अनुप्रास अलंकार की छटा है।
5. काव्य की रचना मुक्त छंद में है। विशेषणों का सुंदर प्रयोग है।
6. लम्बे वाक्यों से युक्त लाक्षणिक खड़ीबोली का प्रयोग मनोरम है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता में कवि को जीवन में किस पर गर्व है?

(क) धन-संपत्ति पर

(ख) विचार-वैभव पर

(ग) गरीबी पर

(घ) अपने शरीर पर

प्र-2 'मीठे पानी का सोता है' पंक्ति से किसकी ओर संकेत है?

(क) हृदय की ओर

(ख) दिमाग की ओर

(ग) घर की ओर

(घ) तरंग की ओर

प्र-3 'दक्षिण ध्रुवी अंधकार अमावस्या' इस पंक्ति में संबंध है-

(क) कर्म-क्रिया का

(ख) कर्ता-क्रिया का

(ग) संज्ञा-सर्वनाम का

(घ) विशेषण-विशेष्य का

प्र-4 कवि स्वयं के लिए किससे दंड पाना चाहता है?-

(क) अपने शत्रु से

(ख) अपने परम प्रिय (अव्यक्त) से

(ग) अपने गुरु से

(घ) अपने गृह देवता से

प्र-5 'धुएँ के बादलों में' खो जाने से क्या आशय है?

(क) स्मृति में चले जाने से

(ख) अमृत को पाने से

(ग) विस्मृति में चले जाने से

(घ) अज्ञानता में बह जाने से

उत्तर-1- (ख) गरीबी पर 2-(ग) हृदय की ओर 3- (घ) विशेषण-विशेष्य का 4- (ख) अपने परम प्रिय (अव्यक्त) से 5 -(ग) विस्मृति में चले जाने से

प्रकरण - भक्तिन

-महादेवी वर्मा

लेखिका परिचय- श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद (उ०प्र०) में 1907 ई० में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर के मिशन स्कूल में हुई थी। 1929 ई० में इन्होंने बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहा, परंतु महात्मा गांधी के संपर्क में आने पर ये समाज-सेवा की ओर उन्मुख हो गई। 1932 ई० में इन्होंने इलाहाबाद से संस्कृत में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण किया और प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना करके उसकी प्रधानाचार्या के रूप में कार्य करने लगीं। मासिक पत्रिका 'चाँद' का भी इन्होंने कुछ समय तक संपादन-कार्य किया। इनका कर्मक्षेत्र बहुमुखी रहा है। इन्हें 1952 ई० में उत्तर प्रदेश की विधान परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया। 1954 ई० में ये साहित्य अकादमी की संस्थापक सदस्या बनीं। 1960 ई० में इन्हें प्रयाग महिला विद्यापीठ का कुलपति बनाया गया। इनके व्यापक शैक्षिक, साहित्यिक और सामाजिक कार्यों के लिए भारत सरकार ने 1956 ई० में इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। 1983 ई० में 'यामा' कृति पर इन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने इन्हें 'भारत-भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया। सन 1987 में इनकी मृत्यु हो गई।

रचनाएँ – इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

काव्य-संग्रह – नीहार, रश्मि, नीरजा, यामा, दीपशिखा।

संस्मरण – अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ पथ के साथी, मेरा परिवार।

निबंध-संग्रह – श्रृंखला की कड़ियाँ आपदा, संकल्पिता, भारतीय संस्कृति के स्वर।

साहित्यिक विशेषताएँ – साहित्य सेविका और समाज-सेविका दोनों रूपों में महादेवी वर्मा की प्रतिष्ठा रही है। महात्मा गाँधी की दिखाई राह पर अपना जीवन समर्पित करके इन्होंने शिक्षा और समाज-कल्याण के क्षेत्र में निरंतर कार्य किया। ये बहुमुखी प्रतिभा की धनी थीं। ये छायावाद के चार स्तंभों में से एक हैं। इनकी चर्चा निबंधों और संस्मरणात्मक रेखाचित्रों के

कारण एक अप्रतिम गद्यकार के रूप में भी होती है। कविताओं में ये अपनी आंतरिक वेदना और पीड़ा को व्यक्त करती हुई इस लोक से परे किसी और सत्ता की ओर अभिमुख दिखाई पड़ती हैं, तो गद्य में इनका गहरा सामाजिक सरोकार स्थान पाता है। इनकी श्रृंखला की कड़ियाँ कृति एक अद्वतीय रचना है जो हिंदी में स्त्री-विमर्श की भव्य प्रस्तावना है। इनके संस्मरणात्मक रेखाचित्र अपने आस-पास के ऐसे चरित्रों और प्रसंगों को लेकर लिखे गए हैं जिनकी ओर साधारणतया हमारा ध्यान नहीं खिच पाता। महादेवी जी की मर्मभेदी व करुणामयी दृष्टि उन चरित्रों की साधारणता में असाधारण तत्वों का संधान करती है। इस तरह इन्होंने समाज के शोषित-पीड़ित तबके को अपने साहित्य में नायकत्व प्रदान किया है।
भाषा-शैली – लेखिका ने अंतर्मन की अनुभूतियों का अंकन अत्यंत मार्मिकता से किया है। इनकी भाषा में बनावटीपन नहीं है। इनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठ शब्दों की प्रमुखता है। इनके गद्य-साहित्य में भावनात्मक, संस्मरणात्मक, समीक्षात्मक, इत्तिवृत्तात्मक आदि अनेक शैलियों का रूप दृष्टिगोचर होता है। मर्मस्पर्शिता इनके गद्य की प्रमुख विशेषता है।

प्रतिपादय- 'भक्तिन' महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो **'स्मृति की रेखाएँ'** में संकलित है। इसमें लेखिका ने अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का दिलचस्प खाका खींचा है। महादेवी के घर में काम शुरू करने से पहले उसने कैसे एक संघर्षशील , स्वाभिमानी और कर्मठ जीवन जिया , कैसे पितृसत्तात्मक मान्यताओं और छल-छद्म भरे समाज में अपने और अपनी बेटियों के हक की लड़ाई लड़ती रही और हारकर कैसे ज़िंदगी की राह पूरी तरह बदल लेने के निर्णय तक पहुँची, इसका संवेदनशील चित्रण लेखिका ने किया है। साथ ही, भक्तिन लेखिका के जीवन में आकर छा जाने वाली एक ऐसी परिस्थिति के रूप में दिखाई पड़ती है , जिसके कारण लेखिका के व्यक्तित्व के कई अनछुए आयाम उद्घाटित होते हैं। इसी कारण अपने व्यक्तित्व का जरूरी अंश मानकर वे भक्तिन को खोना नहीं चाहतीं।

सारांश- लेखिका कहती है कि भक्तिन का कद छोटा व शरीर दुबला था। उसके होंठ पतले थे। वह गले में कंठी-माला पहनती थी। उसका नाम लक्ष्मी था , परंतु उसने लेखिका से यह नाम प्रयोग न करने की प्रार्थना की। उसकी कंठी-माला को देखकर लेखिका ने उसका नाम 'भक्तिन' रख दिया। सेवा-धर्म में वह हनुमान से स्पर्द्धा करती थी। उसके अतीत के बारे में यही पता चलता है कि वह ऐतिहासिक झूसी के गाँव के प्रसिद्ध अहीर की इकलौती बेटी थी। उसका लालन-पालन उसकी सौतेली माँ ने किया। पाँच वर्ष की उम्र में इसका विवाह हैंडिया गाँव के एक गोपालक के पुत्र के साथ कर दिया गया था। नौ वर्ष की उम्र में गौना हो गया। भक्तिन की विमाता ने उसके पिता की मृत्यु का समाचार देर से भेजा। सास ने रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए उसे पीहर यह कहकर भेज दिया कि वह बहुत दिनों से गई नहीं है। मायके जाने पर विमाता के दुर्व्यवहार तथा पिता की मृत्यु से व्यथित होकर वह बिना

पानी पिए ही घर वापस चली आई। घर आकर सास को खरी-खोटी सुनाई तथा पति के ऊपर गहने फेंककर अपनी व्यथा व्यक्त की। भक्तिन को जीवन के दूसरे भाग में भी सुख नहीं मिला। उसके लगातार तीन लड़कियाँ पैदा हुई तो सास व जेठानियों ने उसकी उपेक्षा करनी शुरू कर दी। इसका कारण यह था कि सास के तीन कमाऊ बेटे थे तथा जेठानियों के काले-काले पुत्र थे। जेठानियाँ बैठकर खातीं तथा घर का सारा काम-चक्की चलाना , कूटना, पीसना, खाना बनाना आदि कार्य-भक्तिन करती। छोटी लड़कियाँ गोबर उठातीं तथा कंडे थापती थीं। खाने के मामले में भी भेदभाव था। जेठानियाँ और उनके लड़कों को भात पर सफेद राब , दूध व मलाई मिलती तथा भक्तिन को काले गुड़ की डली, मट्ठा तथा लड़कियों को चने-बाजरे की घुघरी मिलती थी। इस पूरे प्रकरण में भक्तिन के पति का व्यवहार अच्छा था। उसे अपनी पत्नी पर विश्वास था।

पति-प्रेम के बल पर ही वह परिवार से अलग हो गई। अलग होते समय अपने ज्ञान के कारण उसे गाय-भैंस , खेत, खलिहान, अमराई के पेड़ आदि ठीक-ठाक मिल गए। परिश्रम के कारण घर में समृद्ध आ गई। पति ने बड़ी लड़की का विवाह धूमधाम से किया। इसके बाद वह दो कन्याओं को छोड़कर चल बसा। इस समय भक्तिन की आयु 29 वर्ष की थी। उसकी संपत्ति देखकर परिवार वालों के मुँह में पानी आ गया। उन्होंने दूसरे विवाह का प्रस्ताव किया तो भक्तिन ने स्पष्ट मना कर दिया। उसने केश कटवा दिए तथा गुरु से मंत्र लेकर कंठी बाँध ली। उसने दोनों लड़कियों की शादी कर दी और पति के चुने दामाद को घर-जमाई बनाकर रखा। जीवन के तीसरे परिच्छेद में दुर्भाग्य ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। उसकी लड़की भी विधवा हो गई। परिवार वालों की दृष्टि उसकी संपत्ति पर थी। उसका जेठ अपनी विधवा बहन के विवाह के लिए अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया क्योंकि उसका विवाह हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता।

भक्तिन की लड़की ने उस तीतरबाज वर को नापसंद कर दिया। माँ-बेटी मन लगाकर अपनी संपत्ति की देखभाल करने लगीं। एक दिन भक्तिन की अनुपस्थिति में उस तीतरबाज वर ने बेटी की कोठरी में घुसकर भीतर से दरवाजा बंद कर लिया और उसके समर्थक गाँव वालों को बुलाने लगे। लड़की ने उसकी खूब मरम्मत की तो पंच समस्या में पड़ गए। अंत में पंचायत ने कलियुग को इस समस्या का कारण बताया और अपीलहीन फैसला हुआ कि दोनों को पति-पत्नी के रूप में रहना पड़ेगा। अपमानित बालिका व माँ विवश थीं। यह संबंध सुखकर नहीं था। दामाद निश्चित होकर तीतर लड़ाता था, जिसकी वजह से पारिवारिक द्वेष इस कदर बढ़ गया कि लगान अदा करना भी मुश्किल हो गया। लगान न पहुँचने के कारण जमींदार ने भक्तिन को कड़ी धूप में खड़ा कर दिया।

यह अपमान वह सहन न कर सकी और कमाई के विचार से शहर चली आई। जीवन के अंतिम परिच्छेद में, घुटी हुई चाँद, मैली धोती तथा गले में कंठी पहने वह लेखिका के पास नौकरी के लिए पहुँची और उसने रोटी बनाना, दाल बनाना आदि काम जानने का दावा किया। नौकरी मिलने पर उसने अगले दिन स्नान करके लेखिका की धुली धोती भी जल के छींटों से पवित्र करने के बाद पहनी। निकलते सूर्य व पीपल को अर्घ दिया। दो मिनट जप किया और कोयले की मोटी रेखा से चौके की सीमा निर्धारित करके खाना बनाना शुरू किया। भक्तिन छूत-पाक को मानने वाली थी। लेखिका ने समझौता करना उचित समझा। भोजन के समय भक्तिन ने लेखिका को दाल के साथ मोटी काली चित्तीदार चार रोटियाँ परोसीं तो लेखिका ने टोका। उसने अपना तर्क दिया कि अच्छी सेंकने के प्रयास में रोटियाँ अधिक कड़ी हो गई। उसने सब्जी न बनाकर दाल बना दी। इस खाने पर प्रश्नवाचक दृष्टि होने पर वह अमचूरण , लाल मिर्च की चटनी या गाँव से लाए गुड़ का प्रस्ताव रखा।

भक्तिन के लेक्चर के कारण लेखिका रूखी दाल से एक मोटी रोटी खाकर विश्वविद्यालय पहुँची और न्यायसूत्र पढ़ते हुए शहर और देहात के जीवन के अंतर पर विचार करने लगी। गिरते स्वास्थ्य व परिवार वालों की चिंता निवारण के लिए लेखिका ने खाने के लिए अलग व्यवस्था की, किंतु इस देहाती वृद्धा की सरलता से वह इतना प्रभावित हुई कि वह अपनी असुविधाएँ छिपाने लगी। भक्तिन स्वयं को बदल नहीं सकती थी। वह दूसरों को अपने मन के अनुकूल बनाने की इच्छा रखती थी। लेखिका देहाती बन गई , परंतु भक्तिन को शहर की हवा नहीं लगी। उसने लेखिका को ग्रामीण खाना-खाना सिखा दिया , परंतु स्वयं 'रसगुल्ला' भी नहीं खाया। उसने लेखिका को अपनी भाषा की अनेक दंतकथाएँ कंठस्थ करा दीं , परंतु खुद 'आँय' के स्थान पर 'जी' कहना नहीं सीखा। भक्तिन में दुर्गुणों का अभाव नहीं था। वह इधर-उधर पड़े पैसों को किसी मटकी में छिपाकर रख देती थी जिसे वह बुरा नहीं मानती थी। पूछने पर वह कहती कि यह उसका अपना घर ठहरा , पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा , सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है! अपनी मालकिन को खुश करने के लिए वह बात को बदल भी देती थी। वह अपनी बातों को शास्त्र-सम्मत मानती थी। वह अपने तर्क देती थी। लेखिका ने उसे सिर घुटाने से रोका तो उसने **'तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध'** कहकर अपने कार्य को शास्त्र-सिद्ध बताया। वह स्वयं पढ़ी-लिखी नहीं थी। अब वह हस्ताक्षर करना भी सीखना नहीं चाहती थी। उसका तर्क था कि उसकी मालकिन दिन-रात किताब पढ़ती है। यदि वह भी पढ़ने लगे तो घर के काम कौन करेगा। भक्तिन अपनी मालकिन को असाधारणता का दर्जा देती थी। इसी से वह अपना महत्व साबित कर सकती थी। उत्तर-पुस्तिका के निरीक्षण-कार्य में लेखिका का किसी ने सहयोग नहीं दिया। इसलिए वह कहती फिरती थी कि उसकी मालकिन जैसा कार्य कोई नहीं जानता। वह स्वयं सहायता करती थी। कभी उत्तर-पुस्तिकाओं को बाँधकर, कभी अधूरे चित्र को कोने में रखकर, कभी रंग की प्याली धोकर और कभी चटाई को आँचल से झाड़कर वह जो सहायता करती थी उससे भक्तिन का अन्य व्यक्तियों से अधिक

बुद्धिमान होना प्रमाणित हो जाता है। लेखिका की किसी पुस्तक के प्रकाशन होने पर उसे प्रसन्नता होती थी। उस कृति में वह अपना सहयोग खोजती थी। लेखिका भी उसकी आभारी थी क्योंकि जब वह बार-बार के आग्रह के बाद भी भोजन के लिए न उठकर चित्र बनाती रहती थी, तब भक्तिन कभी दही का शरबत अथवा कभी तुलसी की चाय पिलाकर उसे भूख के कष्ट से बचाती थी।

भक्तिन में गजब का सेवा-भाव था। छात्रावास की रोशनी बुझने पर जब लेखिका के परिवार के सदस्य-हिरनी सोना, कुत्ता बसंत, बिल्ली गोधूलि भी-आराम करने लगते थे, तब भी भक्तिन लेखिका के साथ जागती रहती थी। वह उसे कभी पुस्तक देती , कभी स्याही तो कभी फ़ाइल देती थी। भक्तिन लेखिका के जागने से पहले जागती थी तथा लेखिका के बाद सोती थी। बदरी-केदार के पहाड़ी तंग रास्तों पर वह लेखिका से आगे चलती थी , परंतु गाँव की धूलभरी पगडंडी पर उसके पीछे रहती थी। लेखिका भक्तिन को छाया के समान समझती थी। युद्ध के समय लोग डरे हुए थे , उस समय वह बेटी-दामाद के आग्रह पर लेखिका के साथ रहती थी। युद्ध में भारतीय सेना के पलायन की बात सुनकर वह लेखिका को अपने गाँव ले जाना चाहती थी। वहाँ वह लेखिका के लिए हर तरह के प्रबंध करने का आश्वासन देती थी। वह अपनी पूँजी को भी दाँव पर लगाने के लिए तैयार थी। लेखिका का मानना है कि उनके बीच स्वामी-सेवक का संबंध नहीं था।

इसका कारण यह था कि वह उसे इच्छा होने पर भी हटा नहीं सकती थी और भक्तिन चले जाने का आदेश पाकर भी हँसकर टाल रही थी। वह उसे नौकर भी नहीं मानती थी। भक्तिन लेखिका के जीवन को घेरे हुए थी। भक्तिन छात्रावास की बालिकाओं के लिए चाय बना देती थी। वह उन्हें लेखिका के नाश्ते का स्वाद भी लेने देती थी। वह लेखिका के परिचितों व साहित्यिक बंधुओं से भी परिचित थी। वह उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती थी जैसा लेखिका करती थी। वह उन्हें आकार -प्रकार, वेश-भूषा या नाम के अपभ्रंश द्वारा जानती थी। कवियों के प्रति उसके मन में विशेष आदर नहीं था , परंतु दूसरे के दुख से वह कातर हो उठती थी। किसी विद्यार्थी के जेल जाने पर वह व्यथित हो उठती थी। वह कारागार से डरती थी, परंतु लेखिका के जेल जाने पर खुद भी उनके साथ चलने का हठ किया। अपनी मालकिन के साथ जेल जाने के हक के लिए वह बड़े लाट तक से लड़ने को तैयार थी। भक्तिन का अंतिम परिच्छेद चालू है लेकिन लेखिका इसे पूरा नहीं करना चाहती।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 भक्तिन का वास्तविक नाम क्या था?

(ङ) लक्ष्मी

(च) भक्तिन

(छ) लछमिन

(ज) कोकिला

प्र-2 भक्तिन किससे डरती थी?

(क) लेखिका से

(ख) रसोईघर से

(ग) बड़े साहब से

(घ) कारागार से

प्र-3 खोटे सिक्के की टकसाल किसे कहा गया है ?

(क) लेखिका को

(ख) लछमिन को

(ग) सेविका को

(घ) भक्तिन के पति को

प्र-4 लेखिका ने लछमिन का नाम भक्तिन क्या देख कर रखा?

(क) गले में पड़ी कंठी माला देखकर

(ख) उसकी वृद्धावस्था देखकर

(ग) उसका सेवा-भाव देखकर

(घ) धर्म के प्रति उसकी आस्था देखकर

प्र-5 लेखिका भक्तिन की कहानी को अधूरी क्यों छोड़ती है ?

(क) भक्तिन के महत्त्व को बनाए रखने के लिए

(ख) भक्तिन के झूठ बोलने को देखकर

(ग) पढ़े-लिखों की गुरु बन जाने के कारण

(घ) लेखिका को हमेशा मदद मिले

उत्तर-1 (ग) लछमिन 2 (घ) कारागार से 3 (ख) लछमिन को 4 (क) गले में पड़ी कंठी माला देखकर 5 (क) भक्तिन के महत्त्व को बनाए रखने के लिए

प्रकरण- बाजार दर्शन

-जैनेन्द्र कुमार

लेखक परिचय- प्रसिद्ध उपन्यासकार जैनेन्द्र कुमार का जन्म 1905 ई० में अलीगढ़ में हुआ। बचपन में ही इनके पिताजी का देहांत हो गया तथा इनके मामा ने ही इनका पालन-पोषण किया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा हस्तिनापुर के गुरुकुल में हुई। इन्होंने उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस में ग्रहण की। 1921 ई० में गांधी जी के प्रभाव के कारण इन्होंने पढ़ाई छोड़कर असहयोग आंदोलन में भाग लिया। इनकी साहित्य-सेवा के कारण 1984 ई० में

इन्हें 'भारत-भारती' सम्मान मिला। भारत सरकार ने इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। इनका देहांत सन 1990 में दिल्ली में हुआ।

रचनाएँ – इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं।

उपन्यास – परख, अनाम स्वामी , सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवदर्धन, मुक्तिबोध।
कहानी – संग्रह-वातायन, एक रात , दो चिड़ियाँ फाँसी , नीलम देश की राजकन्या , पाजेब।
निबंध-संग्रह – प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, सोच-विचार।

साहित्यिक विशेषताएँ – हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद के बाद सबसे महत्वपूर्ण कथाकार के रूप में जैनेंद्र कुमार प्रतिष्ठित हुए। इन्होंने अपने उपन्यासों व कहानियों के माध्यम से हिंदी में एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा-धारा का प्रवर्तन किया। जैनेंद्र की पहचान अत्यंत गंभीर चिंतक के रूप में रही। इन्होंने सरल व अनौपचारिक शैली में समाज , राजनीति, अर्थनीति एवं दर्शन से संबंधित गहन प्रश्नों को सुलझाने की कोशिश की है। ये गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित थे। इन्होंने गांधीवादी चिंतन दृष्टि का सरल व सहज उपयोग जीवन-जगत से जुड़े प्रश्नों के संदर्भ में किया है। ऐसा उपयोग अन्यत्र दुर्लभ है। इन्होंने गांधीवादी सिद्धांतों जैसे सत्य, अहिंसा, आत्मसमर्पण आदि-को अपनी रचनाओं में मुखर रूप से अभिव्यक्त किया है।
भाषा-शैली- जैनेंद्र जी की भाषा-शैली अत्यंत सरल , सहज व भावानुकूल है जिसमें तत्सम शब्दों का प्रयोग बहुलता से हुआ है परंतु तद्भव और उर्दू-फ़ारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग अत्यंत सहजता से हुआ है।
प्रतिपादय – 'बाजार दर्शन' निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख आज भी उपभोक्तावाद व बाजारवाद को समझाने में बेजोड़ है। जैनेंद्र जी अपने परिचितों , मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करते हैं कि बाजार की जादुई ताकत मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाजार का उपयोग करें तो उसका लाभ उठा सकते हैं। इसके विपरीत, बाजार की चमक-दमक में फँसने के बाद हम असंतोष , तृष्णा और ईष्या से घायल होकर सदा के लिए बेकार हो सकते हैं। लेखक ने कहीं दार्शनिक अंदाज में तो कहीं किस्सागोई की तरह अपनी बात समझाने की कोशिश की है। इस क्रम में इन्होंने केवल बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताया है।

सारांश- लेखक अपने मित्र की कहानी बताता है कि एक बार वे बाजार में मामूली चीज लेने गए, परंतु वापस बंडलों के साथ लौटे। लेखक के पूछने पर उन्होंने पत्नी को दोषी बताया। लेखक के अनुसार, पुराने समय से पति इस विषय पर पत्नी की ओट लेते हैं। इसमें मनीबैग अर्थात पैसे की गरमी भी विशेष भूमिका अदा करता है। पैसा पावर है , परंतु उसे प्रदर्शित करने के लिए बैंक-बैलेंस , मकान-कोठी आदि इकट्ठा किया जाता है। पैसे की पर्चेजिंग पावर

के प्रयोग से पावर का रस मिलता है। लोग संयमी भी होते हैं। वे पैसे को जोड़ते रहते हैं तथा पैसे के जुड़ा होने पर स्वयं को गर्वीला महसूस करते हैं। मित्र ने बताया कि सारा पैसा खर्च हो गया। मित्र की अधिकतर खरीद पर्चेजिंग पावर के अनुपात से आई थी, न कि जरूरत के हिसाब से । लेखक कहता है कि फालतू चीज की खरीद का प्रमुख कारण बाजार का आकर्षण है। मित्र ने इसे शैतान का जाल बताया है। यह आकर्षण ऐसा होता है कि बेहया ही हो जो इसमें नहीं फँसता। बाजार अपने रूपजाल में सबको उलझाता है। इसके आमंत्रण में आग्रह नहीं है। ऊँचे बाजार का आमंत्रण मूक होता है। यह इच्छा जगाता है। हर आदमी को चीज की कमी महसूस होती है। चाह और अभाव मनुष्य को पागल कर देता है। असंतोष , तृष्णा व ईष्र्या से मनुष्य सदा के लिए बेकार हो जाता है।

लेखक का दूसरा मित्र दोपहर से पहले बाजार गया तथा शाम को खाली हाथ वापस आ गया। पूछने पर बताया कि बाजार में सब कुछ लेने योग्य था, परंतु कुछ भी न ले पाया। एक वस्तु लेने का मतलब था, दूसरी छोड़ देना। अगर अपनी चाह का पता नहीं तो सब ओर की चाह हमें घेर लेती है। ऐसे में कोई परिणाम नहीं होता। बाजार में रूप का जादू है। यह तभी असर करता है जब जेब भरी हो तथा मन खाली हो। यह मन व जेब के खाली होने पर भी असर करता है। खाली मन को बाजार की चीजें निमंत्रण देती हैं। सब चीजें खरीदने का मन करता है।

जादू उतरते ही फैंसी चीजें आराम नहीं , खलल ही डालती प्रतीत होती हैं। इससे स्वाभिमान व अभिमान बढ़ता है। जादू से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि बाजार जाते समय मन खाली न रखो। मन में लक्ष्य हो तो बाजार आनंद देगा। वह आपसे कृतार्थ होगा। बाजार की असली कृतार्थता है-आवश्यकता के समय काम आना। मन खाली रखने का मतलब मन बंद नहीं करना है। शून्य होने का अधिकार बस परमात्मा का है जो सनातन भाव से संपूर्ण है। मनुष्य अपूर्ण है। मनुष्य इच्छाओं का निरोध नहीं कर सकता। यह लोभ को जीतना नहीं है, बल्कि लोभ की जीत है। मन को बलात बंद करना हठयोग है। वास्तव में मनुष्य को अपनी अपूर्णता स्वीकार कर लेनी चाहिए। सच्चा कर्म सदा इस अपूर्णता की स्वीकृति के साथ होता है। अत: मन की भी सुननी चाहिए क्योंकि वह भी उद्देश्यपूर्ण है। मनमानेपन को छूट नहीं देनी चाहिए।

लेखक के पड़ोस में भगत जी रहते थे। वे लंबे समय से चूरन बेच रहे थे। चूरन उनका सरनाम था। वे प्रतिदिन छह आने पैसे से अधिक नहीं कमाते थे। वे अपना चूरन थोक व्यापारी को नहीं देते थे और न ही पेशगी ऑर्डर लेते थे। छह आने पूरे होने पर वे बचा चूरन बच्चों को मुफ़्त बाँट देते थे। वे सदा स्वस्थ रहते थे।उन पर बाजार का जादू नहीं चल सकता था। वे निरक्षर थे। बड़ी-बड़ी बातें जानते नहीं थे। उनका मन अडिग रहता था। पैसा भीख माँगता है कि मुझे लो। वह निर्मम व्यक्ति पैसे को अपने आहत गर्व में बिलखता ही छोड़ देता है। पैसे में व्यंग्य शक्ति होती है। पैदल व्यक्ति के पास से धूल उड़ाती मोटर चली जाए तो व्यक्ति परेशान हो उठता है। वह अपने जन्म तक को कोसता है , परंतु यह व्यंग्य चूरन

वाले व्यक्ति पर कोई असर नहीं करता। लेखक ऐसे बल के विषय में कहता है कि यह कुछ अपर जाति का तत्व है। कुछ लोग इसे आत्मिक, धार्मिक व नैतिक कहते हैं।

लेखक कहता है कि जहाँ तृष्णा है , बटोर रखने की स्पृहा है , वहाँ उस बल का बीज नहीं है। संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है। वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है। एक दिन बाजार के चौक में भगत जी व लेखक की राम-राम हुई। उनकी आँखें खुली थीं। वे सबसे मिलकर बात करते हुए जा रहे थे। लेकिन वे भौचक्के नहीं थे और ना ही वे किसी प्रकार से लाचार थे। भाँति-भाँति के बढ़िया माल से चौक भरा था किंतु उनको मात्र अपनी जरूरत की चीज से मतलब था। वे रास्ते के फैंसी स्टोरों को छोड़कर पंसारी की दुकान से अपने काम की चीजें लेकर चल पड़ते हैं। अब उन्हें बाजार शून्य लगता है। फिर चाँदनी बिछी रहती हो या बाजार के आकर्षण बुलाते रहें, वे उसका कल्याण ही चाहते हैं।

लेखक का मानना है कि बाजार को सार्थकता वह मनुष्य देता है जो अपनी जरूरत को पहचानता है। जो केवल पर्चेजिंग पॉवर के बल पर बाजार को व्यंग्य दे जाते हैं , वे न तो बाजार से लाभ उठा सकते हैं और न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। ये कपट को बढ़ाते हैं जिससे सद्भाव घटता है। सद्भाव नष्ट होने से ग्राहक और बेचक रह जाते हैं। वे एक-दूसरे को ठगने की घात में रहते हैं। ऐसे बाजारों में व्यापार नहीं, शोषण होता है। कपट सफल हो जाता है तथा बाजार मानवता के लिए विडंबना है और जो ऐसे बाजार का पोषण करता है जो उसका शास्त्र बना हुआ है , वह अर्थशास्त्र सरासर औधा है, वह मायावी शास्त्र है, वह अर्थशास्त्र अनीतिशास्त्र है।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 लेखिका भक्तिन की कहानी को अधूरी क्यों छोड़ती है ?

(क) भक्तिन के महत्त्व को बनाए रखने के लिए

(ख) भक्तिन के झूठ बोलने को देखकर

(ग) पढ़े-लिखों की गुरु बन जाने के कारण

(घ) लेखिका को हमेशा मदद मिले

प्रकरण- काले मेघा पानी दे

-धर्मवीर भारती

लेखक परिचय- धर्मवीर भारती का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले में सन 1926 में हुआ था। इनके बचपन का कुछ समय आजमगढ़ व मऊनाथ भंजन में बीता। इनके पिता की मृत्यु के बाद परिवार को भयानक आर्थिक संकट से गुजरना पड़ा। इनका भरण-पोषण इनके मामा अभयकृष्ण ने किया। 1942 ई० में इन्होंने इंटर कॉलेज कायस्थ पाठशाला से इंटर - मीडिएट किया। 1943 ई० में इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से बी०ए० पास की तथा 1947 में (इन्होंने) एम०ए० (हिंदी) उत्तीर्ण की। तत्पश्चात इन्होंने डॉ० धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में 'सिद्ध-साहित्य' पर शोधकार्य किया। इन्होंने 'अभ्युदय' व 'संगम' पत्र में कार्य किया। बाद में ये प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक के पद पर कार्य करने लगे। 1960 ई० में नौकरी छोड़कर 'धर्मयुग' पत्रिका का संपादन किया। 'दूसरा सप्तक' में इनका स्थान विशिष्ट था। इन्होंने कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, पत्रकार तथा आलोचक के रूप में हिंदी जगत को अमूल्य रचनाएँ दीं। इन्हें पद्मश्री , व्यास सम्मान व अन्य अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया। इन्होंने इंग्लैंड, जर्मनी, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि देशों की यात्राएँ कीं। 1997 ई० में इनका देहांत हो गया।

रचनाएँ– इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं –

कविता-संग्रह – कनुप्रिया, सात-गीत वर्ष, ठडा लोहा। कहानी-संग्रह-बंद गली का आखिरी मकान, मुर्दो का गाँव, चाँद और टूटे हुए लोग। उपन्यास-सूरज का सातवाँ घोड़ा, गुनाहों का देवता

गीतिनाट्य– अंधायुग।

निबंध-संग्रह– पश्यंती, कहनी-अनकहनी, ठेले पर हिमालय।

आलोचना – प्रगतिवाद : एक समीक्षा, मानव-मूल्य और साहित्य।

एकांकी-संग्रह – नदी प्यासी थी।

साहित्यिक विशेषताएँ – धर्मवीर भारती के लेखन की खासियत यह है कि हर उम्र और हर वर्ग के पाठकों के बीच इनकी अलग-अलग रचनाएँ लोकप्रिय हैं। ये मूल रूप से व्यक्ति स्वातंत्र्य, मानवीय संबंध एवं रोमानी चेतना के रचनाकार हैं। तमाम सामाजिकता व उत्तरदायित्वों के बावजूद इनकी रचनाओं में व्यक्ति की स्वतंत्रता ही सर्वोपरि है। इनकी रचनाओं में रुमानियत संगीत में लय की तरह मौजूद है। इनकी कविताएँ, कहानियाँ उपन्यास, निबंध, गीतिनाट्य व रिपोर्ताज हिंदी साहित्य की उपलब्धियाँ हैं।

भाषा-शैली – भारती जी ने निबंध और रिपोर्ताज भी लिखे हैं। इनके गद्य लेखन में सहजता व आत्मीयता है। बड़ी-से-बड़ी बात को बातचीत की शैली में कहते हैं और सीधे पाठकों के मन को छू लेते हैं। इन्होंने हिंदी साप्ताहिक पत्रिका , धर्मयुग, के संपादक रहते हुए हिंदी पत्रकारिता

को सजा-सँवारकर गंभीर पत्रकारिता का एक मानक बनाया। वस्तुत: धर्मवीर भारती का स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद के साहित्यकारों में प्रमुख स्थान है।

प्रतिपादय- 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण में लोक-प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण किया गया है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास का अपना सामर्थ्य। इनकी सार्थकता के विषय में शिक्षित वर्ग असमंजस में है। लेखक ने इसी दुविधा को लेकर पानी के संदर्भ में प्रसंग रचा है। आषाढ़ का पहला पखवाड़ा बीत चुका है। ऐसे में खेती व अन्य कार्यों के लिए पानी न हो तो जीवन चुनौतियों का घर बन जाता है। यदि विज्ञान इन चुनौतियों का निराकरण नहीं कर पाता तो उत्सवधर्मी भारतीय समाज किसी-न-किसी जुगाड़ में लग जाता है, प्रपंच रचता है और हर कीमत पर जीवित रहने के लिए अशिक्षा तथा बेबसी के भीतर से उपाय और काट की खोज करता है।

सारांश -लेखक बताता है कि जब वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते लोगों की हालत खराब हो जाती है तब गाँवों में नंग-धडंग किशोर शोर करते हुए कीचड़ में लोटते हुए गलियों में घूमते हैं। ये दस-बारह वर्ष की आयु के होते हैं तथा सिर्फ़ जाँघिया या लंगोटी पहनकर 'गंगा मैया की जय' बोलकर गलियों में चल पड़ते हैं। जयकारा सुनते ही स्त्रियाँ व लड़कियाँ छज्जे व बारजों से झाँकने लगती हैं। इस मंडली को इंदर सेना या मेढक-मंडली कहते हैं। ये पुकार लगाते हैं-

काले मेघा पानी दे, पानी दे गुड़धानी दे, गगरी फूटी बैल पियासा, काले मेधा पानी दे।

जब यह मंडली किसी घर के सामने रुककर 'पानी' की पुकार लगाती थी तो घरों में सहेजकर रखे पानी से इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था। ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते तथा कीचड़ में लथपथ हो जाते। यह वह समय होता था जब हर जगह लोग गरमी में भुनकर त्राहि-त्राहि करने लगते थे ; कुएँ सूखने लगते थे ; नलों में बहुत कम पानी आता था , खेतों की मिट्टी में पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती थी। लू के कारण व्यक्ति बेहोश होने लगते थे। पशु पानी की कमी से मरने लगते थे , लेकिन बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं होता था। जब पूजा-पाठ आदि विफल हो जाती थी तो इंदर सेना अंतिम उपाय के तौर पर निकलती थी और इंद्र देवता से पानी की माँग करती थी। लेखक को यह समझ में नहीं आता था कि पानी की कमी के बावजूद लोग घरों में कठिनाई से इकट्ठा किए पानी को इन पर क्यों फेंकते थे। इस प्रकार के अंधविश्वासों से देश को बहुत नुकसान होता है। अगर यह सेना इंद्र की है तो वह खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं माँग लेती ? ऐसे पाखंडों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए तथा उनके गुलाम बन गए।

लेखक स्वयं मेढक-मंडली वालों की उमर का था। वह आर्यसमाजी था तथा कुमार-सुधार सभा का उपमंत्री था। उसमें समाजसुधार का जोश ज्यादा था। उसे सबसे ज्यादा मुश्किल अपनी जीजी से थी जो उम्र में उसकी माँ से बड़ी थीं। वे सभी रीति-रिवाजों , तीज-त्योहारों, पूजा-अनुष्ठानों को लेखक के हाथों पूरा करवाती थीं। जिन अंधविश्वासों को लेखक समाप्त करना चाहता था। वे ये सब कार्य लेखक को पुण्य मिलने के लिए करवाती थीं।

जीजी लेखक से इंदर सेना पर पानी फेंकवाने का काम करवाना चाहती थीं। उसने साफ़ मना कर दिया। जीजी ने काँपते हाथों व डगमगाते पाँवों से इंदर सेना पर पानी फेंका। लेखक जीजी से मुँह फुलाए रहा। शाम को उसने जीजी की दी हुई लड्डू-मठरी भी नहीं खाई। पहले उन्होंने गुस्सा दिखाया, फिर उसे गोद में लेकर समझाया। उन्होंने कहा कि यह अंधविश्वास नहीं है।

यदि हम पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे। यह पानी की बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य है। दान में देने पर ही इच्छित वस्तु मिलती है। ऋषियों ने दान को महान बताया है। बिना त्याग के दान नहीं होता। करोड़पति दो-चार रुपये दान में दे दे तो वह त्याग नहीं होता। त्याग वह है जो अपनी जरूरत की चीज को जनकल्याण के लिए दे। ऐसे ही दान का फल मिलता है। लेखक जीजी के तकों के आगे पस्त हो गया। फिर भी वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। जीजी ने फिर समझाया कि तू बहुत पढ़ गया है। वह अभी भी अनपढ़ है। किसान भी तीस-चालीस मन गेहूँ उगाने के लिए पाँच-छह सेर अच्छा गेहूँ बोता है। इसी तरह हम अपने घर का पानी इन पर फेंककर बुवाई करते हैं। इसी से शहर , कस्बा, गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं , फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं।

ऋषि-मुनियों ने भी यह कहा है कि पहले खुद दो , तभी देवता चौगुना करके लौटाएँगे। यह आदमी का आचरण है जिससे सबका आचरण बनता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' सच है। गाँधी जी महाराज भी यही कहते हैं। लेखक कहता है कि यह बात पचास साल पुरानी होने के बावजूद आज भी उसके मन पर दर्ज है। अनेक संदर्भों में ये बातें मन को कचोटती हैं कि हम देश के लिए क्या करते हैं? हर क्षेत्र में माँगें बड़ी-बड़ी हैं, पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। आज स्वार्थ एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम भ्रष्टाचार की बातें करते हैं , परंतु खुद अपनी जाँच नहीं करते। काले मेघ उमड़ते हैं , पानी बरसता है, परंतु गगरी फूटी की फूटी रह जाती है। बैल प्यासे ही रह जाते हैं। यह स्थिति कब बदलेगी, यह कोई नहीं जानता?

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 लोग बच्चों की टोली को इन्दर सेना या फिर ----------कहते थे?

(क) गायक मंडली

(ख) सेवक मंडली

(ग) मेढ़क मंडली

(घ) वादक मंडली

प्र-2 लेखक बच्चों की टोली में क्यों नहीं शामिल था?

(क) लेखक इसे अन्धविश्वास मानता था

(ख) लेखक को कीचड़ पसंद नहीं था

(ग) इस टोली को लोग गालियाँ देते थे

(घ) जीजी उसे मना करती थीं

प्र-3 लेखक जीजी की हर बात मानता था क्योंकि-

(क) जीजी उसे बहुत मानती थीं और उनके प्राण लेखक में बसते थे

(ख) जीजी अन्धविश्वासी थीं

(ग) जीजी उसे खाने के लिए लड्डू-मठरी देती थीं

(घ) जीजी उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनाया करती थीं

प्र-4 जीजी ने अपनी बात कौन-सा उदाहरण देकर सही साबित किया?

(क) किसान और उसकी खेती का

(ख) इंद्र और उसकी सेना का

(ग) बच्चों की टोली का

(घ) पूज-पाठ और धर्म-कर्म का

प्र-5 अंत में लेखक को जीजी की बात कैसी लगी?

(क) फालतू और अतार्किक

(ख) अन्धविश्वास से पूर्ण

(ग) सही और तार्किक

(घ) किसान के पक्ष में

उत्तर-1 (ग) मेढ़क मंडली 2 (क) लेखक इसे अन्धविश्वास मानता था 3 (क) जीजी उसे बहुत मानती थीं और उनके प्राण लेखक में बसते थे 4 (क) किसान और उसकी खेती का 5 (ग) सही और तार्किक

प्रकरण - सिल्वर वैडिंग

-मनोहर श्याम जोशी

जीवन परिचय – मनोहर श्याम जोशी का जन्म सन 1935 में कुमाऊँ में हुआ था। ये लखनऊ विश्वविद्यालय से विज्ञान स्नातक थे। इन्होंने 'दिनमान' पत्रिका में सहायक संपादक और 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' में संपादक के रूप में काम किया। सन 1984 में भारतीय दूरदर्शन के प्रथम धारावाहिक 'हम लोग' के लिए कथा-पटकथा लेखन शुरू किया। ये हिंदी के प्रसिद्ध पत्रकार और टेलीविजन के धारावाहिक लेखक थे। लेखन के लिए इन्हें सन 2005 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन 2006 में इनका दिल्ली में देहांत हो गया।

रचनाएँ– मनोहर श्याम जोशी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं –

कहानी– संग्रह-कुरु कुरु स्वाहा, कसप, हरिया हरक्यूलीज की हैरानी, हमजाद, क्याप।

व्यंग्य– संग्रह-एक दुर्लभ व्यक्तित्व, कैसे किस्सागो, मंदिर घाट की पौड़ियाँ, टा-टा प्रोफ़ेसर षष्ठी

वल्लभ पंत, नेता जी कहिन, इस देश का प्यारों क्या कहना।

साक्षात्कार लेख-संग्रह – बातों-बातों में, इक्कीसवीं सदी।

संस्मरण-संग्रह – लखनऊ मेरा लखनऊ, पश्चिमी जर्मनी पर एक उड़ती नजर।

पाठ का सारांश

यह लंबी कहानी लेखक की अन्य रचनाओं से कुछ अलग दिखाई देती है। आधुनिकता की ओर बढ़ता हमारा समाज एक ओर कई नई उपलब्धियों को समेटे हुए है तो दूसरी ओर मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने वाले मूल्य कहीं घिसते चले गए हैं। **जो हु आ होगा** और **समहाउ इंप्रापर** के दो जुमले इस कहानी के बीज वाक्य हैं। **जो हुआ होगा** में यथास्थितिवाद यानी ज्यों-का-त्यों स्वीकार लेने का भाव है तो **समहाउ इंप्रापर** में एक अनिर्णय की स्थिति भी है। ये दोनों ही भाव इस कहानी के मुख्य चरित्र यशोधर बाबू के भीतर के द्वंद्व हैं। वे इन स्थितियों का जिम्मेदार भी किसी व्यक्ति को नहीं ठहराते। वे अनिर्णय की स्थिति में हैं।

दफ़्तर में सेक्शन अफ़सर यशोधर पंत ने जब आखिरी फ़ाइल का काम पूरा किया तो दफ़्तर की घड़ी में पाँच बजकर पच्चीस मिनट हुए थे। वे अपनी घड़ी सुबह-शाम रेडियो समाचारों से मिलाते हैं, इसलिए वे दफ़्तर की घड़ी को सुस्त बताते हैं। इनके कारण अधीनस्थ को भी पाँच बजे के बाद भी रुकना पड़ता है। वापसी के समय वे किशन दा की उस परंपरा का निर्वाह करते हैं जिसमें जूनियरों से हल्का मजाक किया जाता है। दफ़्तर में नए असिस्टेंट चड्ढा की चौड़ी मोहरी वाली पतलून और ऊँची एड़ी वाले जूते पंत जी को 'समहाउ इंप्रापर' मालूम होते हैं। उसने थोड़ी बदतमीजीपूर्ण व्यवहार करते हुए पंत जी की चूनेदानी का हाल पूछा। पंत जी ने उसे जवाब दिया। फिर चड्ढा ने पंत जी की कलाई थाम ली और कहा कि यह पुरानी है। अब तो डिजिटल जापानी घड़ी ले लो। सस्ती मिल जाती है। पंत जी उसे बताते हैं कि यह घड़ी उन्हें शादी में मिली है। यह घड़ी भी उनकी तरह ही पुरानी हो गई है। अभी तक यह सही समय बता रही है।

इस तरह जवाब देने के बाद एक हाथ बढ़ाने की परंपरा पंत जी ने अल्मोड़ा के रेम्जे स्कूल में सीखी थी। ऐसी परंपरा किशन दा के क्वार्टर में भी थी जहाँ यशोधर को शरण मिली थी। किशन दा कुंआरे थे और पहाड़ी लड़कों को आश्रय देते थे। पंत जी जब दिल्ली आए थे तो उनकी उम्र सरकारी नौकरी के लिए कम थी। तब किशन दा ने उन्हें मैस का रसोइया बनाकर रख लिया। उन्होंने यशोधर को कपड़े बनवाने व घर पैसा भेजने के लिए पचास रुपये दिए। इस तरह वे स्मृतियों में खो गए। तभी चड्ढा की आवाज से वे जाग्रत हुए और मेनन द्वारा शादी के संबंध में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहने लगे 'नाव लेट मी सी, आई वॉज़ मैरिड ऑन सिक्स्थ फरवरी नाइंटीन फ़ोर्टी सेवन।'

मेनन ने उन्हें 'सिल्वर वैडिंग की बधाई दी। यशोधर खुश होते हुए झेपे और झंपते हुए खुश हुए। फिर भी वे इन सब बातों को अंग्रेजों के चोंचले बताते हैं , किंतु चड्ढा उनसे चाय-

मट्ठी व लड्डू की माँग करता है। यशोधर जी दस रुपये का नोट चाय के लिए देते हैं , परंतु उन्हें यह 'समहाउ इंप्रॉपर फाइंड' लगता है। अत: सारे सेक्शन के आग्रह पर भी वे चाय पार्टी में शरीक नहीं होते है। चडढ़ा के जोर देने पर वे बीस रुपये और दे देते हैं , किंतु आयोजन में सम्मिलित नहीं होते। उनके साथ बैठकर चाय-पानी और गप्प-गप्पाष्टक में वक्त बरबाद करना उनकी परंपरा के विरुद्ध है।

यशोधर बाबू ने इधर रोज बिड़ला मंदिर जाने और उसके उद्यान में बैठकर प्रवचन सुनने या स्वयं ही प्रभु का ध्यान लगाने की नयी रीति अपनाई है। यह बात उनकी पत्नी व बच्चों को अखरती थी। क्योंकि वे बुजुर्ग नहीं थे। बिड़ला मंदिर से उठकर वे पहाड़गंज जाते और घर के लिए साग-सब्जी लाते। इसी समय वे मिलने वालों से मिलते थे। घर पर वे आठ बजे से पहले नहीं पहुँचते थे।

आज यशोधर जब बिड़ला मंदिर जा रहे थे तो उनकी नजर किशन दा के तीन बेडरूम वाले क्वार्टर पर पड़ी। अब वहाँ छह-मंजिला मकान बन रहा है। उन्हें बहुमंजिली इमारतें अच्छी नहीं लग रही थीं। यही कारण है कि उन्हें उनके पद के अनुकूल एंड्रयूजगंज, लक्ष्मीबाई नगर पर डी-2 टाइप अच्छे क्वार्टर मिलने का ऑफ़र भी स्वीकार्य नहीं है और वे यहीं बसे रहना चाहते हैं। जब उनका क्वार्टर टूटने लगा तब उन्होंने शेष क्वार्टर में से एक अपने नाम अलाट करवा लिया। वे किशन दा की स्मृति के लिए यहीं रहना चाहते थे।

पिछले कई वर्षों से यशोधर बाबू का अपनी पत्नी व बच्चों से हर छोटी-बड़ी बात पर मतभेद होने लगा है। इसी वजह से उन्हें घर जल्दी लौटना अच्छा नहीं लगता था। उनका बड़ा लड़का एक प्रमुख विज्ञापन संस्था में नौकरी पर लग गया था। यशोधर बाबू को यह भी 'समहाउ' लगता था क्योंकि यह कंपनी शुरू में ही डेढ़ हजार रुपये प्रतिमाह वेतन देती थी। उन्हें कुछ गड़बड़ लगती थी। उनका दूसरा बेटा आई०ए०एस० की तैयारी कर रहा था। उसका एलाइड सर्विसेज में न जाना भी उनको अच्छा नहीं लगता। उनका तीसरा बेटा स्कॉलरशिप लेकर अमेरिका चला गया। उनकी एकमात्र बेटी शादी से इनकार करती है। साथ ही वह डॉक्टरी की उच्चतम शिक्षा के लिए अमेरिका जाने की धमकी भी देती है। वे अपने बच्चों की तरक्की से खुश हैं, परंतु उनके साथ सामंजस्य नहीं बैठा पाते।

यशोधर की पत्नी संस्कारों से आधुनिक नहीं है , परंतु बच्चों के दबाव से वह मॉडर्न बन गई है। शादी के समय भी उसे संयुक्त परिवार का दबाव झेलना पड़ा था। यशोधर ने उसे आचार-व्यवहार के बंधनों में रखा। अब वह बच्चों का पक्ष लेती है तथा खुद भी अपनी सहूलियत के हिसाब से यशोधर की बातें मानने की बात कहती है। यशोधर उसे 'शालयल बुढ़िया', 'चटाई का लहँगा ' या 'बूढ़ी मुँह मुँहासे , लोग करें तमासे ' कहकर उसके विद्रोह का मजाक उड़ाते हैं, परंतु वे खुद ही तमाशा बनकर रह गए। किशन दा के क्वार्टर के सामने खड़े होकर वे सोचते हैं कि वे शादी न करके पूरा जीवन समाज को समर्पित कर देते तो अच्छा होता।

यशोधर ने सोचा कि किशन दा का बुढ़ापा कभी सुखी नहीं रहा। उनके तमाम साथियों ने मकान ले लिए। रिटायरमेंट के बाद किसी ने भी उन्हें अपने पास रहने की पेशकश नहीं की। स्वयं यशोधर भी यह पेशकश नहीं कर पाए क्योंकि वे शादीशुदा थे। किशन दा कुछ समय किराये के मकान में रहे और फिर अपने गाँव लौट गए। सालभर बाद उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें कोई बीमारी भी नहीं हुई थी। यशोधर को इसका कारण भी पता नहीं। वे किशन दा की यह बात याद रखते थे कि जिम्मेदारी पड़ने पर हर व्यक्ति समझदार हो जाता है। वे मन-ही-मन यह स्वीकार करते थे कि दुनियादारी में उनके बीवी-बच्चे अधिक सुलझे हुए हैं, परंतु वे अपने सिद्धांत नहीं छोड़ सकते। वे मकान भी नहीं लेंगे। किशन दा कहते थे कि मूरख लोग मकान बनाते हैं, सयाने उनमें रहते हैं। रिटायरमेंट होने पर गाँव के पुश्तैनी घर चले जाओ। वे इस बात को आज भी सही मानते हैं। उन्हें पता है कि गाँव का पुश्तैनी घर टूट-फूट चुका है तथा उस पर अनेक लोगों का हक है। उन्हें लगता है कि रिटायरमेंट से पहले कोई लड़का सरकारी नौकरी में आ जाएगा और क्वार्टर उनके पास रहेगा। ऐसा न होने पर क्या होगा, इसका जवाब उनके पास नहीं होता।

बिड़ला मंदिर के प्रवचनों में उनका मन नहीं लगा। उम्र ढलने के साथ किशन दा की तरह रोज मंदिर जाने, संध्या-पूजा करने और गीता-प्रेस गोरखपुर की किताबें पढ़ने का यत्न करने लगे। मन के विरोध को भी वे अपने तर्कों से खत्म कर देते हैं। गीता के पाठ में 'जनार्दन' शब्द सुनने से उन्हें अपने जीजा जनार्दन जोशी की याद आई। उनकी चिट्ठी से पता चला कि वे बीमार है। यशोधर बाबू अहमदाबाद जाना चाहते हैं , परंतु पत्नी व बच्चे उनका विरोध करते हैं। यशोधर खुशी-गम के हर मौके पर रिश्तेदारों के यहाँ जाना जरूरी समझते हैं तथा बच्चों को भी वैसा बनाने की इच्छा रखते हैं। किंतु उस दिन हद हो गई जिस दिन कमाऊ बेटे ने यह कह दिया कि "आपको बुआ को भेजने के लिए पैसे मैं तो नहीं दूँगा।"

यशोधर की पत्नी का कहना है कि उन्होंने बचपन में कुछ नहीं देखा। माँ के मरने के बाद विधवा बुआ ने यशोधर का पालन-पोषण किया। मैट्रिक पास करके दिल्ली में किशन दा के पास रहे। वे भी कुंवारे थे तथा उन्हें भी कुछ नहीं पता था। अत: वे नए परिवर्तनों से वाकिफ़ नहीं थे। उन्हें धार्मिक प्रवचन सुनते हुए भी पारिवारिक चिंतन में डूबा रहना अच्छा नहीं लगा। ध्यान लगाने का कार्य रिटायरमेंट के बाद ठीक रहता है। इस तरह की तमाम बातें यशोधर बाबू पैदाइशी बुजुर्गवार है, क्यों में औरउ के हीलबे में कहा कते हैं तथा कहाक्रउ की ही तह ही सी लगनतीस हँसी हँस देते हैं।

जब तक किशन दा दिल्ली में रहे , तब तक यशोधर बाबू ने उनके पट्टशिष्य और उत्साही कार्यकर्ता की भूमिका पूरी निष्ठा से निभाई। उनके जाने के बाद घर में होली गवाना, रामलीला के लिए क्वार्टर का एक कमरा देना , 'जन्यो पुन्यू' के दिन सब कुमाऊँनियों को जनेऊ बदलने के लिए घर बुलाना आदि कार्य वे पत्नी व बच्चों के विरोध के बावजूद करते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि बच्चे उनसे सलाह लें , परंतु बच्चे उन्हें सदैव उपेक्षित करते हैं।

प्रवचन सुनने के बाद यशोधर बाबू सब्जी मंडी गए। वे चाहते थे कि उनके लड़के घर का सामान खुद लाएँ, परंतु उनकी आपस की लड़ाई से उन्होंने इस विषय को उठाना ही बंद कर दिया। बच्चे चाहते थे कि वे इन कामों के लिए नौकर रख लें। यशोधर को यही 'समहाउ इंप्रॉपर' मालूम होता है कि उनका बेटा अपना वेतन उन्हें दे। क्या वह ज्वाइंट एकाउंट नहीं खोल सकता था? उनके ऊपर, वह हर काम अपने पैसे से करने की धौंस देता है। घर में वह तमाम परिवर्तन अपने पैसों से कर रहा है। वह हर चीज पर अपना हक समझता है। सब्जी लेकर वे अपने क्वार्टर पहुँचे। वहाँ एक तख्ती पर लिखा था-वाई०डी० पंत। उन्हें पहले गलत जगह आने का धोखा हुआ। घर के बाहर एक कार थी। कुछ स्कूटर , मोटर-साइकिलें थीं तथा लोग विदा ले-दे रहे थे। बाहर बरामदे में रंगीन कागजों की झालरें व गुब्बारे लटक रहे थे। उन्होंने अपने बेटे को कार में बैठे किसी साहब से हाथ मिलाते देखा। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उन्होंने अपनी पत्नी व बेटी को बरामदे में खड़ा देखा जो कुछ मेमसाबों को विदा कर रही थीं। लड़की जींस व बगैर बाँह का टॉप पहने हुए थी। पत्नी ने होंठों पर लाली व बालों में खिजाब लगाया हुआ था। यशोधर को यह सब 'समहाउ इंप्रापर' लगता था।

यशोधर चुपचाप घर पहुँचे तो बड़े बेटे ने देर से आने का उलाहना दिया। यशोधर ने शर्मीली-सी हँसी हँसते हुए पूछा कि हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है ? यशोधर के दूर के भांजे ने कहा, "जबसे तुम्हारा बेटा डेढ़ हजार महीने कमाने लगा है, तब से।" यशोधर को अपनी सिल्वर बैडिंग की यह पार्टी भी अच्छी नहीं लगी। उन्हें यह मलाल था कि सुबह ऑफ़िस जाते समय तक किसी ने उनसे इस आयोजन की चर्चा नहीं की थी। उनके पुत्र भूषण ने जब अपने मित्रों-सहयोगियों से यशोधर बाबू का परिचय करवाया तो उस समय उन्होंने प्रयास किया कि भले ही वे संस्कारी कुमाऊँनी हैं तथापि विलायती रीति-रिवाज भी अच्छी तरह परिचित होने का एहसास कराएँ। बच्चों के आग्रह पर यशोधर बाबू अपनी शादी की सालगिरह पर केक काटने के स्थान पर जाकर खड़े हो गए। फिर बेटी के कहने पर उन्होंने केक भी काटा, जबकि उन्होंने कहा-'समहाउ आई डोंट लाइक आल दिस।" परंतु उन्होंने केक नहीं खाया क्योंकि इसमें अंडा होता है। अधिक आग्रह पर उन्होंने संध्या न करने का बहाना किया तथा पूजा में चले गए। आज उन्होंने पूजा में देर लगाई ताकि अधिकतर मेहमान चले जाएँ। यहाँ भी उन्हें किशन दा दिखाई दिए। उन्होंने पूछा कि 'जो हुआ होगा' से आप कैसे मर गए? किशन दा कह रहे थे कि भाऊ सभी जन इसी 'जो हुआ होगा' से मरते हैं चाहे वह गृहस्थ हो या ब्रहमचारी, अमीर हो या गरीब। शुरू और आखिर में सब अकेले ही होते हैं।

यशोधर बाबू को लगता है कि किशन दा आज भी उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं और यह बताने में भी कि मेरे बीवी-बच्चे जो कुछ भी कर रहे हैं , उनके विषय में मेरा रवैया क्या होना चाहिए? किशन दा अकेलेपन का राग अलाप रहे थे। उनका मानना था कि यह सब माया है। जो भूषण आज इतना उछल रहा है , वह भी किसी दिन इतना ही अकेला और असहाय अनुभव करेगा, जितना कि आज तू कर रहा है। इस बीच यशोधर की पत्नी ने वहाँ

आकर झिड़कते हुए पूछा कि आज पूजा में ही बैठे रहोगे। मेहमानों के जाने की बात सुनकर वे लाल गमछे में ही बैठक में चले गए। बच्चे इस परंपरा के सख्त खिलाफ़ थे। उनकी बेटी इस बात पर बहुत झल्लाई। टेबल पर रखे प्रेजेंट खोलने की बात कही। भूषण उनको खोलता है कि यह ऊनी ड्रेसिंग गाउन है। सुबह दूध लाने के समय आप फटा हुआ पुलोवर पहनकर चले जाते हैं, वह बुरा लगता है। बेटी पिता का पाजामा-कुर्ता उठा लाई कि इसे पहनकर गाउन पहनें। बच्चों के आग्रह पर वे गाउन पहन लेते हैं। उनकी आँखों की कोर में जरा-सी नमी चमक गई। यह कहना कठिन है कि उनको भूषण की यह बात चुभ गई कि आप इसे पहनकर दूध लेने जाया करें। वह स्वयं दूध लाने की बात नहीं कर रहा।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 सिल्वर वैडिंग पाठ के लेखक हैं-

(क) कुँवर नारायण

(ख) जैनेन्द्र कुमार

(ग) मनोहर श्याम जोशी

(घ) आनंद यादव

प्र-2 सिल्वर वैडिंग पाठ में यशोधर पंत के आदर्श पुरुष हैं-

(क) किशन दा

(ख) चन्द्रदत्त तिवारी

(ग) भूषण

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-3 यशोधर बाबू घर से ऑफिस किस साधन से आया-जाया करते थे?

(क) साइकिल से

(ख) कार से

(ग) स्कूटर से

(घ) पैदल ही

प्र-4 यशोधर बाबू की शादी किस वर्ष हुई थी?

(क) 1947 ई. में

(ख) 1974 ई. में

(ग) 1946 ई. में

(घ) 1973 ई. में

प्र-5 'सिल्वर वैडिंग' पाठ में आये 'गधा पच्चीसी' का क्या मतलब है?

(क) बचपन

(ख) बुढ़ापा

(ग) जवानी

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- 1-(ग) मनोहर श्याम जोशी 2- (क) किशन दा 3- (घ) पैदल ही 4-(क) 1947 ई. में 5- (ग) जवानी

प्रकरण - जूझ

-आनंद यादव

जीवन परिचय-आनंद यादव का जन्म सन 1935 में महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुआ था। इनका पूरा नाम आनंद रतन यादव है। इन्होंने मराठी एवं संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। ये बहुत समय तक पुणे विश्वविद्यालय में मराठी विभाग में कार्यरत रहे। इनकी लगभग पच्चीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्होंने उपन्यास , कविता व समालोचनात्मक विधाओं पर लेखन-कार्य किया है। इनकी 'नटरंग' पुस्तक बहुत चर्चित रही। 'जूझ' उपन्यास पर इन्हें सन 1990 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पाठ का सारांश

यह पाठ लेखक के बहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास अंश का है। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश की मजेदार और विश्वसनीय जीवंत गाथा है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास में निम्न मध्य वर्गीय मराठी कृषक जीवन की अनूठी झाँकी प्रस्तुत हुई है। इस अंश में हर स्थिति में पढ़ने की लालसा लिए धीरे-धीरे साहित्य, संगीत और अन्य विषयों की ओर बढ़ते किशोर के कदमों की आकुल आहट सुनी जा सकती है। लेखक के पिता ने उसे पाठशाला जाने से रोक दिया तथा खेती के काम में लगा दिया। उसका मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था , परंतु वह पिता से कुछ कहने की हिम्मत नहीं रखता था। उसे पिटाई का डर था। उसे विश्वास था कि खेती से कुछ नहीं मिलने वाला क्योंकि क्रमश: इससे मिलनेवाला लाभ घट रहा है। पढ़ने के बाद नौकरी लगने पर उसके पास कुछ पैसे आ जाएँगे। दीवाली के बाद ईख पेरने के लिए कोल्हू चलाया जाता था क्योंकि उसके पिता को सबसे पहले गुड़ बेचना होता था ताकि अधिक कीमत मिल सके। हालाँकि पहले ईख काटने से उसमें रस कम निकलता था। इस वर्ष भी लेखक के पिता ने जल्दी कार्य शुरू किया। अत: ईख पेरने का काम सबसे पहले संपन्न हो गया। एक दिन लेखक धूप में कंडे थाप रही थी और वह बाल्टी में पानी भर-भरकर उसे दे रहा था। अच्छा मौका देखकर लेखक ने माँ से पढ़ाई की बात की माँ ने अपनी लाचारी प्रकट करते हुए कहा कि तेरी पढ़ाई-लिखाई की बात करने पर वह बरहेला सुअर की तरह गुर्राता है। लेखक ने सुझाव दिया कि वह दत्ता जी राव सरकार से उसकी पढ़ाई के बारे में बात करे। माँ तैयार हो गई। वह बच्चे की तड़पन समझती थी।

अत: रात को लेखक की पढ़ाई के संबंध में बात करने के लिए दत्ता जी राव देसाई के पास गई और उनसे सारी बात बताई। उसने यह भी बताया कि दादा सारे दिन बाजार में

रखमाबाई के पास गुजार देता है। वह खेती का काम नहीं करता। उसने बच्चे की पढ़ाई इसलिए बंद कर दी ताकि वह सारे गाँव भर में आजादी के साथ घूमता रहे। यह बात सुनकर देसाई चिढ़ गए। चलते-चलते लेखक ने यह भी कहा कि यदि वह अब भी कक्षा में पढ़ने लगे तो दो महीने में पाँचवीं पास कर लेगा और इस तरह उसका साल बच जाएगा। पहले ही उसका एक साल खराब हो चुका था। राव ने लेखक से कहा कि घर आने पर दादा को मेरे पास भेज देना और घड़ी भर बाद तुम भी आ जाना। माँ-बेटा ने राव को सचेत किया कि हमारे आने की बात उसे मत बताना। राव ने उन्हें निर्भय होकर जाने को कहा। रात को दादा घर पर मालिक दिखाई नहीं दिया। खेत से आ जाने पर इधर भेजना।

यह सुनकर दादा सम्मान की बात समझकर तुरंत चला गया। आधा घंटे बाद लेखक उन्हें खाने के लिए बुलाने चला गया। राव ने लेखक से पूछा कि कौन-सी कक्षा में पढ़ता है रे तू ? लेखक ने बताया कि वह पाँचवीं में था , पर अब स्कूल नहीं जाता क्योंकि दादा ने मना कर दिया। उन्हें खेतों में पानी लगाने वाला चाहिए था। राव ने दादा से पूछा तो उसने लेखक के कथन को स्वीकार कर लिया। देसाई ने दादा को खूब फटकार लगाई और कहा कि तुम्हारा ध्यान खेती में नहीं है। बीवी-बच्चों को खेत में जोतकर खुले साँड़ की तरह घूमता है तथा अपनी मस्ती के लिए लड़के के जीवन की बलि चढ़ा रहा है। उसने लेखक को कहा कि तू सवेरे पाठशाला जा तथा मन लगाकर पढ़। यदि यह मना करे तो मेरे पास आना। मैं तुझे पढ़ाऊँगा। लेखक के पिता ने उस पर गलत आदतों का आरोप लगाया-कंडे बेचना, चारा बेचना, सिनेमा देखना या जुआ खेलना , खेती व घर के काम पर ध्यान न देना आदि। लेखक ने अपने उत्तर से उन्हें संतुष्ट कर दिया।

देसाई ने पूछा कि कभी नापास तो नहीं हुआ। लेखक के मना करने पर उसे पाठशाला जाने का आदेश देकर घर भेज दिया। बाद में उसने रतनाप्पा को समझाया। दादा ने भी पाठशाला भेजने की हामी भर दी। घर आकर दादा ने लेखक से यह वचन ले लिया कि दिन निकलते ही खेत पर जाना और वहीं से पाठशाला पहुँचना। । पाठशाला से छुट्टी होते ही घर में बस्ता रखकर सीधे खेत पर आकर घंटा भर ढोर चराना और खेतों में ज्यादा काम होने पर पाठशाला से गैर-हाजिर रहना होगा। लेखक ने सभी शतें स्वीकार कर लीं। लेखक पाँचवीं कक्षा में जाकर बैठने लगा। कक्षा के दो लड़कों को छोड़कर सभी नए बच्चे थे। वह बाहरी-अपरिचित जैसा एक बेंच के एक सिरे पर कोने में जा बैठा। वह पुरानी किताबों को ही थैले में भर लाया। कक्षा के शरारती लड़के ने उसका मजाक उड़ाया और उसका गमछा छीनकर मास्टर की मेज पर रख दिया। फिर उसे सिर पर लपेटकर मास्टर की नकल उतारनी शुरू की। तभी मास्टर जी आ गए। लेखक ने उसे सब कुछ बता दिया। बीच की छुट्टी में लड़कों ने उसकी धोती खोलने की कोशिश की, परंतु असफल रहे। वे उसे तरह-तरह से परेशान करते रहे। उसका मन उदास हो गया। उसने माँ से नयी टोपी व दो नाड़ी वाली चड्ढी मैलखाऊ रंग की मैंगवा ली। धीरे-धीरे लड़कों से परिचय बढ़ गया। मंत्री नामक मास्टर आए। वे छड़ी का उपयोग नहीं करते थे। वे लड़के की पीठ पर घूसा लगाते थे। शरारती लड़के उनसे बहुत डरते

थे। वे गणित पढ़ाते थे। इस कक्षा में वसंत पाटील नाम का कमजोर शरीर वाला व होशियार लड़का था। वह शांत स्वभाव का था तथा हमेशा पढ़ने में लगा रहता था। मास्टर ने उसे कक्षा मॉनीटर बना दिया था। लेखक भी उसकी तरह पढ़ने में लगा रहा। वह अपनी कापी-किताबों को व्यवस्थित रखने लगा। शीघ्र ही वह गणित में होशियार हो गया। दोनों में दोस्ती हो गई। मास्टर लेखक को 'आनंदा' कहने लगे। अब उसका मन पाठशाला में लगने लगा। न०वा० सौंदलगेकर मास्टर मराठी पढ़ाते थे। पढ़ाते समय वे स्वयं रम जाते थे। सुरीले कंठ , छद व रसिकता के कारण वे कविता बहुत अच्छी पढ़ाते थे। उन्हें मराठी व अंग्रेजी की अनेक कविताएँ याद थीं। वे कविता के साथ ऐसे जुड़े थे कि अभिनय करके भावबोध कराते थे। वे स्वयं भी कविता रचते थे। लेखक उनसे बहुत प्रभावित था। खेत पर पानी लगाते समय या ढोर चराते समय वह मास्टर के अनुसार ही कविताएँ गाता था। वह उन्हीं की तरह अभिनय करता। उसी समय उसे अनुभव हुआ कि अन्य कविताएँ भी इसी तरह पढ़ी जा सकती हैं। लेखक को महसूस हुआ कि पहले जिस काम को करते हुए उसे अकेलापन खटकता था , अब वह समाप्त हो गया। उसे एकांत अच्छा लगने लगा। एकांत के कारण वह ऊँचे स्वर में कविता गा सकता था, नृत्य कर सकता था। उसने कविता गाने की अपनी पद्धति विकसित की। वह अभिनय के साथ गाने लगा तथा अब उसके चेहरे पर कविता के भाव आने लगे। मास्टर को लेखक का गायन अच्छा लगा और उससे छठी-सातवीं कक्षा के बालकों के सामने गवाया। पाठशाला के एक समारोह में भी उससे गवाया। मास्टर स्वयं कविता रचते थे। उनके पास मराठी कवियों के काव्य-संग्रह थे। वे उन कवियों के संस्मरण भी सुनाते थे। इस कारण अब वे कवि उसे 'आदमी' लगने लगे थे।

सौंदलगेकर स्वयं कवि थे। इस कारण लेखक को यह विश्वास हुआ कि कवि भी उसकी तरह ही हाड़-मांस का व क्रोध-लोभ का मनुष्य होता है। लेखक को लगा कि वह स्वयं भी कविता कर सकता है। मास्टर के दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर एक कविता लिखी। लेखक ने मालती लता व कविता दोनों ही देखी थी। इससे उसे लगा कि वह अपने आस-पास , अपने गाँव, खेतों आदि पर कविता बना सकता है।

भैंस चराते-चराते वह फसलों व जंगली फूलों पर तुकबंदी करने लगा। वह उन्हें जोर से गुनगुनाता तथा मास्टर को दिखाता। कविता लिखने के लिए वह कागज व पेंसिल रखने लगा। उनके न होने पर वह लकड़ी के छोटे टुकड़े से भैंस की पीठ पर रेखा खींचकर लिखता या पत्थर की शिला पर कंकड़ से लिख लेता। कंठस्थ हो जाने पर उसे पोंछ देता। वह अपनी कविता मास्टर को दिखाता था। कभी-कभी वह रात को ही मास्टर के घर जाकर कविता दिखाता। वे उसे कविता के शास्त्र के बारे में समझाते। वे उसे छद, अलंकार, शुद्ध लेखन, लय का ज्ञान कराते। वे उसे पुस्तकें व कविता-संग्रह भी देते थे। उन्होंने उसे कविता करने के अनेक ढरें सिखाए। इस प्रकार लेखक को मास्टर की निकटता मिलती और उसकी मराठी भाषा में सुधार आने लगा। शब्दों का महत्व उसकी समझ में आने लगा।

बहुविकल्पी प्रश्न

प्र-1 'जूझ' शब्द का अर्थ है-

(ङ) यातना

(च) संघर्ष

(छ) विराम

(ज) मेहनत

प्र-2 'जूझ' पाठ में लेखक अपनी पढ़ाई के विषय में किससे कहता है?

(क) अपने पिता से

(ख) दत्ताजी राव से

(ग) अपनी माँ से

(घ) सौन्दलगेकर से

प्र-3 'जूझ' पाठ में लेखक को कक्षा में किसका साथ मिलता है?

(क) बसंत पाटिल का

(ख) रतनाप्पा का

(ग) मास्टर रणनवरे का

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र-4 न. व. सौन्दलगेकर किस विषय के शिक्षक थे?

(क) अंग्रेजी

(ख) हिन्दी

(ग) संस्कृत

(घ) मराठी

प्र-5 बच्चे को शिक्षा देने के विषय में दत्ताजी राव का नजरिया कैसा है?

(क) अनुचित है

(ख) उचित है

(ग) पक्षपातपूर्ण है

(घ) विरोध में है

उत्तर- 1 (ख) संघर्ष 2 (ग) अपनी माँ से 3 (क) बसंत पाटिल का 4 (घ) मराठी
5 (ख) उचित है

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2021-22 विषय - हिंदी (आधार)
(विषय कोड - 302) कक्षा - बारहवीं

निर्धारित समय : 90 मिनट **अधिकतम अंक : 40 अंक**

सामान्य निर्देश :-

- इस प्रश्न पत्र में तीन खंड हैं।
- खंड 'अ ' में तीस प्रश्नों में से केवल पंद्रह प्रश्नों का ही उत्तर देना है।
- खंड 'ब ' में छह प्रश्नों में से केवल पांच प्रश्नों का ही उत्तर देना है।
- खंड 'स ' में बाईस प्रश्नों में से केवल बीस प्रश्नों का ही उत्तर देना है।
- निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए
- इस प्रश्न पत्र में वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए हैं।
- प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में चार विकल्प दिए गए हैं।
- विकल्पों में से सबसे उचित का चयन सावधानीपूर्वक कीजिए।

प्रश्न संख्या	खंड अ अपठित बोध	अंक 15
	अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न	10
प्रश्न	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :-**	**10**
	भारत में जन-आंदोलनों का लंबा इतिहास रहा है। पिछले दो-तीन दशकों में शहरी एवं शिक्षित मध्यवर्गीय लोगों के बीच इस मसले पर सचेत समझदारी विकसित हुई है। विकास के आधुनिक संस्करण ने पारिस्थितिकीय संतुलन एवं विकास प्राथमिकताओं के मध्य द्वंद्व की स्थिति खड़ी कर दी है। इसने कई जन आंदोलनों को जन्म दिया है। 70 का दशक सामाजिक आंदोलनों के लिहाज से बहुत महत्वपूर्ण है। सामाजिक आंदोलनों के संदर्भ में इसे पैराडाइम शिफ्ट की तरह देखा जाता है। इसी दशक में महाआख्यानों के बरक्स छोटे मुद्दों ने वैश्विक स्तर पर अपनी छाप छोड़ी। चाहे वह महिला आंदोलन हो या फिर मानवाधिकार आंदोलन या फिर मध्य वर्ग के आंदोलन हो या शांति आंदोलन। पर्यावरणीय आंदोलन इसी क्रम में एक महत्वपूर्ण कड़ी समझी जाती है। यह आंदोलन सन 1973 में एक सुबह शुरू हुआ जब चमोली जिले के सुदूर पहाड़ी कस्बे गोपेश्वर में इलाहाबाद की खेल का सामान बनाने वाली फैक्ट्री के लोग देवदार के दस वृक्ष काटने के उद्देश्य से पहुँचे। आरंभ में ग्रामीणों ने अनुरोध किया कि वे वृक्ष ना काटें परंतु जब ठेकेदार नहीं माने तब ग्रामीणों ने चिन्हित वृक्षों का घेराव किया और उससे चिपक गए। पराजित ठेकेदारों को विवश होकर वापस जाना पड़ा। कुछ सप्ताह बाद ठेकेदार पुनः वापस आए और उन्होंने फिर पेड़ काटने की कोशिश की। 50 वर्षीय गौरा देवी के नेतृत्व में स्त्रियों ने इसका प्रतिरोध करते हुए जंगल जाने वाले मार्ग को अवरुद्ध कर दिया। उनका कहना था कि 'यह जंगल हमारा मायका है और हम पूरी ताकत से इसे बचाएँगी'। इस आंदोलन की अग्रिम पंक्ति की सैनिक महिलाएँ थीं जिनका कार्यक्षेत्र घर के अंदर चौके और चूल्हे तक सीमित माना जाता है। भारत में जंगल को लेकर दो तरह के दृष्टिकोण विद्यमान हैं। पहला है जीवनोत्पादक तथा दूसरा है जीवन विनाशक जिसे दूसरे शब्दों में 'औद्योगिक भौतिकवादी दृष्टिकोण' भी कहा जाता है। जीवनोत्पादक दृष्टिकोण जंगल के संसाधनों की निरंतरता तथा उनमें नवीन संभावनाओं को स्वीकार करता है ताकि भोजन तथा जल संसाधनों का कभी ना खत्म होने वाला भंडार बना	

	रहे। जीवन विनाशक दृष्टिकोण कारखानों तथा बाजार से बँधा हुआ है जो जंगल के संसाधनों का अधिकाधिक दोहन अपने व्यावसायिक लाभ के लिए करना चाहता है। आंदोलन के आरंभिक दिनों बाहरी ठेकेदारों को भगाने में स्थानीय ठेकेदारों ने भी इनका भरपूर सहयोग किया क्योंकि इनके व्यावसायिक हित भी बाधित हो रहे थे, परंतु उनके जाने के बाद एक सरकारी निकाय (द फॉरेस्ट डेवेलपमेंट कारपोरेशन) ने फिर वहाँ के स्थानीय ठेकेदारों की सहायता से लकड़ी कटाई का कार्य शुरू किया। स्त्रियों ने यह देखते हुए अपने आंदोलन को आगे बढ़ाते हुए जंगल के दोहन के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखा। वन विभाग के कई अधिकारियों ने स्त्रियों को यह समझाने का भी प्रयास किया कि जंगल लकड़ी का मुनाफा देते है। इसलिए उन्हें वे काट रहे हैं और जो लकड़ियाँ काटी जा रही है उनका जंगल के लिए कोई उपयोग नहीं है। वे जर्जर और ठूँठ है। महिलाओं ने उन्हें समझाया कि दरअसल यह जंगल के नवीनीकरण की प्रक्रिया है जिसमें पुराने तथा जर्जर हुए पेड़ नए पेड़ों के लिए जैविक खाद का कार्य करते हैं। जंगल के संबंध में महिलाओं की समझ ने चिपको आंदोलन को एक नई दिशा दी।	
❖	**निम्नलिखित *10* प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए :-**	**10x1 =10**
1	जन आंदोलन के प्रति शहरी मध्यमवर्ग के नज़रिए के बारे में लेखक का क्या अभिमत है? 1. यह वर्ग जन आंदोलन के प्रति उदासीन होता है। 2. यह वर्ग जन आंदोलन का विरोध करता है। 3. इस वर्ग में जन आंदोलन को लेकर जागरूकता बढ़ी है। 4. जन आंदोलन शहरी मध्यम वर्ग से असंबंधित होते हैं।	1
2	सत्तर के दशक के सामाजिक आंदोलनों की क्या विशेषता है? 1. अंतरराष्ट्रीय सामाजिक चेतना के लिए आंदोलन 2. दुनिया का इन आंदोलनों की ओर ध्यानाकर्षण 3. सामाजिक आंदोलनों में व्याप्त आर्थिक भ्रष्टता 4. सामाजिक आंदोलनों का हिंसक रूप	1
3	पर्यावरण संबंधी जन आंदोलन के जन्म के क्या कारण हैं? 1. पारिस्थितिक संतुलन और विकास की प्राथमिकता में द्वंद्व 2. शिक्षित व कार्यकुशल युवाओं को रोज़गार के प्रयाप्त अवसरों की कमी 3. मृदा का अपरदन तथा कृषि के लिए भूमि का कम होना 4. पर्वतीय क्षेत्रों में वनों की कटाई से भूस्खलन के कारण बढ़ती जान माल की हानि	1
4	"जंगल हमारा मायका है" - से गौरा देवी का क्या आशय था? 1. गौरा देवी का पैतृक गाँव जंगल में होने से उन्हें जंगल से अटूट प्यार था । 2. जंगल से मिलने वाले संसाधनों पर गौरा देवी का गांव निर्भर था। 3. जंगल में देवी अरण्यानी का वास था तथा गौरा देवी उनकी भक्त थीं । 4. जंगल हमें माँ की तरह जीवनावश्यक स्रोत जैसे ऑक्सीजन देते हैं ।	1
5	चिपको आंदोलन किस तरह का जनआंदोलन था? 1. महिलायों द्वारा रास्ता रोककर शहरों द्वारा गाँव की लकड़ी न ले जाने के लिये आंदोलन 2. पर्यावरण संरक्षण के लिए स्थानीय आंदोलन 3. महिलाओं द्वारा रोजगार के लिए आंदोलन 4. महिला अधिकारों के संरक्षण का आंदोलन	1

6	जंगल के वृक्षों को संसाधन समझकर उनकी अंधाधुंध कटाई किस तरह के दृष्टिकोण का प्रमाण है? 1. जीवनोत्पादक दृष्टिकोण 2. औद्योगिक भौतिकवादी दृष्टिकोण 3. औद्योगिक विकास का **भौतिकशास्त्रीय** दृष्टिकोण 4. पर्यावरण संसाधन संरक्षण जीवनोत्पादक दृष्टिकोण	1
7	चिपको आंदोलन के दौरान आंदोलनकारी महिलाओं ने जर्जर और ठूंठ लकड़ियों के क्या लाभ बताए? 1. इनकी जंगल के भूमि कटाव को रोकने में अहम भूमिका है। 2. इनके कारण जैविक पारिस्थितिकी संतुलन कायम रहता है । 3. ये पौधों की अगली पीढ़ी के लिये भूमि की उर्वरता बढाती हैं । 4. ये जंगल के छोटे जीवों को आवास प्रदान कर उन्हें सुरक्षा देती हैं ।	1
8	चिपको आंदोलन के दौरान स्थानीय ठेकेदारों का क्या उद्देश्य था ? 1. बाहरी ठेकेदारों को बाहर खदेड़ना था। 2. वनों के संरक्षण को बढ़ावा देना था। 3. ग्रामीण महिलाओं को काम काज के दूसरे अवसर प्रदान करना । 4. आंदोलन को अव्यवस्थित करना था।	1
9	गंभीर मुद्दों पर महिलाओं की भूमिका को यह गद्यांश किस प्रकार रेखांकित करता है ? 1. घर और बाहर दोनों में महिलाओं की स्थिति एक - समान है। 2. ग्रामीण महिलाएं यदि निश्चय कर लें तो जीत उनकी ही होती है । 3. घर तथा खेती कार्य के कारण महिलायें विकास कार्यों में भाग नहीं ले पाती हैं । 4. समझ शिक्षा के परे परिवेश और संस्कृति में भी निहित होती है।	
10	लेखक का "जीवनोत्पादक दृष्टिकोण" से क्या आशय है ? 1. प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धि और मांग में सामंजस्य । 2. यह प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का रेखांकन । 3. आवश्यता से अधिक उत्पादन कर उसे खपाने के लिये बाज़ार बनाना । 4. यह दृष्टिकोण व्यावसायिक उन्नति की ओर उन्मुख है।	
अथवा **(अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न)**		
प्रश्न	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :-**	**10**
	'विकास' का सवाल आज विमर्श के केंद्र में है। आधुनिकता के प्रतिफल के रूप में प्रगट हुई 'विकास' की अवधारणा के बारे में लोगों का विश्वास था कि विकास की यह अद्भुत घटना आधुनिक मनुष्य को अभाव, समाज और प्रकृति की दासता एवं जीवन को विकृत करने वाली शक्तियों से मुक्ति दिला देगी। लेकिन आधुनिक विकास के जो स्वप्न देखे थे उसके अपेक्षित परिणाम सामने नहीं आए। इसके फलस्वरूप लोगों का मन वैकल्पिक उपायों के बारे में सोचने लगा है। इस क्रम में हमें बरबस कुमारप्पा के विचार याद याद आते है जिन्होंने इस बात को मजबूती के साथ रखा है कि विकास की जो गांधीवादी अवधारणा है वही सार्थक एवं टिकाऊ है। जे.सी. कुमारप्पा का आर्थिक दर्शन व्यापक और मौलिक है। कुमारप्पा का आर्थिक चिंतन गांधीवादी अहिंसा पद्धति पर आधारित होने के कारण व्यक्ति की स्वतंत्रता, सृजनशीलता तथा दैनिक काम से उसके स्वस्थ संबंध को महत्वपूर्ण मानता है। कुमारप्पा के अनुसार किसी के दैनिक कामों में ही उसके सभी आदर्श, सिद्धांत और धर्म प्रकट हो जाते है। यदि उचित रीति पर काम किया जाए तो वही काम मनुष्य के व्यक्तित्व, के	

	विकास का रूप बन जाता है। कुमारप्पा बढ़ते हुए श्रम विभाजन के सदंर्भ में वे लिखते है - "चीजों के बनाने की पद्धति में केंद्रीकरण के अंतर्गत जो श्रम-विभाजन होता है, जो कि स्टैंडर्ड माल तैयार करने के लिए आवश्यक है, उसमें व्यक्तिगत कारीगरी दिखाने का कोई अवसर नहीं मिलता। केंद्रित उद्योग में काम करने वाला उस बड़ी मशीन का एक पुर्जा भर बनकर रह जाता है। उसकी स्वतंत्रता और उसका व्यक्तित्व समाप्त हो जाता है।" कुमारप्पा के ये विचार आज के स्वयंचलित मशीन आधारित महाकाय उद्योगों में कार्यरत मजदूरों के जीवन का प्रत्यक्ष अध्ययन करने पर उन विचारों की सत्यता को सिद्ध करते हैं। आज इस बात को लेकर कोई दो राय नहीं है कि केंद्रीय उत्पादन व्यवस्था, अपने दुर्गुणों से छुटकारा नहीं पा सकती। वह और भयावह तब बन जाती है जब वह "आवश्यकता के अनुसार उत्पादन" के बजाय "बाजार के लिए उत्पादन" पर ध्यान केंद्रित करती है। बेतहाशा उत्पादन बाजार की तलाश करने के लिए विवश होता है तथा उसका अंत गलाकाट परस्पर होड़ तथा युद्ध, उपनिवेशवाद इत्यादि में होता है। कुमारप्पा उपरोक्त तथ्यों को भलीभाँति परख चुके थे तथा स्थायी स्रोतों के दोहन पर ध्यान देने तथा उन्हें विकसित करने पर जोर देते रहे। कुमारप्पा 'विकास' की जिस अवधारणा की बात करते हैं, उसके केंद्र में प्रकृति एवं मनुष्य है। मनुष्य की सुप्त शक्तियों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण निर्माण करना ही सच्चे विकास का उद्देश्य है।	
	निम्नलिखित *10* प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए :-	**10**
11	अवतरण के अनुसार 'विकास' किसका प्रतिफल है? 1. आनन्दमयता 2. वित्तीय प्रचुरता 3. अर्वाचीनता 4. शैक्षिकता	1
12	विकास के फलस्वरूप क्या परिवर्तन हुआ? 1. मनुष्य के अभावों का विस्तार 2. मनुष्य के अभावों का अंत 3. मनुष्य की दासता से मुक्ति 4. सामजिक समस्याओं का अंत	1
13	विकास के वैकल्पिक उपायों के बारे में चिंतन क्यों आरंभ हुआ? 1. कोविड महामारी फैलने के कारण 2. पर्यावरण में आये बदलावों के कारण 3. प्रत्याशित फल न मिलने के कारण 4. विश्व राजनीति में बदलाव के कारण	1
14	अवतरण के अनुसार विकास की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए? 1. जो सामाजिक असमानता को समाप्त कर दे 2. जो विज्ञान की मदद से जीवन दीर्घायु कर सके 3. जो सार्थक तथा दूरगामी परिणामों पर केंद्रित हो 4. जिसमें लक्ष्य की प्राप्ति सर्वोपरि हो	1
15	अवतरण के अनुसार केंद्रीकृत श्रम प्रणाली से क्या होता है ? 1. उत्पादों की गुणवत्ता में वांछनीय सुधार 2. व्यक्तिगत सृजनात्मकता का ह्रास	1

	3. प्रति व्यक्ति आर्थिक आय में घाटा 4. प्रति व्यक्ति रोज़गार अवसरों में कमी	
16	कुमारप्पा के अनुसार व्यक्ति के दैनिक कार्यों के विषय में सत्य कथन कौन सा है? 1. **यह** जीवन यापन हेतु आवश्यकता पूर्ति के लिए होते हैं 2. **यह** उसकी विचारधारा पर आधारित होते हैं 3. **यह** उसकी रूचि एवं क्षमता के अनुसार होते हैं 4. **यह** सामाजिक बंधनों **के दायरे में बंधे** होते हैं	1
17	कुमारप्पा निम्नलिखित में से किस विचारधारा के समर्थक प्रतीत होते है? 1. तैयार वस्तुओं एवं उत्पादों का आयात 2. नये उद्यमों से औद्योगिक आत्मनिर्भरता 3. अर्थव्यवस्था का उदारीकरण 4. उद्योगों का वैश्वीकरण एवं निजीकरण	1
18	केंद्रीय उत्पादन व्यवस्था के विषय में क्या असत्य है? 1. कम समय में अधिक मात्रा में गुणवत्तापूर्ण माल का उत्पादन 2. आवश्यकता से अधिक उत्पादन 3. आवश्यकतानुसार उत्पादन 4. कम निवेश में अधिक निर्गत	1
19	अर्थव्यवस्था में प्रतियोगिता का क्या परिणाम होगा? 1. नये गत्यात्मक बाज़ारों पर अधिकार हेतु पारस्परिक टकराव 2. उपभोक्ताओं को सस्ती दरों पर अच्छी वस्तुओं की उपलब्धि 3. विकासशील देशों में सस्ते श्रम आधारित उद्योगों का विकास 4. विकासशील देशों में कर चोरी की घटनाओं में बढ़ोतरी	1
20	कुमारप्पा के अनुसार शाश्वत विकास का लक्ष्य क्या है? 1. देशों की प्रति व्यक्ति आय के पूर्ण स्तर को बढ़ाना 2. जीवन स्तर के भौतिक मानकों में सुधार करना 3. मनुष्य की संभावित क्षमताओं का विकास 4. सभी मनुष्यों में आर्थिक समानता पैदा करना	1
प्रश्न	**अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्न**	**अंक 5**
प्रश्न	**निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :-**	**5**
	शांति नहीं तब तक, जब तक सुख - भाग न नर का सम हो, **नहीं किसी को बहुत अधिक हो,** नहीं किसी को कम हो। **ऐसी शांति राज्य करती है** तन पर नहीं, हृदय पर, **नर के ऊँचे विश्वासों पर** श्रद्धा, भक्ति, प्रणय पर। **न्याय शांति का प्रथम न्यास है** जब तक न्याय न आता। **जैसा भी हो महल शांति का,** सुदृढ़ नहीं रह पाता।	

	कृत्रिम शांति शशंक आप, अपने से ही डरती है, **खड़ग छोड़ विश्वास किसी का,** कभी नहीं करती है। **और जिन्हें इस शांति - व्यवस्था** में सुख - भोग सुलभ है, **उनके लिए शांति ही जीवन,** सार, सिद्धि दुर्लभ है।	
	निम्नलिखित *05* प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए :-	**5**
21	सामाजिक जीवन में अशांति का क्या कारण है ? 1. आनंद का अभाव 2. समता का अभाव 3. वास्तविकता का अभाव 4. प्रीति का अभाव	1
22	कृत्रिम शांति से क्या हानि संभव है ? 1. न्याय मिलता है, शांति नहीं 2. विद्वेष विस्तार पाता है 3. वास्तविक संबंधों के स्थान पर कृत्रिम भावों का प्रसार 4. **प्राकृतिक के बजाय कृत्रिम संसाधनों की बहुलता**	1
23	काव्यांश का संदेश क्या हो सकता है ? 1. समता व न्याय का समाज में पोषण करना चाहिए 2. कृत्रिम शांति और समान अवसर प्रदान करना चाहिए 3. योग्यता के आधार पर ही जीवन संसाधनों का बंटवारा होना चाहिए 4. कृत्रिम विज्ञान की सहायता से प्राकृतिक शांति स्थापित करनी चाहिए	1
24	कवि किस प्रकार की शांति को महत्वपूर्ण मानता है ? 1. न्याय और आर्थिक समानता पर आधारित 2. कृत्रिम शांति और आर्थिक समानता पर आधारित 3. कृत्रिम शांति से वैश्विक संघर्षों के समाधान पर आधारित 4. श्रद्धा, भक्ति, प्रणय व त्याग आधारित	1
25	देश - समाज में शांति - स्थापना का प्रथम न्यास न्याय को क्यों बताया गया है ? 1. केवल न्याय और व्यवस्था द्वारा ही समाज में शांति संभव है 2. समानता का व्यवहार न्याय के पश्चात होता है 3. कृत्रिम न्याय भी न्याय को सुदृढ़ करता है 4. न्यायालय अन्याय के ख़िलाफ़ याचिका का प्रथम सोपान हैं	1
	अथवा **(अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्न)**	
प्रश्न	**निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :-**	**5**
	प्रभु ने तुमको कर दान किए, **सब वांछित वस्तु विधान किए।** तुम प्राप्त करो उनको न अहो, **फिर है किसका वह दोष कहो ?** समझो न अलभ्य किसी धन को, **नर हो न निराश करो मन को।**	

	किस गौरव के तुम योग्य नहीं, **कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं ?** जन हो तुम भी जगदीश्वर के, **सब है जिसके अपने घर के।** फिर दुर्लभ क्या है उसके मन को ? **नर हो, न निराश करो मन को।** करके विधि - वाद न खेद करो, **निज लक्ष्य निरंतर भेद करो।** बनता बस उद्धम ही विधि है, **मिलती जिससे सुख की निधि है।** समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को, **नर हो, न निराश करो मन को।**	
४	**निम्नलिखित *05* प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए :-**	**5x1=5**
26	वांछित वस्तुओं को प्राप्त न कर सकने में किसका दोष है ? 1. अकर्मण्य मनुष्यों का 2. समाज में व्याप्त असमानता का 3. निराश नर नारियों का 4. निराशाजनक परिस्थितियों का	1
27	विधि - वाद का खेद कौन व्यक्त करते हैं ? 1. भाग्यवादी लोग 2. विधिवक्ता लोग 3. परिश्रमी लोग 4. भाग्यशाली लोग	1
28	इस काव्यांश से क्या प्रेरणा मिलती है ? 1. नर हैं, अतः निराश न हों 2. आशा के साथ जगदीश्वर पर भरोसा रखें 3. लक्ष्य है, अतः पाने का प्रयास करें 4. नियति निश्चित है, अतः प्रतीक्षा करें	1
29	इस काव्यांश से कवि के कौन - से विचारों का परिचय मिलता है ? 1. कवि अलभ्य धन अर्जित कर गौरव प्राप्ति के लिये प्रेरणा दे रहे हैं 2. कवि बता रहे हैं भगवान जी के लिये सभी जन एक समान हैं 3. कवि कर्मण्येवाधिकारस्ते का मार्ग अपना कर्म करने को कह रहे हैं 4. कवि कह रहे हैं निराशा त्याग कर नियति स्वीकार करनी चाहिये	1
30	कवि आस्तिक है, इसका पता कौन - सी पंक्ति से चलता है ? 1. समझो न अलभ्य किसी धन को, **नर हो न निराश करो मन को।** 2. करके विधि - वाद न खेद करो, **निज लक्ष्य निरंतर भेद करो।** 3. जन हो तुम भी जगदीश्वर के, **सब है जिसके अपने घर के।** 4. बनता बस उद्धम ही विधि है, **मिलती जिससे सुख की निधि है।**	1

प्रश्न	खंड 'ब ' अभिव्यक्ति और माध्यम के पाठों पर आधारित प्रश्न	5 अंक
प्रश्न	**निम्नलिखित में से किन्ही *05* प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए :-**	**5**
31	दृश्यों का किस माध्यम में अधिक महत्व होता है? 1. समाचार पत्र 2. रेडियो 3. टेलीविज़न 4. इंटरनेट	1
32	उल्टा पिरामिड शैली में समाचार कितने भागों में बाँटा जाता है? 1. तीन 2. चार 3. पाँच 4. दो	1
33	सर्वाधिक खर्चीला जनसंचार माध्यम कौन-सा है? 1. रेडियो 2. टेलीविज़न 3. समाचार पत्र 4. इंटरनेट	1
34	समाचार संगठन में काम करने वाले नियमित वेतनभोगी पत्रकार को क्या कहते हैं? 1. फ्री लांसर 2. पूर्णकालिक 3. अंशकालिक 4. अल्पकालिक	1
35	इनमें समाचार पत्र की आवाज किसे माना जाता है? 1. फीचर 2. संपादक के नाम पत्र 3. संपादकीय 4. स्तंभ लेखन	1
36	फीचर लेखन की शैली निम्नलिखित में से किस शैली के निकट है ? 1. काव्यात्मक 2. कथात्मक 3. वक्तव्यात्मक 4. रूपात्मक	1
	खंड 'स ' पाठ्यपुस्तक व अनुपूरक पुस्तक	22
	पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्न	अंक
प्रश्न	**निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :-**	**5**
	जाने क्या रिश्ता है,जाने क्या नाता है **जितना भी उँड़ेलता हूँ,भर भर फिर आता है** दिल में क्या झरना है? **मीठे पानी का सोता है** भीतर वह, ऊपर तुम	

	मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात-भर मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है! **सचमुच मुझे दण्ड दो कि भूलूँ मैं भूलूँ मैं** तुम्हें भूल जाने की **दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या** शरीर पर,चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं **झेलूँ मै, उसी में नहा लूँ मैं** इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित **रहने का रमणीय यह उजेला अब** सहा नहीं जाता है। **नहीं सहा जाता है।**	
	निम्नलिखित *05* प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए :-	**5**
37	जाने क्या रिश्ता है,जाने क्या नाता है जितना भी उँड़ेलता हूँ,भर भर फिर आता है पंक्तियों का आशय है 1. कवि के मन में आप्लावनकारी प्यार है 2. कवि रिश्ते की नींव की सिंचाई कर रहे हैं 3. कवि सन्देश दे रहे हैं रिश्ते नातों की देखभाल करनी पड़ती है 4. रिश्ते नातों की परिभाषा बहुत कठिनतर है	1
38	कवि अपरिभाषित सत्ता से कैसे प्रभावित है? 1. आंतरिक रूप से 2. बाहरी रूप से 3. आंतरिक तथा बाहरी रूप से 4. दिल दिमाग दोनों की गहराईओं से	1
39	कवि अपरिभाषित सत्ता जिससे वे प्रभावित हैं उसे भूलना क्यों चाहते हैं ? 1. कवि कल्पना से निकल यथार्थ में आना चाहते हैं 2. कवि अबोध प्रेयसी से प्रेम करने की भूल का दंड चाहते हैं 3. कवि प्यार की नश्वरता से परिचित हो गये हैं इसलिये उसे भूलना चाहते हैं 4. कवि बाद में विरहाग्नि से बचने के लिये उसे अभी भूलना चाहते हैं	1
40	अंधकार - अमावस्या के लिए दक्षिणी - ध्रुव विशेषण का प्रयोग किया गया। इसके प्रयोग से पंक्ति में क्या बढ़ जाता है ? 1. विशेषण - विशेष का संबंध स्थापित होगा 2. अँधेरे का घनत्व बढ़ जाएगा 3. अंधकार में रहना संभव हो सकेगा 4. कवि को दंड मिल सकेगा	1
41	परिवेष्टित आच्छादित होने पर भी उजाला किस प्रकार संभव है ? 1. आच्छादित होने के बावजूद प्रभा किरणें बीच बीच में आ रही हैं 2. कवि जिससे प्रभावित है वह दीप्तिमान है 3. दक्षिण ध्रुव में हिम आच्छादन के बावजूद छह मास उजाला होता है 4. कवि को परावर्तित प्रकाश के कारण उजाले का भ्रम हो रहा है	1
प्रश्न	**पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न**	**अंक**
प्रश्न	**निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए :-**	**5**

	लेकिन इस बार मैंने साफ इंकार कर दिया। नहीं फेंकना है मुझे बाल्टी भर-भर कर पानी इस गंदी मेढक-मंडली पर। जब जीजी बाल्टी भर कर पानी ले गई उनके बूढ़े पाँव डगमगा रहे थे, हाथ काँप रहे थे, तब भी मैं अलग मुंह फुलाए खड़ा रहा । शाम को उन्होने लड्डू-मठरी खाने को दिए तो मैंने उन्हें हाथ से अलग खिसका दिया। मुंह फेरकर बैठ गया, जीजी से बोला भी नहीं । पहले वे भी तमतमाई , लेकिन ज्यादा देर तक उनसे गुस्सा नहीं रहा गया। पास आकार मेरा सर अपनी गोद में लेकर बोलीं,"देख भैया रूठ मत। मेरी बात सुन। यह सब अंधविश्वास नहीं है। हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे?" मैं कुछ नहीं बोला। फिर जीजी बोलीं । "तू इसे पानी की बरबादी समझता है पर यह बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्घ्य चढ़ाते हैं, जो चीज मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे?इसीलिए ऋषि- मुनियों ने दान को सबसे ऊंचा स्थान दिया है।"	
	निम्नलिखित *05* प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए :-	**5**
42	लेखक ने मेंढक- मंडली पर पानी फेंकने से इंकार क्यों कर दिया होगा? 1. पानी बर्बाद नहीं करने के कारण 2. मेंढक- मंडली को गंदे लोगों की श्रेणी में रखने के कारण 3. पानी फेंकने को बरबादी मानने के कारण 4. लोकमान्यताओं में विश्वास नहीं होने के कारण	1
43	अपने डगमगाते पाँव पर भी जीजी बाल्टी भर कर पानी क्यों फेंक रही थी? 1. क्योंकि लेखक पानी फेंकने से इंकार कर दिया था 2. पानी फेंकना आवश्यक मानने के कारण 3. लोकमान्यता में विश्वास रखने के कारण 4. अंधविश्वास में विश्वास के कारण	1
44	लेखक जीजी से नाराज़ क्यों हो रहा था? 1. जीजी द्वारा पानी फेंकने के कारण 2. लेखक की बात नहीं मानने के कारण 3. लेखक और जीजी में वैचारिक अंतर होने के कारण 4. जीजी के अंधविश्वासी होने के कारण	1
45	जीजी अधिक देर तक लेखक से गुस्सा क्यों नहीं रह सकी ? 1. लेखक की बात समझ जाने से 2. लेखक को समझाना चाहती थी 3. लेखक से प्रेम करने के कारण 4. लेखक की नासमझी के कारण	1
46	पानी का अर्घ्य चढ़ाने से आप क्या समझते हैं? 1. पानी का दान देना 2. पानी इंद्र भगवान को समर्पित करना 3. पानी का प्रसाद चढ़ाना 4. पानी का महत्त्व बताना	1
प्रश्न	**पाठ्यपुस्तक के पठित पाठों पर आधारित प्रश्न**	**अंक**
प्रश्न	**निम्नलिखित में से किन्ही *05* प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए :-**	**5**
47	बाजार को शैतान का जाल क्यों कहा गया है? 1. सब कुछ खरीदने के लालच के कारण 2. मनुष्य की सोच पर कब्जा कर लेने के कारण 3. बाजार के गिरफ्त मे आने के कारण	1

	4. अतृप्त रहने के कारण	
48	किन परिस्थितियों में हमारा मन शिथिल हो जाता है? 'एक गीत' कविता के आधार पर लिखिए 1. उत्साह के अभाव में 2. प्रेरणा के अभाव में 3. लक्ष्य के अभाव में 4. शक्ति के अभाव में	1
49	'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के माध्यम से कवि ने दृश्य संचार माध्यम के किस स्वरूप को सामने रखा है? 1. संवेदनशील 2. मानवीय 3. असंवेदनशील 4. अमानवीय	1
50	कविता की उड़ान चिड़िया क्यों नहीं जान सकती? 1. सीमित संभावनाओं के कारण 2. सीमित शक्ति के कारण 3. कल्पना शक्ति के अभाव के कारण 4. अपनी सीमित सीमाओं के कारण	1
51	भक्तिन पाठ के आधार पर पंचायतों की क्या तस्वीर उभरती है? 1. पंचायतें गूंगी, लाचार और अयोग्य हैं 2. वे सही न्याय नहीं कर पातीं 3. वे दूध का दूध और पानी का पानी करती हैं 4. वे अपने स्वार्थों को पूरा करती हैं	1
52	कैमरे में बंद अपाहिज कविता के आधार पर कार्यक्रम बनाने वाले उसकी सफलता का आधार किसे मानते हैं 1. दर्शकों के सामने अधिक से अधिक सही तथ्यों का उचित विश्लेषण करने से 2. अधिक से अधिक दर्शकों को अपना कार्यक्रम दिखाकर उसकी टी आर पी बढ़ाने से 3. दर्शकों की भावनाओं को किसी भी हाल में उत्तेजित करने से 4. ऐसे तथ्यों को उजागर करने से जो जनता से छिपाये गए हैं या जिनसे वो अनजान है	1
प्रश्न	**अनुपूरक पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित प्रश्न**	**अंक**
प्रश्न	**निम्नलिखित में से किन्हीं *05* प्रश्नों के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्पों का चयन कीजिए :-**	**5**
53	कहानी 'सिल्वर वेडिंग' में किशनदा की मृत्यु के संदर्भ में 'जो हुआ होगा 'से कहानीकार का क्या तात्पर्य रहा है? 1. लेखक मृत्यु से बहुत दुखी है 2. लेखक को मृत्यु का कारण पता है 3. लेखक मृत्यु के कारण से अपरिचित है 4. लेखक को मृत्यु से कोई अंतर नहीं पड़ता है	1
54	किशन दा के रिटायर होने पर यशोधर बाबू उनकी सहायता नहीं कर पाये थे क्योंकि – 1. यशोधर बाबू की पत्नी किशन दा से नाराज थी 2. यशोधर बाबू के घर में किशनदा के लिए स्थान का अभाव था 3. यशोधर बाबू अपने परिवार को नाराज नहीं करना चाहते थे 4. यशोधर बाबू के प्रस्ताव को किशनदा ने अस्वीकार कर दिया था	1

55	"जूझ" पाठ के अनुसार कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया? 1. अकेलापन डरावना है 2. अकेलापन उपयोगी है 3. अकेलापन अनावश्यक है 4. अकेलापन सामान्य प्रक्रिया है	1
56	"जूझ"पाठ के अनुसार – पढ़ाई- लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था " क्योंकि 1. लेखक खेती बाड़ी नहीं करना चाहता था 2. दत्ता जी राव जानते थे की खेती बड़ी में लाभ नहीं हैं 3. लेखक का पढ़ – लिख कर सफल होना बहुत आवश्यक था 4. लेखक का पिता नहीं चाहता था की वह आगे की पढ़ाई करे	1
57	कहानी 'सिल्वर वैडिंग' के अनुसार –"यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होतीं हैं लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं "- यशोधर बाबू की असफलता का क्या कारण था? 1. किशनदा उन्हें भड़काते थे 2. पत्नी बच्चों से अधिक प्रेम करती थी 3. पीढ़ी के अंतराल के कारण 4. वे परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे	1
58	"जूझ' कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ है? 1 . ज्ञानपूर्णता 2 . हठधर्मिता 3 . कुटिलता 4 . संघर्षमयता	1

खंड- 'क' अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न क्रम	उत्तर	अंक
1.	(3) इस वर्ग में जन आन्दोलन को लेकर जागरूकता बढ़ी है	1
2.	(2) दुनिया का इन आन्दोलनों की ओर ध्यानाकर्षण	1
3.	(1) पारिस्थितिकीय संतुलन और विकास की प्राथमिकता में द्वंद्व	1
4.	(2) जंगल से मिलने वाले संसाधनों पर गौरा देवी का गाँव निर्भर था	1
5.	(2) पर्यावरण संरक्षण के लिए स्थानीय आन्दोलन	1
6.	(2) औद्योगिक भौतिकवादी दृष्टिकोण	1
7.	(3) ये पौधों की अगली पीढ़ी के लिए भूमि की उरवर्ता बढाती हैं	1
8.	(1) बाहरी ठेकेदारों को बाहर खदेड़ना था	1
9.	(4) समझ शिक्षा के परे परिवेश और संस्कृति में निहित होती है	1
10.	(1) प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धि और मांग में सामंजस्य	1
11.	(3) अर्वाचीनता	1
12.	(1) मनुष्य के अभावों का विस्तार	1
13.	(3) प्रत्याशित फल न मिलने के कारण	1
14.	(3) जो सार्थक तथा दूरगामी परिणामों पर केन्द्रित हो	1
15.	(2) व्यक्तिगत सृजनात्मकता का ह्रास	1
16.	(2) यह उसकी विचारधारा पर आधारित होते हैं	1
17.	(2) नए उद्यमों से औद्योगिक आत्मनिर्भरता	1
18.	(3) आवश्यकतानुसार उत्पादन	1
19.	(1) नए गत्यात्मक बाजारों पर अधिकार हेतु पारस्परिक टकराव	1
20.	(3) मनुष्य की संभावित क्षमताओं का विकास	1

अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

21.	(2) समता का अभाव	1
22.	(2) विद्वेष विस्तार पाता है	1
23.	(1) समता व न्याय का समाज में पोषण करना चाहिए	1
24.	(3) न्याय और आर्थिक समानता पर आधारित	1
25.	(2) समानता का व्यवहार न्याय के पश्चात होता है	1
26.	(1) अकर्मण्य मनुष्यों का	1
27.	(1) भाग्यवादी लोग	1
28.	(3) लक्ष्य है, अत: पाने का प्रयास करें	1
29.	(3) कवि कर्मण्येवाधिकारस्ते का मार्ग अपना कर्म करने को कह रहे हैं	1
30.	(3) जन हो तुम भी जगदीश्वर के, सब हैं जिसके अपने घर के	1

खंड- 'ब' अभिव्यक्ति और जनसंचार माध्यम

31.	(3) टेलीविजन	1
32.	(1) तीन	1

33.	(4) इंटरनेट	1
34.	(2) पूर्णकालिक	1
35.	(3) संपादकीय	1
36.	(2) कथात्मक	1

खंड- 'स' - पाठ्य पुस्तक (काव्यांश)

37.	(1) कवि के मन में आप्लावनकारी प्यार है	1
38.	(3) आंतरिक तथा बाहरी रूप से	1
39.	(1) कवि कल्पना से निकल यथार्थ में आना चाहता है	1
40.	(2) अँधेरे का घनत्व बढ़ जाएगा	1
41.	(2) कवि जिससे प्रभावित है वह दीप्तिमान है	1

पाठ्य पुस्तक (गद्यांश)

42.	(4) लोकमान्यताओं में विश्वास नहीं होने के कारण	1
43.	(3) लोकमान्यता में विश्वास रखने के कारण	1
44.	(4) जीजी के अन्धविश्वासी होने के कारण	1
45.	(3) लेखक से प्रेम करने के कारण	1
46.	(1) पानी का दान देना	1

पाठ्य पुस्तक के पठित पाठों पर आधारित प्रश्न

47.	(2) मनुष्य की सोच पर कब्ज़ा कर लेने के कारण	1
48.	(2) प्रेरणा के अभाव में	1
49.	(3) असंवेदनशील	1
50.	(4) अपनी सीमित सीमाओं के कारण	1
51.	(1) पंचायतें गूंगी, लाचार और अयोग्य हैं	1
52.	(3) दर्शकों की भावनाओं को किसी भी हाल में उत्तेजित करने से	1

अनुपूरक पुस्तक के पाठों पर आधारित प्रश्न

53.	(3) लेखक मृत्यु के कारण से अपरिचित है	1
54.	(3) यशोधर बाबू अपने परिवार को नाराज नहीं करना चाहते थे	1
55.	(2) अकेलापन उपयोगी है	1
56.	(2) दत्ताजी राव जानते थे कि खेती-बाड़ी में लाभ नहीं है	1
57.	(4) वे परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे	1
58.	(4) संघर्षमयता	1

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र : 2021-22

कक्षा-बारहवीं

विषय- हिन्दी (आधार) व विषय कोड - 302

निर्धारित समय : 90 मिनट अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश:-

1. इस प्रश्नपत्र में तीन खंड 'अ', 'ब' और 'स'. हैं।
2. खंड 'अ' में तीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पंद्रह प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड 'ब' में छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।
4. खंड 'स' में बाईस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल बीस प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
5. प्रश्नों के उत्तर देने से पहले दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
6. दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित का चयन कीजिए।

खंड- 'अ' - अपठित बोध

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए-

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है। प्रथम वह , जो हमें जीवन-यापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय वह, जो हमें जीना सिखाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन-निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो; माता-पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। पहली विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है , वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेने वाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन-शक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्यपथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही वह अपने समाज , जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है , तो उसका जीवन भी मानव-जीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ-सींगविहीन पशु कहा जाता है।

वर्तमान भारत में दूसरी विद्या का प्राय: अभाव दिखाई देता है , परंतु पहली विद्या का रूप भी विकृत ही है, क्योंकि न तो स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है , जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है; सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं , उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। यह शिक्षा कुछ सीमा तक

हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए , जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं , इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव-जीवन का चारु प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह तो भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने 'अन्न' से 'आनंद' की ओर बढ़ने को जो 'विद्या का सार' कहा था, वह सर्वथा समीचीन ही था।

किन्हीं **दस प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 10x1=10

1- किन लोगों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है?

(क) इतिहास वेत्ताओं के अनुसार

(ख) भूगोल वेत्ताओं के अनुसार

(ग) तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार

(घ) काव्य-शास्त्रियों के अनुसार

2- द्वितीय विद्या हमें क्या सिखाती है?

(क) ज्ञान

(ख) मरना

(ग) ध्यान

(घ) जीना

3- किस विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है?

(क) चौथी विद्या

(ख) पहली विद्या

(ग) दूसरी विद्या

(घ) तीसरी विद्या

4- पूँछ-सींगविहीन पशु किसके लिए प्रयोग हुआ है?

(क) पशु के लिए

(ख) पूँछ के लिए

(ग) संसार के लिए

(घ) विद्याहीन मनुष्य के लिए

5- वर्तमान भारत में किस विद्या का प्राय: अभाव दिखाई देता है?

(क) चौथी विद्या

(ख) पहली विद्या

(ग) दूसरी विद्या

(घ) तीसरी विद्या

6- 'सुसभ्य' शब्द में 'सु' क्या है?

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

7- आज का युवक अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है-

(क) घर-घर जाकर शिक्षा देने में ही

(ख) अपनी विद्वता दिखने के चक्कर में ही

(ग) नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही

(घ) इनमें से कोई नहीं

8- भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए?

(क) जो उपयोगी न हो

(ख) जो उपयोगी हो

(ग) जो आवश्यक न हो

(घ) जो आवश्यक हो

9- 'भारतीय' शब्द में 'ईय' क्या है?

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

10- वर्तमान शिक्षा-पद्धति की विशेषताओं को .....है।

(क) सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता।

(ख) सर्वथा नकारा भी जा सकता।

(ग) इनमें से दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

अथवा

जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में 'तीर्थ' कहने का रिवाज है। और यह केवल रिवाज की ही बात नहीं है ; हम सचमुच मानते हैं कि अलग-अलग नदियों में स्नान करने से जितना पुण्य

होता है, उससे कहीं अधिक पुण्य संगम स्नान में है। किंतु , भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है , उसमें असली संगम वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं।

नदियों की विशेषता यह है कि वे अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ , अनेक जनपदों के आँसू और उल्लास लिए चलती हैं और उनका पारस्परिक मिलन वास्तव में नाना के आँसू और उमंग, भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होती हैं। अत: जहाँ भाषाओं का मिलन होता है , वहाँ वास्तव में विभिन्न जनपदों के हृदय ही मिलते हैं, उनके भावों और विचारों का ही मिलन होता है तथा भिन्नताओं में छिपी हुई एकता वहाँ कुछ अधिक प्रत्यक्ष हो उठती है। इस दृष्टि से भाषाओं के संगम आज सबसे बड़े तीर्थ हैं और इन तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है, वह भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत है।

हमारी भाषाएँ जितनी ही तेजी से जगेंगी , हमारे विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतना ही बढ़ता जाएगा। भारतीय कि वे केवल अपनी ही भाषा में प्रसिद्ध होकर न रह जाएँ , बल्कि भारत की अन्य भाषाओं में भी उनके नाम पहुँचे और उनकी कृतियों की चर्चा हो। भाषाओं के जागरण का आरंभ होते ही एक प्रकार का अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है। आज प्रत्येक भाषा के भीतर यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है कि भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है , उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक हैं , हैं तथा कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है।

11- जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में क्या कहने का रिवाज है?

(क) संगम

(ख) तीर्थ

(ग) मोक्ष

(घ) तट

12- भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें असली संगम क्या है?

(क) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर वाद-विवाद होता है

(ख) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर नाटक होता है

(ग) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं

(घ) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर जादू दिखाया जाता है

13- जहाँ भाषाओं का मिलन होता है, वहाँ

(क) भावों और विचारों का मिलन होता है

(ख) भावों और विचारों का मिलन नहीं होता है

(ग) भावों और विचारों का संघर्ष होता है

(घ) भावों और विचारों का संघर्ष नहीं होता है

14- लेखक ने सबसे बड़ा तीर्थ किसे माना है?

(क) भाषाओं के संगम को

(ख) नदियों के संगम को

(ग) विचारों के संगम को

(घ) इनमें से कोई नहीं

15- लेखक के अनुसार भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत कौन है?

(क) भाषाओं की नदियों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है

(ख) भाषाओं के तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है

(ग) भाषाओं के तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान नहीं करता है

(घ) इनमें से कोई नहीं

16- भारतीय भाषाओं के तेजी से जगने का क्या परिणाम होगा?

(क) विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतनी ही तेजी से बढ़ता जाएगा

(ख) विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतनी ही तेजी से कम होता जाएगा

(ग) कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा

(घ) इनमें से कोई नहीं

17- भाषाओं के जागरण का आरंभ होते ही क्या होने लगा है?

(क) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप टूटने लगा है

(ख) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप खत्म होने लगा है

(ग) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है

(घ) इनमें से कोई नहीं

18- प्रत्येक भाषा के भीतर क्या जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है?

I. भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है

II. उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक हैं

III. कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है

(क) केवल एक

(ख) केवल दो

(ग) एक, दो, और तीन

(घ) इनमें से कोई नहीं

19- 'विभिन्न' शब्द में उपसर्ग है-

(क) भिन्न

(ख) न

(ग) वि

(घ) भि

20- 'पारस्परिक' शब्द में प्रत्यय है-

(क) पा

(ख) पार

(ग) रिक

(घ) इक

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश **को ध्यान पूर्वक पढ़िए-**

जिसमें स्वदेश का मान भरा
आजादी का अभिमान भरा
जो निर्भय पथ पर बढ़ आए
जो महाप्रलय में मुस्काए
जो अंतिम दम तक रहे डटे
दे दिए प्राण, पर नहीं हटे
जो देश-राष्ट्र की वेदी पर
देकर मस्तक हो गए अमर
ये रक्त-तिलक-भारत-ललाट!
उनको मेरा पहला प्रणाम !

फिर वे जो ऑधी बन भीषण
कर रहे आज दुश्मन से रण
बाणों के पवि-संधान बने
जो ज्वालामुख-हिमवान बने
हैं टूट रहे रिपु के गढ़ पर
बाधाओं के पर्वत चढ़कर
जो न्याय-नीति को अर्पित हैं
भारत के लिए समर्पित हैं
कीर्तित जिससे यह धरा धाम
उन वीरों को मेरा प्रणाम

श्रद्धानत कवि का नमस्कार
दुर्लभ है छंद-प्रसून हार
इसको बस वे ही पाते हैं
जो चढ़े काल पर आते हैं
हुम्कृति से विश्व काँपते हैं
पर्वत का दिल दहलाते हैं
रण में त्रिपुरांतक बने शर्व
कर ले जो रिपु का गर्व खर्च

जो अग्नि-पुत्र, त्यागी, अकाम
उनको अर्पित मेरा प्रणाम

किन्हीं **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

21- कवि का पहला प्रणाम किसे है?

(क) रक्त-तिलक-भारत-ललाट! को

(ख) कुल-तिलक-धरा-ललाट! को

(ग) इनमें से दोनों को

(घ) इनमें से कोई नहीं

22- बाधाओं के पर्वत चढ़कर वीर सपूत क्या कर रहें हैं ?

(क) शत्रुओं के घर में रह रहे हैं

(ख) दुश्मनों से हाथ मिला रहे हैं

(ग) शत्रुओं के गढ़ पर आक्रमण कर रहे हैं

(घ) इनमें से कोई नहीं

23- भारत की धरा धाम किससे कीर्तित है?

(क) समर्पित वीरों से

(ख) कुटिल दुश्मनों से

(ग) साधु-सन्यासियों से

(घ) इनमें से कोई नहीं

24- दुर्लभ है छंद-प्रसून हार- इस पंक्ति में अलंकार है-

(क) अनुप्रास

(ख) रूपक

(ग) उपमा

(घ) इनमें से कोई नहीं

25- अग्नि-पुत्र, त्यागी, अकाम के लिए कवि क्या करता है?

(क) उनको कवि का प्रणाम अर्पित नहीं है

(ख) उनको कवि समझ नहीं पाता है

(ग) उनको कवि का प्रणाम अर्पित है

(घ) इनमें से कोई नहीं

अथवा

क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युत-घन के नर्तन,
मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन।

मैं अविराम पथिक अलबेला रुके न मेरे कभी चरण,
शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन।

मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए ।
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे, जीवन के उत्थान-पतन।

आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये जग के खंडन-मंडन।
मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल।
रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल।

मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन,
मुझे पथिक कब रोक सके हैं, अग्निशिखाओं के नर्तन।
मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

26- प्रलय मेघ, विद्युत-घन के नर्तन और सागर के गर्जन-तर्जन किसे नहीं रोक सकेंगे?

(क) प्रबल वेग से उमड़ते हुए सागर को

(ख) युद्ध के लिए प्रस्तुत वीर के पद को

(ग) अविराम अलबेले पथिक के चरण को

(घ) प्रलय बन कर नाचते हुए बादल को

27- मैं विपदाओं में मुसकाता <u>नव आशा के दीप लिए</u>- पंक्ति में अलंकार है-

(क) अनुप्रास

(ख) उपमा

(ग) रूपक

(घ) यमक

28- युग की प्राचीर निबल- का क्या अर्थ है ?

(क) समय की कमजोर ऊँची दीवार

(ख) घर की मजबूत ऊँची दीवार

(ग) इरादों की कमजोर दीवार

(घ) इनमें से कोई नहीं

29- संघर्षशील व्यक्ति किस तरह आगे बढ़ता है?

(क) ज्वालामुखियों के कंपन से डरकर

(ख) अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लेकर

(ग) अग्निशिखाओं के नर्तन से बचकर

(घ) इनमें से कोई नहीं

30- आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी- पंक्ति का क्या आशय है?

(क) सरल रास्ता खोज लेना

(ख) ओले पड़ने पर घर में रहना

(ग) आँधी और बारिश में रास्ता भूल जाना

(घ) मुश्किल से मुश्किल स्थितियों में भी राह निकाल लेना

खंड- 'ब' - अभिव्यक्ति और जनसंचार माध्यम

किन्हीं **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

31- छापाखाने के आविष्कार का श्रेय किसे दिया जाता है?

(क) जे एल बेयर्ड को

(ख) गुटेनबर्ग को

(ग) पं. जुगल किशोर को

(घ) जी मार्कोनी को

32- उलटा पिरामिड शैली में-

(क) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे बाद में लिखा जाता है

(ख) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को मध्य में लिखा जाता है

(ग) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को नहीं लिखा जाता है

(घ) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है

33- टेलीविज़न से संबंधित शब्द 'लाइव' का क्या अर्थ है?

(क) किसी खबर का सिनेमा हॉल से सीधा प्रसारण

(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण

(ग) किसी खबर का स्टूडियो से सीधा प्रसारण

(घ) किसी खबर का रेडियो स्टेशन से सीधा प्रसारण

34- इंटरनेट पत्रकारिता का आशय है-

(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान

(ख) इंटरनेट पर वीडियो गेम का आदान-प्रदान

(ग) इंटरनेट पर पैसों का लेन-देन

(घ) इनमें से कोई नहीं

35- किसी समाचार संगठन का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी कहलाता है-

(क) पूर्णकालिक पत्रकार

(ख) अंशकालिक पत्रकार

(ग) स्वतंत्र पत्रकार

(घ) इनमें से कोई नहीं

36- समाचार के तत्वों में शामिल है-

(क) नवीनता

(ख) प्रभावकारिता,

(ग) निकटता

(घ) उक्त तीनों

खंड- 'स' - पाठ्य पुस्तक व अनुपूरक पुस्तक

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

सचमुच मुझे दंड दो कि भूलूँ मैं भूलूँ मैं
तुम्हें भूल जाने की
दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या
शरीर पर, चेहरे पर, अंतर में पा लूँ मैं
झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं
इसलिए कि तुमसे ही परिवेष्टित आच्छादित
रहने का रमणीय यह उजेला अब
सहा नहीं जाता हैं।
नहीं सहा जाता है।
ममता के बादल की मडराती कोमलता
भीतर पिराती है
कमज़ोर और अक्षम अब हो गई है आत्मा यह
छटपटाती छाती को भवितव्यता डराती है
बहलाती – सहलाती आत्मीयता बरदाश्त नहीं होती है !

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5 x1=05

37- कवि स्वयं के लिए भूल जाने का दंड किससे पाना चाहता है?

(क) ईश्वर से

(ख) पत्नी से

(ग) खुद से

(घ) उस अव्यक्त सत्ता से जो कवि को प्रिय है

38- झेलूँ मैं, उसी में नहा लूँ मैं- पंक्ति के माध्यम से किस घने अंधेरे की ओर संकेत किया गया है -

(क) चेहरे के अंधेरे की ओर

(ख) दक्षिण ध्रुवी अंधकार-अमावस्या की ओर

(ग) प्रिय से दंड स्वरुप प्राप्त घने अंधेरे की ओर

(घ) इनमें से कोई नहीं

39- कवि को क्या सहन नहीं हो पा रहा है?

(क) प्रिय के साथ सुख से रहने का रमणीय उजाला

(ख) प्रिय से दूर रहने के दुख का रमणीय उजाला

(ग) प्रिय से अनबन होने का रमणीय उजाला

(घ) इनमें से कोई नहीं

40- कवि की आत्मा अब कमज़ोर और अक्षम हो गई है, ऐसा क्यों?

(क) कवि की आत्मा पहले से ही बहुत कमजोर और अक्षम थी इसलिए

(ख) प्रिय से प्राप्त अति दुख रूपी बादल की मडराती कोमलता के कारण

(ग) प्रिय से प्राप्त अति स्नेह रूपी बादल की मडराती कोमलता के कारण

(घ) इनमें से कोई नहीं

41- छटपटाती छाती को भवितव्यता डराती है- रेखांकित में अलंकार बताइए-

(क) उपमा

(ख) रूपक

(ग) यमक

(घ) अनुप्रास

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश **को ध्यानपूर्वक पढ़िए-**

हाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति-शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते हैं न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी।

इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक-दूसरे को ठगने की घात में हों। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखता है और यह बाजार का नहीं, बल्कि इतिहास का, सत्य माना जाता है। ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि शोषण होने लगता है; तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है।

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

42- बाजार को सार्थकता कौन-सा मनुष्य देता है?

(क) जो बाजार में अपनी पर्चेजिंग पावर का इस्तेमाल करता है

(ख) जो नहीं जानता है कि वह बाजार से क्या खरीदना चाहता है

(ग) जो जानता है कि वह बाजार से क्या खरीदना चाहता है

(घ) जो बाजार जाकर बिना जरूरत का सामान खरीदता है

43- 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में लोग अपने पैसे से बाजार क्या को देते हैं?

(क) एक अद्भुत दैवीय शक्ति और व्यंग्य की शक्ति

(ख) एक विनाशक शक्ति-शैतानी शक्ति और व्यंग्य की शक्ति

(ग) एक अद्भुत मानवीय शक्ति और एक ईश्वरीय शक्ति

(घ) इनमें से सभी

44- बाजार के बाजारूपन से क्या मतलब है?

(क) बाजार में कपट का बढ़ना और आपसी सद्भाव में कमी होना

(ख) बाजार में कपट में कमी आना का और आपसी सद्भाव का बढ़ना

(ग) बाजार में न कपट का बढ़ना और न आपसी सद्भाव में कमी होना

(घ) इनमें से सभी

45- बाजार में सद्भाव के घटने का आदमी पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) वे आपस में झगड़ने लगते हैं

(ख) वे आपस में गले मिलने लगते हैं

(ग) उनमें बहुत कमियाँ आ जाती हैं

(घ) वे आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करने लगते हैं

46- एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखता है- लेखक के मत से यह किस विषय का सत्य है?

(क) बाजार का

(ख) इतिहास का

(ग) अर्थशास्त्र का

(घ) इनमें से सभी का

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

47- भक्तिन अपना वास्तविक नाम किसी को नहीं बताती थी। ऐसा क्यों?

(क) वह एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या थी

(ख) उसके जीवन में सुख-समृद्धि और परिपूर्णता थी

(ग) उसके नाम और जीवन में गहरा विरोधाभास था

(घ) सेवक धर्म में उससे बढ़कर कोई नहीं था

48- लेखक के अनुसार बाजार के जादू की जकड़ से बचने का सीधा-सा क्या उपाय है?

(क) बाजार तब जाओ जब मन खाली हो

(ख) जब मन खाली हो तब बाजार न जाओ

(ग) जब मन खाली न हो तब बाजार न जाओ

(घ) क और ख दोनों

49- चिड़ियों के पंखों में तेजी क्यों आ जाती है?

(क) बच्चे घोसले में उनके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे

(ख) बच्चे घोसले में एक-दूसरे से लड़ रहे होंगे

(ग) बच्चे घोसले में आराम से सो रहे होंगे

(घ) ख और ग दोनों

50- बिना मुरझाए महकने के माने- पंक्ति का क्या अर्थ है?

(क) फूल खिलकर अपना सौंदर्य खो देता है इसलिए कविता के सौंदर्य को नहीं समझ पाता है

(ख) न ही कभी फूल मुरझाता है और न ही कभी कविता का सौंदर्य नष्ट होता है

(ग) जैसे फूल खिलकर मुरझा जाता है वैसे ही कविता का सौंदर्य भी नष्ट हो जाता है

(घ) फूल खिलकर मुरझा जाता है किन्तु कविता का सौंदर्य कभी समाप्त नहीं होता है

51- हम समर्थ शक्तिवान- काव्य-पंक्ति से किसके विषय में पता चलता है?

(क) टेलीविज़न के शक्तिशाली होने का

(ख) मीडिया के ताकतवर होने का

(ग) इंटरनेट के मजबूत होने का

(घ) शारीरिक चुनौती को झेलने वाले व्यक्ति का

52- शारीरिक चुनौती का सामना कर रहे किसी व्यक्ति का परिचय कैसे कराना चाहिए?

(क) उसकी हीनता का मजाक बनाकर

(ख) उसकी कमजोरियों का उल्लेख करके

(ग) उसकी लाचारी का फायदा उठाकर

(घ) उसे सबके सामने सम्मान देते हुए उसकी खूबियों को बताकर

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

53- चड्ढा ने यशोधर बाबू पर व्यंग्य करते हुए उनकी चूनेदानी का हाल पूछा। चूनेदानी क्या है?

(क) दफ़्तर की दीवाल घड़ी

(ख) यशोधर बाबू की कलाई घड़ी

(ग) किशन दा की कलाई घड़ी

(घ) यशोधर बाबू की दीवाल घड़ी

54- यशोधर बाबू अपनी पत्नी और बच्चों से परिवार के किस आचार-व्यवहार को अपनाने के लिए कहते हैं?

(क) संयुक्त परिवार के आचार-व्यवहार को

(ख) मिश्रित परिवार के आचार-व्यवहार को

(ग) एकल परिवार के आचार-व्यवहार को

(घ) इनमें से सभी के आचार-व्यवहार को

55- यशोधर बाबू का बेटा किस कंपनी में काम करता है?

(क) फर्नीचर की कंपनी

(ख) दवाओं की कंपनी

(ग) किशन दा की कंपनी में

(घ) विज्ञापन कंपनी में

56- 'जूझ' पाठ में दत्ता जी राव सरकार कौन हैं?

(क) पाठशाला के मास्टर

(ख) गाँव के सरपंच

(ग) लेखक के पिता

(घ) घर के मालिक

57- कविता से लगाव के पहले लेखक को अकेलापन कैसा लगता था?

(क) अच्छा लगता था

(ख) बहुत खटकता था

(ग) न अच्छा लगता था और न ही खटकता था

(घ) क और ख दोनों

58- मंत्री नामक मास्टर कौन-सा विषय पढ़ाते थे?

(क) हिन्दी भाषा

(ख) मराठी भाषा

(ग) अंग्रेजी भाषा

(घ) गणित

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र : 2021-22

कक्षा-बारहवीं

विषय- हिन्दी (आधार) व विषय कोड - 302

निर्धारित समय : 90 मिनट अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश:-

1. इस प्रश्नपत्र में तीन खंड 'अ', 'ब' और 'स'. हैं।
2. खंड 'अ' में तीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पंद्रह प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड 'ब' में छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।
4. खंड 'स' में बाईस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल बीस प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
5. प्रश्नों के उत्तर देने से पहले दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
6. दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित का चयन कीजिए।

खंड- 'क' अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न क्रम	उत्तर	अंक
1.	(ग) तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार	1
2.	(घ) जीना	1
3.	(ख) पहली विद्या	1
4.	(घ) विद्याहीन मनुष्य के लिए	1
5.	(ग) दूसरी विद्या	1
6.	(क) उपसर्ग	1
7.	(ग) नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही	1
8.	(घ) जो आवश्यक हो	1
9.	(ख) प्रत्यय	1
10.	(क) सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता।	1
11.	(ख) तीर्थ	1
12.	(ग) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं	1
13.	(क) भावों और विचारों का मिलन होता है	1
14.	(क) भाषाओं के संगम को	1
15.	(ख) भाषाओं के तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है	1
16.	(क) विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतनी ही तेजी से बढ़ता जाएगा	1
17.	(ग) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है	1

18.	(ग) एक, दो, और तीन	1
19.	(ग) वि	1
20.	(घ) इक	1

अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

21.	(क) रक्त-तिलक-भारत-ललाट! को	1
22.	(ग) शत्रुओं के गढ़ पर आक्रमण कर रहे हैं	1
23.	(क) समर्पित वीरों से	1
24.	(ख) रूपक	1
25.	(ग) उनको कवि का प्रणाम अर्पित है	1
26.	(ग) अविराम अलबेले पथिक के चरण को	1
27.	(ग) रूपक	1
28.	(क) समय की कमजोर ऊँची दीवार	1
29.	(ख) अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लेकर	1
30.	(घ) मुश्किल से मुश्किल स्थितियों में भी राह निकाल लेना	1

खंड- 'ब' अभिव्यक्ति और जनसंचार माध्यम

31.	(ख) गुटेनबर्ग को	1
32.	(घ) समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है	1
33.	(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण	1
34.	(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान	1
35.	(क) पूर्णकालिक पत्रकार	1
36.	(घ) उक्त तीनों	1

खंड- 'स' - पाठ्य पुस्तक (काव्यांश)

37.	(घ) उस अव्यक्त सत्ता से जो कवि को प्रिय है	1
38.	(ग) प्रिय से दंड स्वरुप प्राप्त घने अंधेरे की ओर	1
39.	(क) प्रिय के साथ सुख से रहने का रमणीय उजाला	1
40.	(ग) प्रिय से प्राप्त अति स्नेह रूपी बादल की मडराती कोमलता के कारण	1
41.	(घ) अनुप्रास	1

पाठ्य पुस्तक (गद्यांश)

42.	(ग) जो जानता है कि वह बाजार से क्या खरीदना चाहता है	1
43.	(ख) एक विनाशक शक्ति-शैतानी शक्ति और व्यंग्य की शक्ति	1
44.	(क) बाजार में कपट का बढ़ना और आपसी सद्भाव में कमी होना	1
45.	(घ) वे आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करने लगते हैं	1
46.	(ख) इतिहास का	1

पाठ्य पुस्तक के पठित पाठों पर आधारित प्रश्न

47.	(ग) उसके नाम और जीवन में गहरा विरोधाभास था	1

48.	(ख) जब मन खाली हो तब बाजार न जाओ	1
49.	(क) बच्चे घोसले में उनके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे	1
50.	(घ) फूल खिलकर मुरझा जाता है किन्तु कविता का सौंदर्य कभी समाप्त नहीं होता है	1
51.	(ख) मीडिया के ताकतवर होने का	1
52.	(घ) उसे सबके सामने सम्मान देते हुए उसकी खूबियों को बताकर	1

अनुपूरक पुस्तक के पाठों पर आधारित प्रश्न

53.	(ख) यशोधर बाबू की कलाई घड़ी	1
54.	(क) संयुक्त परिवार के आचार-व्यवहार को	1
55.	(घ) विज्ञापन कंपनी में	1
56.	(ख) गाँव के सरपंच	1
57.	(ख) बहुत खटकता था	1
58.	(घ) गणित	1

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र : 2021-22

कक्षा-बारहवीं

विषय- हिन्दी (आधार) व विषय कोड - 302

निर्धारित समय : 90 मिनट अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश:-

1. इस प्रश्नपत्र में तीन खंड 'अ', 'ब' और 'स'. हैं।
2. खंड 'अ' में तीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पंद्रह प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड 'ब' में छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।
4. खंड 'स' में बाईस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल बीस प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
5. प्रश्नों के उत्तर देने से पहले दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
6. दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित का चयन कीजिए।

खंड- 'अ' - अपठित बोध

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए-

परियोजना शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। इसे तैयार करने में किसी खेल की तरह का ही आनंद मिलता है। इस तरह परियोजना तैयार करने का अर्थ है-खेल-खेल में बहुत कुछ सीख जाना। यदि आपको कहा जाए कि दशहरा पर निबंध लिखिए , तो आपको शायद उतना आनंद नहीं आएगा। लेकिन यदि आपसे कहा जाए कि अखबारों से प्राप्त जानकारियों के अलावा भी आपको देश-दुनिया की बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। यह आपको तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है। इससे आप में नए-नए तथ्यों के कौशल का विकास होता है। इससे आपमें एकाग्रता का विकास होता है। लेखन संबंधी नई-नई शैलियों का विकास होता है।

आपमें चिंतन करने तथा किसी पूर्व घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की शक्ति का विकास होता है। परियोजना कई प्रकार से तैयार की जा सकती है। हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से , अपने तरीके से तैयार कर सकता है। ठीक उसी प्रकार जैसे हर व्यक्ति का बातचीत करने का , रहने का, खाने-पीने का अपना अलग तरीका होता है। ऐसा निबंध, कहानी कविता लिखते या चित्र बनाते समय भी होता है। लेकिन ऊपर कही गई बातों के आधार पर यहाँ हम परियोजना को मोटे तौर पर दो भागों में बाँट सकते हैं-एक तो वे परियोजनाएँ , जो समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाती हैं और दूसरी वे , जो किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती हैं।

समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और उस समस्या के निदान के लिए भी दिए जाते हैं। इस तरह की परियोजनाएँ प्राय: सरकार अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य – योजना तैयार करते समय बनाई जाती हैं। इससे उस

समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने में आसानी हो जाती हैं। किंतु दूसरे प्रकार की परियोजना को आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। इसे 'शैक्षिक परियोजना' भी कहा जाता है। इस तरह की परियोजनाएँ तैयार करते समय आप संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए बहुत सारी नई-नई बातों से अपने-आप परिचित भी होते हैं।

किन्हीं **दस प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 10x1=10

1- लेखक के अनुसार किसे तैयार करने में खेल की तरह आनंद मिलता है?

(क) पढ़ना-लिखना न पड़े बस खेलते रहने में

(ख) खेल के दौरान दिए गए गृह कार्य को करने में

(ग) शिक्षा के तहत दी गई परियोजना को तैयार करने में

(घ) खेलना भी जरुरी है और पढ़ना भी जरुरी है

2- आपको किस कार्य में बहुत आनंद आएगा?

(क) दशहरा विषय पर निबंध लिखने में

(ख) क्रिकेट या फुटबाल खेलकर समय बिताने में

(ग) अख़बार के अलावा भी अपनी पसंद की बातें एकत्रित करने में

(घ) अपने से छोटे बच्चों को चिढ़ाने में

3- किस कार्य से बच्चों में नए-नए तथ्यों के कौशल का विकास होता है।

(क) मित्रों के साथ बैठकर बातें करने से

(ख) तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने से

(ग) घर में बड़ों द्वारा कही गई बात को नजरअंदाज करनेसे

(घ) इनमें से कोई नहीं

4- परियोजना तैयार करने की क्या शैली हो सकती है?

(क) हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है

(ख) इसे एक ही ढंग से दूसरों के साथ मिलकर तैयार किया जा सकता है

(ग) कुछ लोग इसे सहज ढंग से समझ नहीं पाते हैं

(घ) कुछ लोग परियोजना कार्य करना ही नहीं चाहते

5- निबंध, कहानी, कविता लिखते या चित्र बनाने कैसा परिणाम होता है?

(क) सबका एक जैसा ही होता है

(ख) कुछ लोगों का एक जैसा और कुछ का अलग-अलग होता है

(ग) सब लोग किसी एक का देखकर लिख या बना लेते हैं

(घ) सबका अलग-अलग होता है

6- 'एकाग्रता' शब्द में 'ता' क्या है?

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

7- हम मोटे तौर पर परियोजना को जिन दो भागों में बाँट सकते हैं, वे हैं-

(क) समस्याओं को छोड़ देने के लिए और नई जानकारी प्राप्त करने के लिए

(ख) समस्याओं के निदान के लिए और समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए

(ग) समस्याओं के समझने के लिए और विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए

(घ) 'क' और 'ख' दोनों

8- सरकार अथवा संगठनों द्वारा किसी समस्या पर तैयार होने वाली कार्ययोजना है-

(क) समस्याओं के निदान के लिए

(ख) समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए

(ग) 'क' और 'ख' दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

9- 'परियोजना' शब्द में 'परि' है-

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

10- दूसरे प्रकार की परियोजना को कहा जा सकता है-

(क) शैक्षिक परियोजना

(ख) गैरशैक्षिक परियोजना

(ग) इनमें से दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

अथवा

जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में 'तीर्थ' कहने का रिवाज है। और यह केवल रिवाज की ही बात नहीं है ; हम सचमुच मानते हैं कि अलग-अलग नदियों में स्नान करने से जितना पुण्य होता है, उससे कहीं अधिक पुण्य संगम स्नान में है। किंतु , भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है , उसमें असली संगम वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच हैं, जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं।

नदियों की विशेषता यह है कि वे अपनी धाराओं में अनेक जनपदों का सौरभ , अनेक जनपदों के आँसू और उल्लास लिए चलती हैं और उनका पारस्परिक मिलन वास्तव में नाना के आँसू और उमंग , भाव और विचार, आशाएँ और शंकाएँ समाहित होती हैं। अत: जहाँ भाषाओं का मिलन होता है , वहाँ वास्तव में विभिन्न जनपदों के हृदय ही मिलते हैं, उनके भावों और विचारों का ही मिलन होता है तथा भिन्नताओं में छिपी हुई एकता वहाँ कुछ अधिक प्रत्यक्ष हो उठती है। इस दृष्टि से भाषाओं के संगम आज सबसे बड़े तीर्थ हैं और इन तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है, वह भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत है।

हमारी भाषाएँ जितनी ही तेजी से जगेंगी , हमारे विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतना ही बढ़ता जाएगा। भारतीय कि वे केवल अपनी ही भाषा में प्रसिद्ध होकर न रह जाएँ , बल्कि भारत की अन्य भाषाओं में

भी उनके नाम पहुँचे और उनकी कृतियों की चर्चा हो। भाषाओं के जागरण का आरंभ होते ही एक प्रकार का अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है। आज प्रत्येक भाषा के भीतर यह जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है कि भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है , उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक हैं , हैं तथा कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है।

11- जहाँ भी दो नदियाँ आकर मिल जाती हैं, उस स्थान को अपने देश में क्या कहने का रिवाज है?

(क) संगम

(ख) तीर्थ

(ग) मोक्ष

(घ) तट

12- भारत आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें असली संगम क्या है?

(क) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर वाद-विवाद होता है

(ख) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर नाटक होता है

(ग) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं

(घ) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर जादू दिखाया जाता है

13- जहाँ भाषाओं का मिलन होता है, वहाँ

(क) भावों और विचारों का मिलन होता है

(ख) भावों और विचारों का मिलन नहीं होता है

(ग) भावों और विचारों का संघर्ष होता है

(घ) भावों और विचारों का संघर्ष नहीं होता है

14- लेखक ने सबसे बड़ा तीर्थ किसे माना है?

(क) भाषाओं के संगम को

(ख) नदियों के संगम को

(ग) विचारों के संगम को

(घ) इनमें से कोई नहीं

15- लेखक के अनुसार भारतीय एकता का सबसे बड़ा सिपाही और संत कौन है?

(क) भाषाओं की नदियों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है

(ख) भाषाओं के तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है

(ग) भाषाओं के तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान नहीं करता है

(घ) इनमें से कोई नहीं

16- भारतीय भाषाओं के तेजी से जगने का क्या परिणाम होगा?

(क) विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतनी ही तेजी से बढ़ता जाएगा

(ख) विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतनी ही तेजी से कम होता जाएगा

(ग) कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा

(घ) इनमें से कोई नहीं

17- भाषाओं के जागरण का आरंभ होते ही क्या होने लगा है?

(क) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप टूटने लगा है

(ख) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप खत्म होने लगा है

(ग) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है

(घ) इनमें से कोई नहीं

18- प्रत्येक भाषा के भीतर क्या जानने की इच्छा उत्पन्न हो गई है?

I. भारत की अन्य भाषाओं में क्या हो रहा है

II. उनमें कौन-कौन ऐसे लेखक हैं

III. कौन-सी विचारधारा वहाँ प्रभुसत्ता प्राप्त कर रही है

(क) केवल एक

(ख) केवल दो

(ग) एक, दो, और तीन

(घ) इनमें से कोई नहीं

19- 'विभिन्न' शब्द में उपसर्ग है-

(क) भिन्न

(ख) न

(ग) वि

(घ) भि

20- 'पारस्परिक' शब्द में प्रत्यय है-

(क) पा

(ख) पार

(ग) रिक

(घ) इक

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए-

माना आज मशीनी युग में, समय बहुत महँगा है लेकिन
तुम थोड़ा अवकाश निकालो, तुमसे दो बातें करनी हैं!

उम्र बहुत बाकी है लेकिन, उम्र बहुत छोटी भी तो है
एक स्वप्न मोती का है तो, एक स्वप्न रोटी भी तो है
घुटनों में माथा रखने से पोखर पार नहीं होता है:
सोया है विश्वास जगा लो, हम सब को नदिया तरनी है!
तुम थोड़ा अवकाश निकालो, तुमसे दो बातें करनी हैं!

मन छोटा करने से मोटा काम नहीं छोटा होता है,
नेह-कोष को खुलकर बाँटो, कभी नहीं टोटा होता है,
आँसू वाला अर्थ न समझे, तो सब ज्ञान व्यर्थ जाएँगे:
मत सच का आभास दबा लो, शाश्वत आग नहीं मरनी है!
तुम थोड़ा अवकाश निकालो, तुमसे दो बातें करनी हैं!

किन्हीं **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

21- कवि थोड़ा अवकाश निकालने की बात क्यों रहा है?

(क) क्योंकि वर्तमान मशीनी दौर में बात करने के लिए किसी के पास समय नहीं है

(ख) लोग एक-दूसरे से मिलना नहीं चाहते हैं इसलिए मतभेद बढ़ता है

(ग) लोगों में आपसी तालमेल का आभाव है इसलिए झगड़े होते हैं

(घ) बच्चे बड़ों का कहना नहीं मानते हैं इसलिए कवि उन्हें समझाना चाहता है

22- उम्र बहुत छोटी भी तो है- पंक्ति में भाव निहित है-

(क) मनुष्य का जीवन बहुत कम समय का होता है

(ख) जीवन अनमोल है लेकिन समय की कमी है

(ग) जीवन क्षणभंगुर है, किसी भी समय मृत्यु हो सकती है

(घ) जीवन में इतने लक्ष्य हैं कि उन्हें पूरा करने के लिए समय कम पड़ता है

23- आलसी बनकर रहने से जीवन में आसानी से सफलता नहीं मिलती है - यह भाव किस पंक्ति में है?

(क) सोया है विश्वास जगा लो, हम सब को नदिया तरनी है

(ख) एक स्वप्न मोती का है तो, एक स्वप्न रोटी भी तो है

(ग) मन छोटा करने से मोटा काम नहीं छोटा होता है

(घ) घुटनों में माथा रखने से पोखर पार नहीं होता है

24- <u>नेह-कोष को खुलकर बाँटो</u>, कभी नहीं टोटा होता है,- रेखांकित पंक्ति में अलंकार है-

(क) अनुप्रास

(ख) रूपक

(ग) उपमा

(घ) यमक

25- कवि के अनुसार क्या अर्थ नहीं समझ पाने से सभी ज्ञान व्यर्थ है?

(क) संपन्न लोगों से मित्रता नहीं कर पाने से

(ख) पीड़ित लोगों के जीवन के दुःख-दर्द को नहीं समझ पाने से

(ग) किसी की मज़बूरी का फायदा नहीं उठा पाने से

(घ) लोगों की आँखों में धूल झोंककर काम न बना पाने से

अथवा

क्या रोकेंगे प्रलय मेघ ये, क्या विद्युत-घन के नर्तन,
मुझे न साथी रोक सकेंगे, सागर के गर्जन-तर्जन।

मैं अविराम पथिक अलबेला रुके न मेरे कभी चरण,
शूलों के बदले फूलों का किया न मैंने मित्र चयन।
मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए ।
फिर मुझको क्या रोक सकेंगे, जीवन के उत्थान-पतन।

आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये जग के खंडन-मंडन।
मैं अटका कब, कब विचलित मैं, सतत डगर मेरी संबल।
रोक सकी पगले कब मुझको यह युग की प्राचीर निबल।

मुझे डरा पाए कब अंधड़, ज्वालामुखियों के कंपन,
मुझे पथिक कब रोक सके हैं, अग्निशिखाओं के नर्तन।
मैं बढ़ता अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लिए,
फिर मुझको क्या डरा सकेंगे, ये बादल-विद्युत नर्तन।

26- प्रलय मेघ, विद्युत-घन के नर्तन और सागर के गर्जन-तर्जन किसे नहीं रोक सकेंगे?

(क) प्रबल वेग से उमड़ते हुए सागर को

(ख) युद्ध के लिए प्रस्तुत वीर के पद को

(ग) अविराम अलबेले पथिक के चरण को

(घ) प्रलय बन कर नाचते हुए बादल को

27- मैं विपदाओं में मुसकाता नव आशा के दीप लिए- पंक्ति में अलंकार है-

(क) अनुप्रास

(ख) उपमा

(ग) रूपक

(घ) यमक

28- युग की प्राचीर निबल- का क्या अर्थ है ?

(क) समय की कमजोर ऊँची दीवार

(ख) घर की मजबूत ऊँची दीवार

(ग) इरादों की कमजोर दीवार

(घ) इनमें से कोई नहीं

29- संघर्षशील व्यक्ति किस तरह आगे बढ़ता है?

(क) ज्वालामुखियों के कंपन से डरकर

(ख) अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लेकर

(ग) अग्निशिखाओं के नर्तन से बचकर

(घ) इनमें से कोई नहीं

30- आँधी हो, ओले-वर्षा हों, राह सुपरिचित है मेरी- पंक्ति का क्या आशय है?

(क) सरल रास्ता खोज लेना

(ख) ओले पड़ने पर घर में रहना

(ग) आँधी और बारिश में रास्ता भूल जाना

(घ) मुश्किल से मुश्किल स्थितियों में भी राह निकाल लेना

खंड- 'ब' - अभिव्यक्ति और जनसंचार माध्यम

किन्हीं **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

31- भारत में सबसे पहले छापाखाना कहाँ खुला?

(क) कोलकाता में

(ख) मुंबई में

(ग) दिल्ली में

(घ) गोवा में

32- छह ककारों का प्रयोग होता है-

(क) उल्टा पिरामिड शैली में

(ख) टेलीविजन में

(ग) सिनेमा में

(घ) पत्रकारिता में

33- ब्रेकिंग न्यूज का अर्थ है-

(क) कम शब्दों में तुरंत की महत्त्वपूर्ण घटना का प्रसारण

(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण

(ग) अधिक शब्दों में कल की घटना का प्रसारण

(घ) किसी खबर का रेडियो स्टेशन से सीधा प्रसारण

34- इंटरनेट पत्रकारिता का आशय है-

(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान

(ख) इंटरनेट पर वीडियो गेम का आदान-प्रदान

(ग) इंटरनेट पर पैसों का लेन-देन

(घ) इनमें से कोई नहीं

35- स्वतंत्र पत्रकार कहलाता है-

(क) किसी समाचार संगठन का नियमित एवं वेतनभोगी कर्मचारी

(ख) किसी समाचार संगठन का निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाला अनियमित कर्मचारी

(ग) किसी समाचार संगठन के लिए अपने लेख के लिए भुगतान पाने वाला पत्रकार

(घ) इनमें से 'क' और 'ख'

36- कूटवाचन का अर्थ है-

(क) संचारक द्वारा संदेश के लिए प्रयोग की गई कूटभाषा को उसी अर्थ में समझना

(ख) प्राप्तकर्ता द्वारा संदेश के लिए प्रयोग की गई कूटभाषा को उसी अर्थ में समझना

(ग) संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच तालमेल होना

(घ) 'क', 'ख' और 'ग'

खंड- 'स' - पाठ्य पुस्तक व अनुपूरक पुस्तक

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विहवलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

37- दिन का थका हुआ पंथी जल्दी-जल्दी चलता है- क्योंकि

(क) पंथी का रास्ता अंधकारमय है उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा है

(ख) उसे जीवन रूपी पथ में रात हो जाने की आशंका है और उसकी मंजिल भी साफ दिखाई दे रही है

(ग) पंथी का जीवन संघर्षमय है इसलिए वह मंजिल की तरफ तेजी से बढ़ता है

(घ) पंथी का रास्ता प्रकाशयुक्त है और उसकी मंजिल दिख रही है

38- चिड़ियाँ अपने पंखों में तेजी भरकर कहाँ लौटना चाहती हैं?

(क) अपने घोसलों की ओर जहाँ उनके बच्चे प्रतीक्षा कर रहे होंगे

(ख) उस पेड़ की ओर जहाँ उनके घोसले बने हैं

(ग) ऐसी जगह पर जहाँ उनके बच्चे रहते हैं

(घ) ऐसी डाली पर जहाँ उनका घोसला बना है

39- चिड़ियों के बच्चे किस बात की प्रत्याशा में घोसलों से झाँक रहे होंगे?

(क) माता-पिता के लौटने से उनको भूख और स्नेह की तृप्ति होगी

(ख) उन्हें घोसलों में बहुत डर लग रहा होगा, वे बचना चाहते होंगे

(ग) शिकारी उनका शिकार कर लेंगे

(घ) उनके पंख नहीं उगे हैं इसलिए वे उड़ नहीं सकते होंगे

40- कवि धीमे कदमों से क्यों चलता है?

(क) कवि बहुत ही उदास है क्योंकि समय बहुत तेजी से बीत रहा है

(ख) कवि उदास है क्योंकि उसके सामने न कोई मंजिल है और न ही कोई मिलने वाला

(ग) कवि को डर है कि कहीं उससे कोई गलती न हो जाए

(घ) इनमें से कोई नहीं

41- <u>दिन जल्दी-जल्दी ढलता है</u> - रेखांकित में अलंकार बताइए-

(क) उपमा

(ख) रूपक

(ग) पुनरुक्ति प्रकाश

(घ) अनुप्रास

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश **को ध्यानपूर्वक पढ़िए-**

इस दंड-विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी, जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं , पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। इसके अतिरिक्त परिश्रमी , तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम से सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा , क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगोझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया। काम वही करती थी , इसलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था। उसने छाँट-छाँट कर, ऊपर से असंतोष की मुद्रा के साथ और भीतर से पुलकित होते हुए जो कुछ लिया , वह सबसे अच्छा भी रहा, साथ ही परिश्रमी दंपति के निरंतर प्रयास से उसका सोना बन जाना भी स्वाभाविक हो गया।

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

42- लेखिका ने भक्तिन को खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी कहा है, क्योंकि-

(क) भक्तिन को कोई संतान नहीं हो रही थी

(ख) भक्तिन का पति उसे प्रेम नहीं करता था

(ग) भक्तिन की सास उसे बहुत परेशान करती थी

(घ) भक्तिन की कोख से केवल लड़कियों का ही जन्म हुआ

43- वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था- इस पंक्ति में किन दो पात्रों की चर्चा है?

(क) लेखिका और भक्तिन

(ख) भक्तिन और उसकी जिठानी

(ग) लछमिन और उसका पति

(घ) इनमें से सभी

44- उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगोझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया- इसमें मुहावरा है-

(क) अलगोझा करना

(ख) अँगूठा दिखाना

(ग) प्रेम के बल पर होना

(घ) इनमें से कोई नहीं

45- निम्नलिखित में से किस संबंध में भक्तिन का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था?

(क) खोटे सिक्कों वाली टकसाल-जैसी पत्नी के संबंध में

(ख) गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में

(ग) बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जाने वाली जिठानियों के संबंध में

(घ) बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी के संबंध में

46- परिश्रमी दंपति के निरंतर प्रयास से क्या परिवर्तन हुआ?

(क) गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि मूल्यवान बन गए

(ख) भक्तिन के हिस्से पर उसके पारिवारिक लोगों का अधिकार हो गया

(ग) जिठानियाँ अधिक धनवान बन गईं

(घ) पत्नी से पति को विरक्त कर दिया गया

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

47- लेखिका ने देहाती वृद्धा का नामकरण भक्तिन क्यों किया?

(क) वह एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या थी

(ख) उसके जीवन में सुख-समृद्धि और परिपूर्णता थी

(ग) उसके गले में पड़ी कंठी माला को देखकर

(घ) सेवक धर्म में उससे बढ़कर कोई नहीं था

48- लेखक के दूसरे मित्र क्या करने बाजार गए थे?

(क) घूमकर बाजार का आनंद लेने के लिए

(ख) मन खाली था इसलिए बाजार गए थे

(ग) ढेर सारी वस्तुएँ खरीदने के लिए लेकिन वापस लौटे तो लाए कुछ भी नहीं

(घ) अति आवश्यक वस्तु खरीदने के लिए

49- 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' के आधार पर बताइए कि कवि का मन विह्वल क्यों है?

(क) कवि के सामने कोई मंजिल नहीं है और न ही उसकी कोई प्रतीक्षा करने वाला है

(ख) कवि को जीवन में बहुत स्नेह मिला इसलिए

(ग) कवि को चिड़िया के बच्चों से बहुत लगाव है

(घ) ख और ग दोनों

50- चिड़िया की उड़ान और कविता की उड़ान में क्या अंतर है?

(क) चिड़िया की उड़ान असीमित है और कविता की उड़ान सीमित

(ख) न ही चिड़िया की उड़ान सीमित है और न ही कविता उड़ान सीमित है

(ग) चिड़िया में उड़ाने की क्षमता है किन्तु कविता में नहीं है

(घ) चिड़िया की उड़ान सीमित है जबकि कविता की उड़ान असीमित है

51- 'परदे पर वक्त की कीमत है'- इस काव्य-पंक्ति में मीडिया के किस रूप पर व्यंग्य है?

(क) टेलीविज़न पर

(ख) समाचार पत्र पर

(ग) रेडियो पर

(घ) इंटरनेट पर

52- कवि को गरबीली गरीबी क्यों स्वीकार है?

(क) क्योंकि कवि बालपन से ही गरीब है

(ख) क्योंकि यह दशा कवि को अपने संबोध्य से प्राप्त है

(ग) क्योंकि कवि कभी गरीबी से उबर नहीं सकता है

(घ) क्योंकि कवि में जीवन के प्रति हीनता का बोध है

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

53- चड्ढा ने यशोधर बाबू की कलाई घड़ी पर व्यंग्य करते हुए उनसे क्या पूछा?

(क) दफ़्तर की दीवाल घड़ी का हाल

(ख) किशन दा की कलाई घड़ी का हाल

(ग) उनकी चूनेदानी का हाल

(घ) यशोधर बाबू की दीवाल घड़ी का हाल

54- यशोधर बाबू परिवार के किस आचार-व्यवहार को अपनाना चाहते थे?

(क) संयुक्त परिवार के आचार-व्यवहार को

(ख) मिश्रित परिवार के आचार-व्यवहार को

(ग) एकल परिवार के आचार-व्यवहार को

(घ) इनमें से सभी के आचार-व्यवहार को

55- यशोधर बाबू किस मंत्रालय में बतौर सेक्शन आफ़िसर कार्यरत थे?

(क) गृह मंत्रालय में

(ख) विदेश मंत्रालय में

(ग) शिक्षा मंत्रालय में

(घ) विज्ञापन कंपनी में

56- 'जूझ' पाठ में लेखक की माँ लेखक को किस कक्षा तक पढ़ाना चाहती थी?

(क) आठवीं कक्षा तक

(ख) पाँचवीं कक्षा तक

(ग) दसवीं कक्षा तक

(घ) सातवीं कक्षा तक

57- मराठी भाषा के शिक्षक कौन थे ?

(क) न. वा. सौंदलगेकर

(ख) दत्ता जी राव

(ग) वसंत पाटिल

(घ) आनंद यादव

58- लेखक को पढ़ने के लिए उसकी माँ एक झूठ का सहारा लेती है। वह झूठ था-

(क) जंगल में कंडे चुनना।

(ख) साग-भाजी देने के लिए आई थी- दत्ता जी राव से कहना।

(ग) गन्ने की फसल कटवाना।

(घ) खेतों में काम करने की शर्त मनवाना।

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र : 2021-22

कक्षा-बारहवीं

विषय- हिन्दी (आधार) व विषय कोड - 302

निर्धारित समय : 90 मिनट अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश:-

1. इस प्रश्नपत्र में तीन खंड 'अ', 'ब' और 'स'. हैं।
2. खंड 'अ' में तीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पंद्रह प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड 'ब' में छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।
4. खंड 'स' में बाईस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल बीस प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
5. प्रश्नों के उत्तर देने से पहले दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
6. दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित का चयन कीजिए।

खंड- 'क' अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न क्रम	उत्तर	अंक
1.	(ग) शिक्षा के तहत दी गई परियोजना को तैयार करने में	1
2.	(ग) अख़बार के अलावा भी अपनी पसंद की बातें एकत्रित करने में	1
3.	(ख) तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने से	1
4.	(क) हर व्यक्ति इसे अलग ढंग से, अपने तरीके से तैयार कर सकता है	1
5.	(घ) सबका अलग-अलग होता है	1
6.	(ख) प्रत्यय	1
7.	(ख) समस्याओं के निदान के लिए और समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए	1
8.	(ग) 'क' और 'ख' दोनों	1
9.	(क) उपसर्ग	1
10.	(क) शैक्षिक परियोजना	1
11.	(ख) तीर्थ	1
12.	(ग) वे स्थान, वे सभाएँ तथा वे मंच जिन पर एक से अधिक भाषाएँ एकत्र होती हैं	1
13.	(क) भावों और विचारों का मिलन होता है	1
14.	(क) भाषाओं के संगम को	1
15.	(ख) भाषाओं के तीर्थों में जो भी भारतवासी श्रद्धा से स्नान करता है	1

16.	(क) विभिन्न प्रदेशों का पारस्परिक ज्ञान उतनी ही तेजी से बढ़ता जाएगा	1
17.	(ग) अखिल भारतीय मंच आप-से-आप प्रकट होने लगा है	1
18.	(ग) एक, दो, और तीन	1
19.	(ग) वि	1
20.	(घ) इक	1

अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

21.	(क) क्योंकि वर्तमान मशीनी दौर में बात करने के लिए किसी के पास समय नहीं है	1
22.	(ग) जीवन क्षणभंगुर है, किसी भी समय मृत्यु हो सकती है	1
23.	(घ) घुटनों में माथा रखने से पोखर पार नहीं होता है	1
24.	(ख) रूपक	1
25.	(ख) पीड़ित लोगों के जीवन के दुःख-दर्द को नहीं समझ पाने से	1
26.	(ग) अविराम अलबेले पथिक के चरण को	1
27.	(ग) रूपक	1
28.	(क) समय की कमजोर ऊँची दीवार	1
29.	(ख) अविराम निरंतर तन-मन में उन्माद लेकर	1
30.	(घ) मुश्किल से मुश्किल स्थितियों में भी राह निकाल लेना	1

खंड- 'ब' अभिव्यक्ति और जनसंचार माध्यम

31.	(घ) गोवा में	1
32.	(घ) पत्रकारिता में	1
33.	(क) कम शब्दों में तुरंत की महत्त्वपूर्ण घटना का प्रसारण	1
34.	(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान	1
35.	(ग) किसी समाचार संगठन के लिए अपने लेख के लिए भुगतान पाने वाला पत्रकार	1
36.	(ख) प्राप्तकर्ता द्वारा संदेश के लिए प्रयोग की गई कूटभाषा को उसी अर्थ में समझना	1

खंड- 'स' - पाठ्य पुस्तक (काव्यांश)

37.	(ख) उसे जीवन रूपी पथ में रात हो जाने की आशंका है और उसकी मंजिल भी साफ दिखाई दे रही है	1
38.	(क) अपने घोसलों की ओर जहाँ उनके बच्चे प्रतीक्षा कर रहे होंगे	1
39.	(क) माता-पिता के लौटने से उनको भूख और स्नेह की तृप्ति होगी	1
40.	(ख) कवि उदास है क्योंकि उसके सामने न कोई मंजिल है और न ही कोई मिलने वाला	1
41.	(ग) पुनरुक्ति प्रकाश	1

पाठ्य पुस्तक (गद्यांश)

42.	(घ) भक्तिन की कोख से केवल लड़कियों का ही जन्म हुआ	1
43.	(ग) लछमिन और उसका पति	1
44.	(ख) अँगूठा दिखाना	1
45.	(ख) गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में	1

46.	(क) गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि मूल्यवान बन गए	1

पाठ्य पुस्तक के पठित पाठों पर आधारित प्रश्न

47.	(ग) उसके गले में पड़ी कंठी माला को देखकर	1
48.	(ग) ढेर सारी वस्तुएँ खरीदने के लिए लेकिन वापस लौटे तो लाए कुछ भी नहीं	1
49.	(क) कवि के सामने कोई मंजिल नहीं है और न ही उसकी कोई प्रतीक्षा करने वाला है	1
50.	(घ) चिड़िया की उड़ान सीमित है जबकि कविता की उड़ान असीमित है	1
51.	(क) टेलीविज़न पर	1
52.	(ख) क्योंकि यह दशा कवि को अपने संबोध्य से प्राप्त है	1

अनुपूरक पुस्तक के पाठों पर आधारित प्रश्न

53.	(ग) उनकी चूनेदानी का हाल	1
54.	(क) संयुक्त परिवार के आचार-व्यवहार को	1
55.	(क) गृह मंत्रालय में	1
56.	(घ) सातवीं कक्षा तक	1
57.	(क) न. वा. सौंदलगेकर	1
58.	(ख) साग-भाजी देने के लिए आई थी- दत्ता जी राव से कहना।	1

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र : 2021-22

कक्षा-बारहवीं

विषय- हिन्दी (आधार) व विषय कोड - 302

निर्धारित समय : 90 मिनट अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश:-

1. इस प्रश्नपत्र में तीन खंड 'अ', 'ब' और 'स'. हैं।
2. खंड 'अ' में तीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पंद्रह प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड 'ब' में छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।
4. खंड 'स' में बाईस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल बीस प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
5. प्रश्नों के उत्तर देने से पहले दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
6. दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित का चयन कीजिए।

खंड- 'अ' - अपठित बोध

प्रश्न- निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए-

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है। प्रथम वह , जो हमें जीवन-यापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय वह, जो हमें जीना सिखाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन-निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो; माता-पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। पहली विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है , वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेने वाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारु रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन-शक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्यपथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही वह अपने समाज , जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है , तो उसका जीवन भी मानव-जीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गर्दभ बन जाता है या पूँछ-सींगविहीन पशु कहा जाता है।

वर्तमान भारत में दूसरी विद्या का प्राय: अभाव दिखाई देता है , परंतु पहली विद्या का रूप भी विकृत ही है, क्योंकि न तो स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीविकार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है , जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है; सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं , उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। यह शिक्षा कुछ सीमा तक

हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किंतु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए , जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियाँ एक के बाद एक आती हैं , इनमें व्यतिक्रम नहीं होना चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव-जीवन का चारु प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह तो भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने 'अन्न' से 'आनंद' की ओर बढ़ने को जो 'विद्या का सार' कहा था, वह सर्वथा समीचीन ही था।

किन्हीं **दस प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 10x1=10

1- किन लोगों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है?

(क) इतिहास वेत्ताओं के अनुसार

(ख) भूगोल वेत्ताओं के अनुसार

(ग) तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार

(घ) काव्य-शास्त्रियों के अनुसार

2- द्वितीय विद्या हमें क्या सिखाती है?

(क) ज्ञान

(ख) मरना

(ग) ध्यान

(घ) जीना

3- किस विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है?

(क) चौथी विद्या

(ख) पहली विद्या

(ग) दूसरी विद्या

(घ) तीसरी विद्या

4- पूँछ-सींगविहीन पशु किसके लिए प्रयोग हुआ है?

(क) पशु के लिए

(ख) पूँछ के लिए

(ग) संसार के लिए

(घ) विद्याहीन मनुष्य के लिए

5- वर्तमान भारत में किस विद्या का प्राय: अभाव दिखाई देता है?

(क) चौथी विद्या

(ख) पहली विद्या

(ग) दूसरी विद्या

(घ) तीसरी विद्या

6- 'सुसभ्य' शब्द में 'सु' क्या है?

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

7- आज का युवक अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है-

(क) घर-घर जाकर शिक्षा देने में ही

(ख) अपनी विद्वता दिखने के चक्कर में ही

(ग) नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही

(घ) इनमें से कोई नहीं

8- भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम किस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए?

(क) जो उपयोगी न हो

(ख) जो उपयोगी हो

(ग) जो आवश्यक न हो

(घ) जो आवश्यक हो

9- 'भारतीय' शब्द में 'ईय' क्या है?

(क) उपसर्ग

(ख) प्रत्यय

(ग) संधि

(घ) समास

10- वर्तमान शिक्षा-पद्धति की विशेषताओं को .....है।

(क) सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता।

(ख) सर्वथा नकारा भी जा सकता।

(ग) इनमें से दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

अथवा

परिश्रम को सफलता की कुंजी माना गया है। जीवन में सफलता पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है। कहा भी है-उद्योगी पुरुषसिंह को लक्ष्मी वरण करती है। जो भाग्यवादी हैं , उन्हें कुछ नहीं मिलता। वे

हाथ-पर-हाथ धरे रह जाते हैं। अवसर उनके सामने से निकल जाता है। भाग्य कठिन परिश्रम का ही दूसरा नाम है।

प्रकृति को ही देखिए। सारे जड़-चेतन अपने कार्य में लगे रहते हैं। चींटी को भी पल-भर चैन नहीं। मधुमक्खी जाने कितनी लंबी यात्रा कर बूंद-बूंद मधु जुटाती है। मुरगे को सुबह बाँग लगानी ही है। फिर मनुष्य को बुद्ध मिली है, विवेक मिला है। वह निठल्ला बैठे, तो सफलता की कामना करना व्यर्थ है।

विश्व में जो देश आगे बढ़े हैं , उनकी सफलता का रहस्य कठिन परिश्रम ही है। जापान को दूसरे विश्व-युद्ध में मिट्टी में मिला दिया गया था। उसकी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई थी। दिन-रात जी-तोड़ श्रम करके वह पुन: विश्व का प्रमुख औद्योगिक देश बन गया। चीन को शोषण से मुक्ति भारत से देर में मिली , वह भी श्रम के बल पर आज भारत से आगे निकल गया है। जर्मनी ने भी युद्ध की विभीषिकाएँ झेलीं, पर श्रम के बल पर सँभल गया। परिश्रम का महत्व वे जानते हैं , जो स्वयं अपने बल पर आगे बढ़े हैं। संसार के अनेक महापुरुष परिश्रम के प्रमाण हैं। कालिदास , तुलसी, टैगोर और गोकीं परिश्रम से ही अमर हुए। संसार के इतिहास में अनेक चमकते सितारे केवल परिश्रम के ही प्रमाण हैं।

बड़े-बड़े धन-कुबेर निरंतर श्रम से ही असीम संपत्ति के स्वामी बने हैं। फ़ोर्ड साधारण मैकेनिक था। धीरू भाई अंबानी शिक्षक थे। लगन और दृढ़ संकल्प परिश्रम को सार्थक बना देते हैं। गरीबी के साथ परिश्रम जुड़ जाए, तो सफलता मिलती है और अमीरी के साथ श्रमहीनता या निठल्लापन आ जाए , तो असफलता मुँह बाये खड़ी रहती है।

भारतीय कृषक के परिश्रम का ही फल है कि देश में हरित क्रांति हुई। अमेरिका के सड़े गेहूँ से पेट भरने वाला देश आज गेहूँ का निर्यात कर रहा है। कल-कारखाने रात-दिन उत्पादन कर रहे हैं। हमारे वस्त्र के बाजारों में बिकते हैं। उन्नत औद्योगिक देश भी हमसे वैज्ञानिक उपकरण खरीद रहे हैं। किसी क्षेत्र में हम पिछड़े हैं , तो उसका कारण है , यहाँ परिश्रम का अभाव। विद्यार्थी जीवन तो परिश्रम की पहली पाठशाला है। यहाँ से परिश्रम की आदत पड़ जाए तो ठीक , अन्यथा जाने कहाँ-कहाँ की ठोकरें खानी पड़े। एडीसन से किसी ने कहा-आपकी सफलता का कारण आपकी प्रतिभा है। एडीसन ने झटपट सुधारा-प्रतिभा के माने एक औस बुद्ध और एक टन परिश्रम।

11- परिश्रमी पुरुष के लिए क्या कहा गया है?

(क) परिश्रम को सफलता की कुंजी माना गया है

(ख) जीवन में सफलता पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है

(ग) उद्योगी पुरुषसिंह को लक्ष्मी वरण करती है

(घ) जो भाग्यवादी हैं, उन्हें कुछ नहीं मिलता है

12- प्रकृति को ही देखिए - लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

(क) मनुष्य को प्रकृति से परिश्रम की सीख लेने के लिए

(ख) प्रकृति से आराम करने की प्रेरणा लेने के लिए

(ग) प्रकृति और मनुष्य दोनों एक ही हैं

(घ) मनुष्य प्रकृति को भूलकर अपना भला नहीं कर सकता

13- दूसरे विश्व-युद्ध के बाद जापान किस तरह विश्व का प्रमुख औद्योगिक देश बन गया?

(क) ब्रिटेन और एशिया के अन्य देशों की सहायता से

(ख) उसके पास औद्योगिक साधन पहले मौजूद थे

(ग) अमरीका और अन्य देशों से मदद लेकर

(घ) छिन्न-भिन्न होने के बावजूद दिन-रात जी-तोड़ श्रम करके

14- लेखक ने चीन, जापान और जर्मनी का उदहारण दिया है, क्योंकि

(क) ये सभी देश द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल थे

(ख) चीन ने जापान पर आक्रमण कर दिया था

(ग) जर्मनी का उदय द्वितीय विश्व युद्ध का मुख्य कारण था

(घ) ये सभी देश परिश्रम के बल दुनिया में आगे बढ़े

15- संसार के इतिहास में अनेक चमकते सितारे किस बात के प्रमाण हैं?

(क) संघर्ष के बहुत बड़े उदाहरण हैं

(ख) केवल परिश्रम से ही उन्नति की जा सकती है

(ग) दुनिया को बदलकर रख देने के

(घ) इनमें से कोई नहीं

16- कब असफलता मुँह बाये खड़ी रहती है?

(क) व्यक्ति में अमीरी के साथ श्रमहीनता या निठल्लापन आने से

(ख) एक-दूसरे की कमियाँ निकालने से

(ग) जब लगन और दृढ़ संकल्प परिश्रम को सार्थक बना देते हैं

(घ) यदि गरीबी के साथ परिश्रम जुड़ जाए तो सफलता मिलती है

17- लेखक ने भारतीय कृषकों के परिश्रम का क्या निष्कर्ष निकला है?

(क) भारतीय निवासियों के सपने टूट रहे हैं और कोई लाभ नहीं हो रहा है

(ख) दुनिया के अन्य देश हमसे आगे हैं

(ग) देश में हरित क्रांति हुई और देश आज गेहूँ का निर्यात कर रहा है

(घ) देश पर कोई असर नहीं पड़ा और हम पिछड़ रहे हैं

18- लेखक ने विद्यार्थी जीवन को क्या माना है?

(क) सफलता की पहली पाठशाला

(ख) परिश्रम की दूसरी पाठशाला

(ग) असफलता की दूसरी पाठशाला

(घ) परिश्रम की पहली पाठशाला

19- 'भारतीय' शब्द में प्रत्यय है-

(क) भार

(ख) ईय

(ग) वि

(घ) भि

20- 'वैज्ञानिक' शब्द में मूल शब्द है-

(क) वि

(ख) ज्ञान

(ग) विज्ञान

(घ) इक

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश **को ध्यान पूर्वक पढ़िए-**

जिसमें स्वदेश का मान भरा
आजादी का अभिमान भरा
जो निर्भय पथ पर बढ़ आए
जो महाप्रलय में मुस्काए
जो अंतिम दम तक रहे डटे
दे दिए प्राण, पर नहीं हटे
जो देश-राष्ट्र की वेदी पर
देकर मस्तक हो गए अमर
ये रक्त-तिलक-भारत-ललाट!
उनको मेरा पहला प्रणाम !

फिर वे जो ऑधी बन भीषण
कर रहे आज दुश्मन से रण
बाणों के पवि-संधान बने
जो ज्वालामुख-हिमवान बने
हैं टूट रहे रिपु के गढ़ पर
बाधाओं के पर्वत चढ़कर
जो न्याय-नीति को अर्पित हैं
भारत के लिए समर्पित हैं
कीर्तित जिससे यह धरा धाम
उन वीरों को मेरा प्रणाम

श्रद्धानत कवि का नमस्कार
दुर्लभ है छंद-प्रसून हार
इसको बस वे ही पाते हैं

जो चढ़े काल पर आते हैं
हुम्कृति से विश्व काँपते हैं
पर्वत का दिल दहलाते हैं
रण में त्रिपुरांतक बने शर्व
कर ले जो रिपु का गर्व खर्च
जो अग्नि-पुत्र, त्यागी, अकाम
उनको अर्पित मेरा प्रणाम

किन्हीं **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

21- कवि का पहला प्रणाम किसे है?

(क) रक्त-तिलक-भारत-ललाट! को

(ख) कुल-तिलक-धरा-ललाट! को

(ग) इनमें से दोनों को

(घ) इनमें से कोई नहीं

22- बाधाओं के पर्वत चढ़कर वीर सपूत क्या कर रहें हैं ?

(क) शत्रुओं के घर में रह रहे हैं

(ख) दुश्मनों से हाथ मिला रहे हैं

(ग) शत्रुओं के गढ़ पर आक्रमण कर रहे हैं

(घ) इनमें से कोई नहीं

23- भारत की धरा धाम किससे कीर्तित है?

(क) समर्पित वीरों से

(ख) कुटिल दुश्मनों से

(ग) साधु-सन्यासियों से

(घ) इनमें से कोई नहीं

24- दुर्लभ है छंद-प्रसून हार- इस पंक्ति में अलंकार है-

(क) अनुप्रास

(ख) रूपक

(ग) उपमा

(घ) इनमें से कोई नहीं

25- अग्नि-पुत्र, त्यागी, अकाम के लिए कवि क्या करता है?

(क) उनको कवि का प्रणाम अर्पित नहीं है

(ख) उनको कवि समझ नहीं पाता है

(ग) उनको कवि का प्रणाम अर्पित है

(घ) इनमें से कोई नहीं

अथवा

मन समर्पित, तन समर्पित
और यह जीवन समर्पित !
चाहता हूँ, देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा फिर भी निवेदन।
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण।
गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण-कण समर्पित!
चाहता हूँ, देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

कर रहा आराधना मैं आज तेरी,
एक विनती तो करो स्वीकार मेरी।
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी।
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित !
चाहता हूँ, देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो
गाँव मेरे, द्वार, घर, आँगन क्षमा दो।
देश का जयगान अधरों पर सजा है
देश का ध्वज हाथ में केवल थमा दी।
ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण-तृण समर्पित!
चाहता हूँ, देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

26- देशभक्त देश की धरती को क्या-क्या समर्पित करना चाहता है?

(क) देशभक्त अपने तन और मन के साथ-साथ अपना पूरा जीवन समर्पित चाहता है

(ख) देशभक्त धन-दौलत के साथ-साथ अपना पूरा घर समर्पित चाहता है

(ग) वह धरती के ऋण से इतना दबा है कि उसके पास जो कुछ है, सब देना चाहता है

(घ) वह अपने लिए कुछ न कुछ बचाकर बाकी सब देना चाहता है

27- आयु का <u>क्षण-क्षण</u> समर्पित - पंक्ति में अलंकार है-

(क) अनुप्रास

(ख) उपमा

(ग) रूपक

(घ) पुनरुक्ति प्रकाश

28- 'थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी, कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण' इस पंक्ति का आशय है-

(क) देशभक्त पूजा की थाल समर्पित करना चाहता है

(ख) देशभक्त का धरती के प्रति दया भाव व्यक्त हुआ है

(ग) देशभक्त का सम्पूर्ण समर्पण भाव व्यक्त हुआ है

(घ) इनमें से कोई नहीं

29- गाँव मेरे, द्वार, घर, आँगन क्षमा दो- इस पंक्ति में देशभक्त किससे क्षमा माँगता है?

(क) गाँव, घर, द्वार और आँगन के आसमान से

(ख) द्वार, आँगन गाँव और घर के लोगों से

(ग) हर के बंधन से मुक्त होकर माता-पिता से

(घ) अपने देश की धरती के लिए स्थानीय परिवेश से

30- किसके अधरों पर देश का जयगान और हाथ में ध्वज सजा है?

(क) समर्पित देशभक्त के

(ख) पूर्ण समर्पित योद्धा के

(ग) समर्पित वीर सिपाही के

(घ) आज के नौजवान के

खंड- 'ब' - अभिव्यक्ति और जनसंचार माध्यम

किन्हीं **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

31- छापाखाने के आविष्कार का श्रेय किसे दिया जाता है?

(क) जे एल बेयर्ड को

(ख) गुटेनबर्ग को

(ग) पं. जुगल किशोर को

(घ) जी मार्कोनी को

32- - इंट्रो, मुखड़ा और बाडी किसके महत्वपूर्ण भाग हैं-

(क) समाचार पत्र के

(ख) टेलीविजन के

(ग) उलटा पिरामिड शैली के

(घ) इंटरनेट के

33- टेलीविज़न से संबंधित शब्द 'लाइव' का क्या अर्थ है?

(क) किसी खबर का सिनेमा हॉल से सीधा प्रसारण

(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण

(ग) किसी खबर का स्टूडियो से सीधा प्रसारण

(घ) किसी खबर का रेडियो स्टेशन से सीधा प्रसारण

34- इंटरनेट पत्रकारिता का आशय है-

(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान

(ख) इंटरनेट पर वीडियो गेम का आदान-प्रदान

(ग) इंटरनेट पर पैसों का लेन-देन

(घ) इनमें से कोई नहीं

35- भारत में सबसे पहला समाचार पत्र कब और कहाँ से प्रकाशित हुआ?

(क) 1835 ई. में गोवा से प्रकाशित हुआ

(ख) 1780 ई. में जेम्स ऑगस्ट हिकी का 'बंगाल गजट' कोलकाता से प्रकाशित हुआ

(ग) 1826 ई. में कोलकाता से प्रकाशित हुआ

(घ) 1885 ई. में मुंबई से प्रकाशित हुआ

36- पत्रकारिता से क्या आशय है?

(क) अखबार, रेडियो, टेलीविजन या इंटरनेट के माध्यम से खबरों का संचार ही पत्रकारिता है

(ख) विविध क्षेत्रों से ख़बरों का संकलन करना पत्रकारिता कहलाती है

(ग) संवाददाताओं से प्राप्त ख़बरों में काट-छाँट करना ही पत्रकारिता है

(घ) उक्त तीनों सही हैं

खंड- 'स' - पाठ्य पुस्तक व अनुपूरक पुस्तक

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

फिर हम परदे पर दिखलाएंगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर
बहुत बड़ी तसवीर
और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए, देखिए
हमें दोनों को एक संग रुलाने हैं

आप और वह दोनों
कैमरा बस करो
नहीं हुआ, रहने दो
(परदे पर वक्त की कीमत है)

अब मुसकुराएँगे हम
आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)
धन्यवाद!

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5 x1=05

37- संवाददाता दूरदर्शन पर अपाहिज व्यक्ति के दुःख-दर्द को किस तरह से दिखलाता है?

(क) फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर

(ख) अपाहिज व्यक्ति की बहुत बड़ी तस्वीर

(ग) अपाहिज व्यक्ति के होंठों पर एक कसमसाहट

(घ) अपाहिज व्यक्ति की फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर और उसके होंठों की कसमसाहट

38- संवाददाता दर्शकों को धैर्य दिलाते हुए एक और कोशिश की बात क्यों करता है?

(क) संवाददाता अपने चैनल को बदनाम करना चाहता है

(ख) संवाददाता अपने उद्देश्य में सफल होकर अपने चैनल की लोकप्रियता बढ़ाना चाहता है

(ग) संवाददाता अपाहिज व्यक्ति के साथ-साथ दर्शकों को भी रुलाना चाहता है

(घ) अपाहिज व्यक्ति अपने दुःख-दर्द को आसानी से बेच सकेगा

39- 'अब मुसकुराएँगे हम' - इस पंक्ति से क्या आशय निकलता है?

(क) संवाददाता सामाजिक उद्देश्य से युक्त अपने कार्यक्रम में सफल हुआ

(ख) संवाददाता अपने कारोबारी उद्देश्य युक्त कार्यक्रम में सफल हुआ

(ग) अपाहिज व्यक्ति का दुःख-दर्द लोगों के सामने आसानी से प्रस्तुत हुआ

(घ) दर्शक अपाहिज व्यक्ति का दुःख-दर्द देखकर रोने लगे

40- 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के रचनाकार हैं-

(क) महादेवी वर्मा

(ख) जैनेन्द्र कुमार

(ग) रघुवीर सहाय

(घ) कुँवर नारायण

41- आशा है <u>आप उसे उसकी अपंगता</u> की पीड़ा मानेंगे - रेखांकित में अलंकार बताइए-

(क) उपमा

(ख) रूपक

(ग) यमक

(घ) अनुप्रास

प्रश्न- निम्नलिखित पद्यांश **को ध्यानपूर्वक पढ़िए-**

हाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति-शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से

लाभ उठा सकते हैं न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी।

इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक-दूसरे को ठगने की घात में हों। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखता है और यह बाजार का नहीं, बल्कि इतिहास का, सत्य माना जाता है। ऐसे बाजार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि शोषण होने लगता है; तब कपट सफल होता है, निष्कपट शिकार होता है।

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

42- बाजार को सार्थकता कौन-सा मनुष्य देता है?

(क) जो बाजार में अपनी पर्चेजिंग पावर का इस्तेमाल करता है

(ख) जो नहीं जानता है कि वह बाजार से क्या खरीदना चाहता है

(ग) जो जानता है कि वह बाजार से क्या खरीदना चाहता है

(घ) जो बाजार जाकर बिना जरूरत का सामान खरीदता है

43- 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में लोग अपने पैसे से बाजार क्या को देते हैं?

(क) एक अद्भुत दैवीय शक्ति और व्यंग्य की शक्ति

(ख) एक विनाशक शक्ति-शैतानी शक्ति और व्यंग्य की शक्ति

(ग) एक अद्भुत मानवीय शक्ति और एक ईश्वरीय शक्ति

(घ) इनमें से सभी

44- बाजार के बाजारूपन से क्या मतलब है?

(क) बाजार में कपट का बढ़ना और आपसी सद्भाव में कमी होना

(ख) बाजार में कपट में कमी आना का और आपसी सद्भाव का बढ़ना

(ग) बाजार में न कपट का बढ़ना और न आपसी सद्भाव में कमी होना

(घ) इनमें से सभी

45- बाजार में सद्भाव के घटने का आदमी पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) वे आपस में झगड़ने लगते हैं

(ख) वे आपस में गले मिलने लगते हैं

(ग) उनमें बहुत कमियाँ आ जाती हैं

(घ) वे आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करने लगते हैं

46- एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दिखता है- लेखक के मत से यह किस विषय का सत्य है?

(क) बाजार का

(ख) इतिहास का

(ग) अर्थशास्त्र का

(घ) इनमें से सभी का

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

47- भक्तिन बिना पढ़े ही पढ़े-लिखों की गुरु बन गयी। कैसे?

(क) लेखिका के साथ रहकर अपने को विशेष बुद्धिमान साबित करके

(ख) किसी के अक्षरों की बनावट एवं हाथों की मंथरता पर टीका-टिप्पणी का अधिकार पाकर

(ग) घर-गृहस्थी के काम-काज करते हुए लेखिका को सहायता पहुँचाकर

(घ) स्वयं को सेवक धर्म में सबसे बड़ा बताकर

48- लेखक ने भगत जी को श्रेष्ठ प्राणी बताकर क्या साबित करने का प्रयास किया है?

(क) भगत जी अधिक पढ़े-लिखे नहीं हैं किन्तु बाजार का सही इस्तेमाल करना वे जानते हैं

(ख) बहुत से लोग बिना सोचे-समझे खरीददारी करके बाजार का दुरूपयोग करते हैं

(ग) बाजार का ठीक तरह से उपयोग करने में ही उसकी सार्थकता है

(घ) क और ख दोनों

49- दिन जल्दी जल्दी ढलता है- पंक्ति की आवृत्ति का क्या आशय है?

(क) सुबह सूर्य उदित होकर साँझ को डूब जाता है

(ख) समय के साथ ढलने में ही हम सब की भलाई है

(ग) समय निरंतर गतिशील है और किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है

(घ) पथिक और चिड़िया के लिए गतिशील है लेकिन कवि के लिए स्थिर है

50- बच्चों के खेल के माध्यम से कवि ने कविता के विषय में क्या स्पष्ट किया है?

(क) कविता का सौंदर्य कभी नहीं समाप्त होता है

(ख) कविता में निहित भावनाएं लोगों के दिलों में एकता स्थापित कराती हैं

(ग) जैसे फूल खिलकर मुरझा जाता है वैसे ही कविता का सौंदर्य भी नष्ट हो जाता है

(घ) चिड़िया तो उड़ती है लेकिन कविता में कोई उड़ान नहीं होती

51- 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में संवाददाता का अपाहिज के प्रति नजरिया कैसा है?

(क) क्रूरता से भरा हुआ और कार्यक्रम को रोचक बनाने वाला

(ख) संवेदनशील और कार्यक्रम को रोचक बनाने वाला

(ग) लोगों में संवेदनहीनता पैदा करने वाला

(घ) शारीरिक चुनौती झेलने वाले व्यक्ति को महत्त्व दिलाने वाला

52- पाताली अँधेरे की गुहाओं में लापता होने का क्या मतलब है ?

(क) कवि अपने प्रिय (संबोध्य) को बड़ी गहराई तक भूल जाए

(ख) कवि पाताल में जाकर छिप जाए

(ग) लोग कवि को कहीं भी खोजें लेकिन वह किसी को न मिले

(घ) कवि इस तरह अपने को महत्वपूर्ण बना लेगा

निम्नलिखित **पाँच प्रश्नों** के उत्तर के लिए सबसे उचित विकल्प का चयन कीजिए- 5x1=05

53- दफ़्तर से निकलने के बाद यशोधर बाबू सबसे पहले कहाँ जाते हैं?

(क) गोल मार्केट

(ख) पहाड़गंज

(ग) किशन दा के क्वार्टर

(घ) बिड़ला मंदिर

54- लेखक के अनुसार यशोधर बाबू गधा पचीसी के दौर से क्यों नहीं गुजरे?

(क) उनका संयुक्त परिवार था और उनकी देख-भाल करने वाले थे

(ख) उनका एकल परिवार था और सभी अपने काम में व्यस्त थे

(ग) बहुत पहले से ही गृहस्थी की देखभाल की जिम्मेदारी उन पर आ गई थी

(घ) उन्होंने किशन दा के आचार-व्यवहार को पूरी तरह से अपना लिया था

55- यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ आधुनिक हो जाती है, क्योंकि-

(क) यशोधर बाबू अपनी पत्नी को बहुत चिढ़ाते थे

(ख) उनके बच्चे यशोधर बाबू के खिलाफ थे

(ग) यशोधर बाबू की पत्नी किशन दा के आदर्शों के खिलाफ थी

(घ) यशोधर बाबू की पत्नी मातृसुलभ कमजोरी के कारण बच्चों का पक्ष लेती है

56- 'जूझ' पाठ में दत्ता जी राव सरकार का लेखक के प्रति रवैया कैसा था?

(क) वे लेखक के प्रति बहुत कठोर थे इसलिए पाठशाला भेजने के पक्ष में थे

(ख) वे लेखक के पिता के प्रति बहुत कठोर थे इसलिए पाठशाला नहीं भेजना चाहते थे

(ग) वे लेखक के प्रति बहुत संवेदनशील थे इसलिए पाठशाला भेजने के पक्ष में थे

(घ) वे लेखक की माँ का मन नहीं तोड़ना चाहते थे इसलिए पाठशाला भेजने के पक्ष में थे

57- कविता से लगाव के बाद लेखक को अकेलापन कैसा लगता था?

(क) अच्छा लगता था, वह मास्टर की चाल में कविता गा सकता था

(ख) बहुत खटकता था, उसका खेती के काम में मन नहीं लगता था

(ग) न अच्छा लगता था और न ही खटकता था

(घ) क और ख दोनों

58- लेखक को कौन-सी भाषा झटपट समझ में आने लगी?

(क) हिन्दी भाषा

(ख) मराठी भाषा

(ग) अंग्रेजी भाषा

(घ) गणित

शिक्षा एवं प्रशिक्षण का आंचलिक संस्थान, चंडीगढ़

प्रतिदर्श प्रश्नपत्र : 2021-22

कक्षा-बारहवीं

विषय- हिन्दी (आधार) व विषय कोड - 302

निर्धारित समय : 90 मिनट अधिकतम अंक : 40

सामान्य निर्देश:-

1. इस प्रश्नपत्र में तीन खंड 'अ', 'ब' और 'स'. हैं।
2. खंड 'अ' में तीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पंद्रह प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
3. खंड 'ब' में छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं ।
4. खंड 'स' में बाईस वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं जिनमें से केवल बीस प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
5. प्रश्नों के उत्तर देने से पहले दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़िए और उनका पालन कीजिए।
6. दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित का चयन कीजिए।

खंड- 'क' अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न क्रम	उत्तर	अंक
1.	(ग) तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार	1
2.	(घ) जीना	1
3.	(ख) पहली विद्या	1
4.	(घ) विद्याहीन मनुष्य के लिए	1
5.	(ग) दूसरी विद्या	1
6.	(क) उपसर्ग	1
7.	(ग) नौकरी की तलाश में अर्जियाँ लिखने में ही	1
8.	(घ) जो आवश्यक हो	1
9.	(ख) प्रत्यय	1
10.	(क) सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता।	1
11.	(ग) उद्योगी पुरुषसिंह को लक्ष्मी वरण करती है	1
12.	(क) मनुष्य को प्रकृति से परिश्रम की सीख लेने के लिए	1
13.	(घ) छिन्न-भिन्न होने के बावजूद दिन-रात जी-तोड़ श्रम करके	1
14.	(घ) ये सभी देश परिश्रम के बल दुनिया में आगे बढ़े	1
15.	(ख) केवल परिश्रम से ही उन्नति की जा सकती है	1
16.	(क) व्यक्ति में अमीरी के साथ श्रमहीनता या निठल्लापन आने से	1
17.	(ग) देश में हरित क्रांति हुई और देश आज गेहूँ का निर्यात कर रहा है	1
18.	(घ) परिश्रम की पहली पाठशाला	1

19.	(ख) ईय	1
20.	(ख) ज्ञान	1

अपठित पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

21.	(क) रक्त-तिलक-भारत-ललाट! को	1
22.	(ग) शत्रुओं के गढ़ पर आक्रमण कर रहे हैं	1
23.	(क) समर्पित वीरों से	1
24.	(ख) रूपक	1
25.	(ग) उनको कवि का प्रणाम अर्पित है	1
26.	(क) देशभक्त अपने तन और मन के साथ-साथ अपना पूरा जीवन समर्पित चाहता है	1
27.	(घ) पुनरुक्ति प्रकाश	1
28.	(ग) देशभक्त का सम्पूर्ण समर्पण भाव व्यक्त हुआ है	1
29.	(घ) अपने देश की धरती के लिए स्थानीय परिवेश से	1
30.	(क) समर्पित देशभक्त के	1

खंड- 'ब' अभिव्यक्ति और जनसंचार माध्यम

31.	(ख) गुटेनबर्ग को	1
32.	(ग) उलटा पिरामिड शैली के	1
33.	(ख) किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण	1
34.	(क) इंटरनेट पर अखबारों का प्रकाशन या खबरों का आदान-प्रदान	1
35.	(ख) 1780 ई. में जेम्स ऑगस्ट हिकी का 'बंगाल गजट' कोलकातासे प्रकाशित हुआ	1
36.	(घ) उक्त तीनों	1

खंड- 'स' - पाठ्य पुस्तक (काव्यांश)

37.	(घ) अपाहिज व्यक्ति की फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर और उसके होंठों की कसमसाहट	1
38.	(ख) संवाददाता अपने उद्देश्य में सफल होकर अपने चैनल की लोकप्रियता बढ़ाना चाहता है	1
39.	(ख) संवाददाता अपने कारोबारी उद्देश्य युक्त कार्यक्रम में सफल हुआ	1
40.	(ग) रघुवीर सहाय	1
41.	(घ) अनुप्रास	1

पाठ्य पुस्तक (गद्यांश)

42.	(ग) जो जानता है कि वह बाजार से क्या खरीदना चाहता है	1
43.	(ख) एक विनाशक शक्ति-शैतानी शक्ति और व्यंग्य की शक्ति	1
44.	(क) बाजार में कपट का बढ़ना और आपसी सद्भाव में कमी होना	1
45.	(घ) वे आपस में कोरे गाहक और बेचक की तरह व्यवहार करने लगते हैं	1
46.	(ख) इतिहास का	1

पाठ्य पुस्तक के पठित पाठों पर आधारित प्रश्न

47.	(ख) किसी के अक्षरों की बनावट एवं हाथों की मंथरता पर टीका-टिप्पणी का अधिकार पाकर	1
48.	(घ) क और ख दोनों	1
49.	(ग) समय निरंतर गतिशील है और किसी की प्रतीक्षा नहीं करता है	1
50.	(ख) कविता में निहित भावनाएँ लोगों के दिलों में एकता स्थापित कराती हैं	1
51.	(क) क्रूरता से भरा हुआ और कार्यक्रम को रोचक बनाने वाला	1
52.	(क) कवि अपने प्रिय (संबोध्य) को बड़ी गहराई तक भूल जाए	1

अनुपूरक पुस्तक के पाठों पर आधारित प्रश्न

53.	(घ) बिड़ला मंदिर	1
54.	(ग) बहुत पहले से ही गृहस्थी की देखभाल की जिम्मेदारी उन पर आ गई थी	1
55.	(घ) यशोधर बाबू की पत्नी मातृसुलभ कमजोरी के कारण बच्चों का पक्ष लेती है	1
56.	(ग) वे लेखक के प्रति बहुत संवेदनशील थे इसलिए पाठशाला भेजने के पक्ष में थे	1
57.	(क) अच्छा लगता था, वह मास्टर की चाल में कविता गा सकता था	1
58.	(ख) मराठी भाषा	1